



GOVERNMENT OF TAMIL NADU

Hindi Reader हिन्दी रीडर

STANDARD - VII

सातवीं कक्षा

Department Of School Education

Untouchability is Inhuman and a Crime

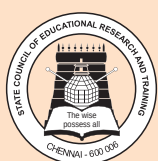
Government of Tamil Nadu

First Edition - 2019

Reprint - 2020, 2021, 2022,
2023, 2024

(Published under New Syllabus)

Content Creation



State Council of Educational Research
and Training

© SCERT 2019

Printing & Publishing



Tamil Nadu Textbook and Educational
Services Corporation

www.textbooksonline.tn.nic.in





प्रस्तावना

नई सोच, नई आशाओं के साथ पुस्तक वर्ग २, वर्ग ७, वर्ग १० और वर्ग १२ का सृजन किया गया है।

आगे के प्रतिस्पर्धा एवं संघर्ष के वातावरण में बच्चों का सम्यक शारीरिक एवं मानसिक विकास बहुत आवश्यक है ताकि वे भविष्य में आनेवाली चुनौतियों का मुकाबला आसानी से कर सकें। उनके लिए ज्ञान विज्ञान की बातें उतनी ही आवश्यक हैं जितनी साहित्य और कला संबंधी जानकारी देश विदेश में हो रही घटनाओं से परिचित होना अगर आवश्यक है तो जीवन जीने की व्यावहारिक कला में निपुण होना भी उतना ही आवश्यक है। इन बातों को ध्यान में रखकर ही इस श्रृंखला का सृजन किया गया है। छात्र छात्राओं का सर्वांगीण करना है।

श्रृंखला तैयार करते समय निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखा गया है।

- पाठों की प्रस्तुति के लिए विधा, कौतूहल और भाषा की सरलता आवश्यक है, यही समझते हुए ऐसे पाठों का चयन किया गया है जो बच्चे की जिज्ञासाओं एवं रुचियों को बढ़ावा दे सके। साहित्य की विभिन्न विधाओं से अवगत कराने हेतु कविताएँ, कहानियाँ, लेख, यात्रा वृत्तांत, हास्य कथा, एकांकी, साक्षात्कार, आत्मकथा, डायरी आदि को सम्मिलित किया गया है।
- पर्यावरण संरक्षण आज के युग की सबसे बड़ी माँग है। बच्चों को प्राथमिक कक्षाओं से ही पर्यावरण की समस्याओं एवं उसके संरक्षण के प्रति जागरूकता लाने के लिए पर्यावरण संबंधी कहानियों एवं कविताओं के साथ साथ समाचार पत्रों में छपे लेख, पोस्टर आदि को भी सम्मिलित किया गया है।
- बच्चों को पुस्तक के केंद्र में रखने के कारण ऐसे पाठों को ही चुना गया ताकि खेल खेल में, मनोरंजन करते हुए अपनी बात बच्चों तक पहुँचा सकें। कक्षा का वातावरण बोझिल न हो, इसलिए रुचिकर पाठों के साथ साथ चुटकुले, शब्द पहेली, चित्रकथाएँ आदि भी दिए गए हैं।
- समालोचनात्मक सोच, समस्या समाधान, प्रभावशाली संप्रेषण तथा रचनात्मक प्रवृत्ति जैसे कौशलों का विकास करने वाले कार्यकलापों को विशेष रूप से सम्मिलित किया गया है।
- भाषा ज्ञान के अंतर्गत व्याकरण को सम्मिलित कर लिया गया है ताकि वह अलग अलग न होकर उसके साथ जुड़ा रहे।
- मौखिक वार्तालाप, लिखित कार्य, समूह कार्य, संवाद प्रदर्शन आदि को ध्यान में रखते हुए अभ्यासों का निर्माण किया गया है। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन करते समय इस विविधता को ध्यान में रखा जाए। मूल्यांकन करते समय प्रश्न कल्पनाशीलता को उभारें, विषयवस्तु को विस्तार प्रदान करने वाले हों, पाठ्यपुस्तक की परिधि से बाहर बृहतर परिधि को समेटने वाले हों, इन सभी बिंदुओं को ध्यान में रखकर ही अभ्यास में सभी प्रकार के प्रश्नों का समावेश किया गया है।

सीखने के वातावरण को आनंदमयी बनाए रखना अध्यापकों की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। कक्षा में विद्यार्थियों के संप्रेषण को महत्व दें। बच्चे अपनी बात बोलते समय न हिचकें। उन्हें बोलते अथवा लिखते समय जो भी सहायता चाहिए, प्रदान करें।

बच्चों के मनोविज्ञान, उनके मानसिक क्षितिज को समझते हुए, उनके जगत से तारतम्य बनाते हुए हमारी ओर से प्रयास है।





देशीयगीतम्

जन गण मन अधिनायक जय हे
भारत भाग्य विधाता
पंजाब सिन्धु गुजरात मराठा
द्राविड उत्कल बङ्गा
विन्ध्य हिमाचल यमुना गङ्गा
उच्छल जलधि तरङ्गा
तव शुभ नामे जागे
तव शुभ आशिष मागे
गाहे तव जय गाथा
जन गण मङ्गल दायक जय हे
भारत भाग्य विधाता
जय हे जय हे जय हे
जय जय जय जय हे !

महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुरः

अस्पृश्यत्वम् अपचारः
अस्पृश्यत्वम् अपराधः
अस्पृश्यत्वम् अमानवधर्मः





तमिल माता की वंदना (तमिलताय वाळ्तु)

नीरारूम कडलुडुत्त निलमडन्दै केळिलोळुगुम
सीरारूम वदनमेन तिगळ भारत खंडमिदिल,
तेक्कणामुम अदिर्चिरन्द द्वाविडनल् तिरूनाडुम
तक्कचिरू पिरैनुदलुम तरित्तनरून्तिलकमुमे
अत्तिलक वासनैपोल अनैत्तुलगुम इन्बमुर
ऐत्तिशैयुम पुगळ मणाक्क इरून्द पेरुंद् तमिलअणंगे!
तमिलअणंगे!
उन सीर इलमै तिरम वियन्दु सेयलमरन्दु वाळ्तुदुमे!
वाळ्तुदुमे!
वाळ्तुदुमे!

‘मनोनमणियम’ पे. सुन्दरम पिल्लै





राष्ट्रिय प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है।

सब भारतवासी मेरे भाई-बहन हैं।

मैं अपने देश से प्रेम करता/करती हूँ।

इसकी समृद्ध एवं विविध संस्कृति पर मुझे गर्व है।

मैं सदा इसका सुयोग्य अधिकारी बनने का प्रयत्न करता/करती रहूँगा/रहूँगी।

मैं अपने माता-पिता, शिक्षको एवं गुरुजनो का सम्मान करूँगा/करूँगी और प्रत्येक के साथ विनीत रहूँगा/रहूँगी।

मैं अपने देश और देशवासियों के प्रति सत्यनिष्ठा की प्रतिज्ञा करता/करती हूँ।

इनके कल्याण एवं समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।





विषय – सूची

क्रम संख्या	पाठ का नाम	पृष्ठ संख्या
1	कबीर के दोहे	01
2	युगावतार बापू	02
3	मेरा जीवन	05
4	मेरी वसीयत	09
5	चिड़िया की बच्ची – कहानी	12
6	तुलसी के दोहे	17
7	कायर मत बन	18
8	सुख–दुख	20
9	गौरा	22
10	अपूर्व त्याग	30
11	सेवा का हर काम पवित्र है – कहानी	43
12	शरणागत के लिए – कहानी	46
13	राजा रानी	52
14	राम कहाँ मिलेंगे?	54
15	जो देखकर भी नहीं देखते	56
16	रक्त और हमारा शरीर	59
17	श्रीनिवास रामानुजन	64
18	बेला का ब्याह – कहानी	70
19	काकी – कहानी	73
20	व्याकरण	76
21	गद्यांश अभ्यास	86
22	पत्र लेखन	92
23	निबंध भाग	96





Hindi Reader

STANDARD - **VII**





कबीर का जन्म काशी में हुआ था। नीरू और नीमा नामक दंपति ने कबीर का पालन पोषण किया था। बचपन से ही कबीर धर्म परायण थे। उन्होंने रामानन्द को अपना गुरु मान लिया था। सत्संग के द्वारा उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया था। कबीर निर्गुणोपासक थे। वे ईश्वर को निराकार, निरंजन तथा सर्वव्यापी मानते थे। वे मूर्ति पूजा के कट्टर विरोधी थे। आप बड़े समाज सुधारक, क्रान्तिकारी कवि थे।

माला तो कर में फिरै, जीभ फिरै मुख माहिं।
मनुवाँ तो चहुँ दिशि फिरै, ये तो सुमिरन नाहिं॥

दुख में सुमिरन सब करै, सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करै, तो दुख काहे को होय॥

साई इतना दीजिये, जामें कुटुंब समाय।
मैं भी भूखा ना रहूँ साधु न भूखा जाय॥

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब्ब।
पल में परलै होयगा, बहुरि करैगो कब्ब॥

उत्तर लिखिए:

1. कबीर ने सुमिरन के बारे में क्या कहा है?
2. कबीर कब और कैसे सुमिरन करने को कहते हैं?
3. कबीर ईश्वर से क्या प्रार्थना करते हैं?
4. कबीर ने समय की महिमा पर क्या कहा है?
5. कबीरदास के बारे में पांच वाक्य लिखिए।



श्री सोहनलाल द्विवेदी विद्यार्थी जीवन में बच्चों के लायक कविताएँ लिखते थे। बाद वे राष्ट्रीय कवि बने। उनकी कविताओं में विशुद्ध राष्ट्रीयता तथा भाषा में सरलता है। वे युगपुरुष गाँधी से बहुत प्रभावित हुए। उनकी भावनाओं को लेकर 'युगाधार' की रचना की। वह हिन्दी काव्य साहित्य को उनकी श्रेष्ठ देन है।

'युगावतार बापू' नामक इस कविता में कवि महात्मा गांधी का यशोगान करते हैं। वे यह साबित करते हैं कि बापू युगाधार हैं; जनता के रक्षक हैं; मार्गदर्शक हैं; युग प्रवर्तक हैं। वे ही भारत के करोड़ों लोगों के जनप्रिय नेता हैं।

चल पड़ें जिधर को डग, मग में,
 बढ़ चले कोटि पग उसी ओर।
 पड गयी जिधर भी एक दृष्टि,
 गड गये कोटि दृग उसी ओर।
 जिसके सिर पर निज धरा हाथ,
 उसके सिर रक्षक कोटि हाथ;
 जिस पर निज मस्तक झुका दिया,
 झुक गये उसी पर कोटि माथ।
 हे कोटि चरण, हे कोटि बाहु,
 हे कोटि रूप हे कोटि नाम।
 तुम एक मूर्ति, प्रति – मूर्ति कोटि,



हे कोटि मूर्ति, तुम को प्रणाम ।।
युग बढा तुम्हारी हुँसी देख,
युग हटा तुम्हारी भृकुटि देख,
तुम अचल मेखला बन भू की,
खींचते काल पद अमिट रे।
तुम मौन रहे, युग मौन रहा,
तुम बोल उठे युग बोल उठा।
कुछ कर्म तुम्हारे संचित कर,
युग-कर्म जगा युग धर्म लगा
युग परिवर्तक – युग संस्थापक,
युग – संचालक हे युगाधार।
युग – निर्माता, युग – मूर्ति तुम्हें,
युग – युग तक का युग नमस्कार ।।

कठिन शब्दार्थ

डग	– पैर	मग	– मार्ग, रास्ता	पग	– पैर
कोटि	– करोड़	दुग	– आँख	निज	– अपना
सिर पर हाथ धरना – अभय दान करना, रक्षा करना					
मस्तक	– सिर	माथ	– माथा	चरण	– पैर
बाहु	– भुजा, हाथ	प्रणाम	– नमस्कार	भृकुटि	– भौंह
अचल	– स्थिर, दृढ़	मेखला	– कमरबंद,		
रेख	– रेखा, लकीर				
संचित कर	– इकट्ठा कर	तना	– उठ खड़ा हुआ		
युग धर्म – काल के अनुकूल सिद्धांत या व्यवहार					
परिवर्तक	– बदलनेवाला	संस्थापक	– स्थापना करनेवाला		
संचालक	– चलानेवाला	निर्माता	– बनानेवाला, निर्माण करनेवाला		



कठिन भावार्थ

1. युगावतार बापू के लक्षणों के बारे में लिखिए।
2. युगावतार बापू की महिमा पर पाँच वाक्य लिखिए।
3. कवि महात्मा को युगावतार बापू नाम से क्यों संबंधित करते हैं?
4. कवि बापू को किन-किन रूपों में देखते हैं?
5. कवि बापू से क्या अपेक्षा करते हैं?

‘युगावतार बापू’ के बारे में दस वाक्य लिखिए।



मेरा जन्म सन् 1880 में हुआ। पिता डाक खाने में क्लर्क थे। माता गरीब। एक बड़ी बहन भी थी। उस समय पिताजी शायद रु20 पाते थे। रु 40 तक पहुँचते पहुँचते उनकी मृत्यु हो गयी। यों वे बड़े विचारशील, जीवनपथ पर आँखें खोलकर चलनेवाले आदमी थे। लेकिन आखिरी दिनों में एक ठोकर खा ही गये और खुद तो गिरे ही थे, उसी धक्के में मुझे भी गिरा दिया।

पन्द्रह साल की अवस्था में मेरा विवाह कर दिया और विवाह करने के साल-भर बाद ही परलोक सिधारे। उस समय मैं नवे दर्जे में पढता था। घर में मेरी स्त्री थी, विमाता थी, उनके दो बालक थे और आमदनी एक पैसे की नहीं। घर में जो कुछ लेई-पूँजी थी, वह पिताजी की छः महीने की बीमारी और क्रिया कर्म में खर्च हो चुकी थी, और मुझे अरमान था वकील बनने का और एम.ए पास करने का। नौकरी उस जमाने में भी इतनी ही दुष्प्राप्त थी जितनी अब है। दौड-धूप करके शायद दस-बारह की कोई जगह पा जाता, पर यहाँ तो आगे पढने की धुन थी।

पॉव में जूते न थे, देह पर कपड़े न थे, महँगी अलग 10 सेर के जौ थे। स्कूल से साढ़े तीन बजे छुट्टी मिलती थी। काशी के किंग्स कालेज में पढता था। हेडमास्टर ने फीस माफ कर दी थी। इम्तिहान सिर पर था, और मैं बॉस के फाटक पर एक लडके को पढाने जाता था। जाडे के दिन थे, चार बजे पहुँचता था। पढाकर छः बजे छुट्टी पाता। वहाँ से मेरा घर देहात में पाँच मील पर था। आठ बजे से पहले घर से चलना पडता था। तेज चलने पर भी कभी वक्त पर स्कूल न पहुँचता। रात को भोजन करके कुप्पी के सामने पढने बैठता और न जाने कब सो जाता। फिर भी हिम्मत बाँधे हुआ था।

मैट्रिक्युलेशन तो किसी तरह पास हो गया। पर आया सैकंड डिविशन में। किंग्स कालेज में भरती होने की आशा न रही। फीस केवल अव्वल दर्जेवालों की ही मुआफा हो सकती थी। संयोग से उसी साल हिन्दु कालेज खुल गया था। मैंने इस नये कालेज



में पढ़ने का निश्चय किया। प्रिंसिपल थे मि.रिचर्डसन। उनके मकान पर गया। वे पूरे हिन्दुस्तानी वेश में थे। कुरता और धोती पहने हुए फर्श पर बैठे कुछ लिख रहे थे।

मगर मिजाज को तबदील करना इतना आसान न था, मेरी प्रार्थना सुनकर — आधी ही कहने पाया था — बोले कि घर पर मैं कालेज की बातचीत नहीं करता, कालेज में आओ। खैर मैं कालेज में गया। मुलाकात तो हुई। पर निराशाजनक फीस मुआफ न हो सकती थी। अब क्या करूँ? अगर प्रतिष्ठित व्यक्ति की सिफारिश ला सकता तो मेरी प्रार्थना पर कुछ विचार होता। लेकिन देहाती युवक को शहर में जानता ही कौन था? रोज घर से चलता कि कहीं से सिफारिश लाऊंगा, पर बारह मील की मंजिल पार कर शाम को घर लौट जाता। किससे कहूँ? कोई अपना पुछत्तर न था।

कुछ दिनों बाद सिफारिश मिली। एक ठाकुर इन्द्रनारायण सिंह हिन्दु कालेज की प्रबंधकारिणी सभा में थे। उनसे जाकर रोया। उन्हें मुझपर दया आ गयी। सिफारिश चिट्ठी दे दी। उस समय मेरे आनंद की सीमा न थी। खुश होता हुआ घर आया। दूसरे दिन प्रिंसिपल से मिलने का इरादा था। लेकिन घर पहुँचते ही मुझे ज्वर आ गया और दो सप्ताह से पहले न हिला। नीम का काढ़ा पीते-पीते नाक में दम आ गया। एक दिन मैं द्वार पर बैठा था कि मेरे पुरोहितजी आ गये। मेरी दशा देखकर समाचार पूछा और तुरन्त खेती में जाकर एक जड़ खोद लाये और उसे धोकर सात दाने काली मिर्च के साथ मिलाकर मुझे खिला दिया। उसने जादु का असर किया। ज्वर चढ़ने में घंटे ही भर की देरी थी। इस औषध ने मानो जाकर उसका गला ही दबा दिया। मैंने बार-बार पंडितजी से उस जड़ी का नाम पूछा, पर उन्होंने न बताया। कहा, नाम बता देने से उसका असर जाता रहेगा।

एक महीने बाद मैं मि.रिचर्डसन से मिला और सिफारिशी चिट्ठी दिखायी। प्रिंसिपल ने मेरी ओर तीव्र नेत्रों से देखकर पूछा “इतने दिन कहाँ थे?”

“बीमार हो गया था।”
“क्या बीमारी थी?”

मैं इस प्रश्न के लिए तैयार न था। अगर ज्वर बता दूँ तो शायद साहब मुझे झूठा समझें। ज्वर मेरी समझ में हलकी चीज थी, जिस के लिए इतनी लंबी गैरहाजिरी अनावश्यक थी। कोई ऐसी बीमारी बतानी चाहिए, जो अपनी कष्टसाध्यता के कारण दया भी उतारे।

उस वक्त मुझे और किसी बीमारी का नाम याद न आया। ठाकुर इन्द्रनारायण सिंह



से जब मैं सिफारिश के लिए मिला था, तब उन्होंने अपने दिल की धड़कन की बीमारी की चर्चा की थी। वह शब्द याद आ गया। मैंने कहा, “पेलपिटेशन आफ हार्ट दिल की धड़कन सर”

“अब तुम बिलकुल अच्छे हो?”
“जी हाँ”
“अच्छा, प्रवेश-पत्र भर कर लाओ”

मैंने समझा बेडा पार हुआ। फार्म लिया, खाना पूरी की और पेश कर दिया। साहब उस समय कोई क्लास ले रहे थे। तीन बजे फार्म वापस मिला। उसपर लिखा था – इसकी योग्यता की जाँच की जाए।

यह नयी समस्या उपस्थित हुई। मेरा दिल बैठ गया। अंग्रेजी के सिवा और किसी विषय में मुझे पास होने की आशा न थी। और बीज गणित से मेरी रूह कॉपती थी। जो कुछ याद था, वह भी भूल गया था। परन्तु दूसरा उपाय ही क्या था? भाग्य का भरोसा करके क्लास में गया और अपना फार्म दिखाया।

प्रोफेसर साहब बंगाली थे। अंग्रेजी पढा रहे थे। वाशिंगटन इरविंग का “रिप वान विंकल” था। मैं पीछे की कतार में जाकर बैठ गया। और दो ही चार मिनट में मुझे ज्ञात हो गया कि प्रोफेसर साहब अपने विषय के ज्ञाता हैं। घंटा समाप्त होने पर उन्होंने आज के पाठ पर मुझसे कई प्रश्न किये और मेरे फार्म पर संतोषजनक लिख दिया।

दूसरा घंटा बीजगणित का था। यह प्रोफेसर भी बंगाली थे। मैंने अपना फार्म दिखाया। नयी संस्थाओं में प्रायः वही छात्र चाहते हैं, जिन्हें कहीं जगह नहीं मिलती। यहाँ भी वहीं हाल था। क्लास, अयोग्य छात्र से भरे हुए थे। पहले रेल में जो आया, वहीं भारती हो गया। अब पेट भर गया। छात्र चुन-चुनकर लिये जाते थे। इन प्रोफेसर साहब ने गणित में मेरी परीक्षा ली और मैं फेल हो गया। फार्म पर गणित के खाने में “असंतोषजनक” लिख दिया।

मैं इतना हताश हुआ कि फार्म लेकर फिर प्रिंसिपल के पास न गया। सीधा घर चला आया। गणित मेरे लिए गौरीशंकर की चोटी थी।

कभी उसपर चढ़ न सका।

उत्तर लिखिए:

- 1 प्रेमचन्द का जन्म कब हुआ?
- 2 प्रेमचन्द के पिता क्या करते थे? उनका स्वभाव कैसा था?
- 3 प्रेमचन्द किस कालेज में पढ़ते थे?
- 4 प्रेमचन्द के परिवार में कौन थे?
- 5 प्रेमचन्द का जीवन कैसा था?
- 6 प्रेमचन्द क्या बनना चाहते थे?
- 7 प्रेमचन्द ने कालेज की फीस माफ़ होने के लिये कौन सा प्रयास किया?
- 8 सिफ़ारिश की चिट्ठी किसने प्रेमचन्द को दी?
- 9 प्रेमचन्द की दशा देखकर पुरोहित ने क्या किया?
- 10 प्रेमचन्द की बीमारी कैसे दूर हुई?
- 11 प्रेमचन्द ने रिचर्डसन से मिलकर क्या कहा और क्यों?
- 12 प्रेमचन्द को बीजगणित क्यों पसंद नहीं था?
- 13 प्रेमचन्द की प्रारंभिक शिक्षा के बारे में लिखिए।
- 14 प्रेमचन्द के जीवन के बारे में लिखिए।
- 15 प्रेमचन्द की बीमारी क्या थी? उनकी बीमारी कैसी दूर हुई?
- 16 प्रेमचन्द पुनः प्रिंसपाल से क्यों नहीं मिले और क्या किए?



लेखक परिचय:

जवाहरलाल नेहरू जन्म तारीख 14 नवम्बर 1889 इला. हाबाद में हुआ तारीख 27 मई, 1964 को पंडित जवाहर लालजी का अचानक निधन हो गया था। अपने मरने से कई सालों पहले, सन् 1954 में ही अपनी मृत्यु संबंधी एक वसीयत उन्होंने लिख रखी थी। मृत्यु के दस वर्ष पूर्व लिखी उनकी वसीयत से इस बात का पता चलता है कि अपनी जन्मभूमि के प्रति उनको कितना लगाव था। तथा मृत्यु के बाद भी वे किस तरह देश से पृथक नहीं होना चाहते थे। उसी वसीयत का कुछ अंश यहाँ दिया जाता है।

मुझे मेरे देश की जनता ने मेरी हिन्दुस्तानी भाइयों ने इतना प्रेम और इतनी मुहब्बत दी है कि चाहे मैं जितना कुछ करूँ जो उसके एक छोटे से छोटे हिस्से का बदला नहीं हो सकता। सच तो यह है कि प्रेम ऐसी कीमती चीज है कि इसके बदले कुछ दवा मुमकिन नहीं है। इस दुनिया में बहुत से लोग हुए जिनको अच्छा समझकर बड़ा मानकर उनका आदर किया गया, पूरा गया लेकिन भारत के लोगों ने छोटे और बड़े अमीर और गरीब, सब की बहनों और भाइयों ने मुझे इतना ज्यादा प्यार किया कि जिसका बयान करना मेरे लिए मुश्किल है और जिससे मैं दब गया। मैं आशा करता हूँ कि मैं अपने जीवन के बाकी वर्षों में अपने देशवासियों की सेवा करता रहूँ और इनके प्रेम के योग्य बना रहूँ।

बेंशुमार दोस्तों और अतिथियों के मेरे झ पर और भी ज्यादा एहसानात है। इन बड़े-बड़े कामों में एक दूसरे के साथ रहे, शरीक रहे मिल-जुलकर किये। यह तो होता ही है कि जब बड़े काम किये जाते हैं। उनमें सफलता भी होती है, नाकामयाबी भी होती है। मगर हम सब शरीक रहे सफलता की खुशी में और नाकामयाबी के दुख में थी।

मैं चाहता हूँ और मन से चाहता हूँ कि मेरे मरने के बाद कोई धार्मिक रस्में न अदा की जाएँ। मैं ऐसी बातों को मानता नहीं हूँ और सिर्फ भस्म समझकर इनमें बँध जाना धोखे में पड़ना मानता हूँ।



जब मैं मर जाऊं तो मेरी इच्छा है कि मेरा दाह-संस्कार दिया जाए। अगर विदेशों में मैं मरूँ तो मेरे शरीर को वहीं जला दिया जाए। और मेरी अस्थियों इलाहाबाद भेज दी जाएँ और इनके बड़े हिस्से के साथ क्या किया जाए – मैं आगे बता रहा हूँ। इनका कुछ हिस्सा किसी हालत में बचाकर न रखा जाए।

गंगा में अस्थियों का कुछ हिस्सा डलवाने की इच्छा के पीछे जहाँ तक मेरा ताल्लुक है, कोई धार्मिक ख्याल नहीं है। मुझे बचपन से गंगा और यमुना के प्रति लगाव रहा है और जैसे-जैसे मैं बड़ा हुआ, यह लगाव बढ़ता रहा।

मैं मौसमों से बदलने के साथ उनके बदले हुए रंग और रूप को देखा है और कई बार मुझे याद आयी, उस इतिहास की, उन परंपराओं की, पौराणिक गाथाओं की, उन गीतों और कहानियों की जो कि कई युगों से उनके साथ जुड़ गया है और उनके बहते हुए पानी में धुल-मिल गयी है।

गंगा तो विशेषकर भारत की नदी है। जनता की प्रिय है, जिससे लिपटी हुई है भारत की जातीय स्मृतियाँ, उसकी आशाएँ और उसके भय, उसके विजयगान, उसकी विजय और पराजय। गंगा तो भारत की प्राचीन सभ्यता का प्रतीक रही है, निशान रही है, सदा बदलती सदा बहती है। हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियों की और गहरी चोटियों की, जिनसे मुझे मुहब्बत रही है, और उनके नीचे के उपजाऊ और दूर-दूर तक फैले मैदान को जहाँ काम करते मेरी जिन्दगी गुजरी है।

मैंने सुबह की रोशनी में गंगा को मुस्कुराते उछलते कूदते देखा है, और देखा है – शाम के समय में उदास काली सी चादर ओढ़े हुए, भेद-भरी जाड़ों में सिमी सी आहिस्ते आहिस्ते बहती सुन्दर धारा, और बरसात में वह दहाडती, गरजती हुई, समुद्र की तरह चौड़ा सीना लिये और सागर को बरबाद करने की शक्ति लिये।

यही गंगा मेरे लिए निशानी है। भारत की प्राचीनता की यादगार की, जो बहती आयी है, वर्तमान तक और बहती चली जा रही है। भविष्य के महासागर की ओर। भले ही मैंने पुरानी परंपराओं, रीति और रस्मों को छोड़ दिया हो, और मैं चाहता भी हूँ कि हिन्दुस्तान उन सब जंजीरों को तोड़ दें, जिनमें वह जकड़ा है, और उसको आगे बढ़ने से रोकती है, और जो देश में रहनेवालों में फूट डालती है, जो बेशुमार लोगों को दबाये रखती हैं, और जो शरीर और आत्मा के विकास को रोकती है।

यह सब मैं चाहता हूँ फिर भी मैं यह नहीं चाहता कि मैं अपने को इन पुरानी बातों से



बिलकुल अलग कर लूँ। मुझे मुख्य है इस शानदार उत्तराधिकार का इस विरासत का जो हमारी रही है और हमारी है, और मुझे यह भी अच्छी तरह से मालूम है कि मैं भी हम सबों की तरह इस जंजीर की एक कड़ी हूँ जो कि कभी नहीं और कहीं नहीं दूरी है और जिसका सिलसिला हिन्दुस्तान के अतीत इतिहास के प्रारंभ से चला आता है।

यह सिलसिला मैं कभी नहीं तोड़ सकता, क्योंकि मैं उसकी बेहद कद्र करता हूँ। और इससे मुझे प्रेरणा, हिम्मत और हौसला मिलता है। मेरी इस आकांक्षा की पुष्टि के लिए और भारत की संस्कृति की श्रद्धांजलि भेंट करने के लिए मैं यह दरखास्त करता हूँ कि मेरे भस्म की एक मुट्ठी इलाहाबाद के पास गंगा में डाल दी जाए। जिससे कि वह उस महासागर में पहुँचे जो हिन्दुस्तान को घेरे हुए हैं।

मेरे भस्म के बाकी हिस्से का क्या किया जाए। मैं चाहता कि इसे हवाई जहाज में ऊँचाई पर ले जाकर बिखेर दिया जाए। उन खेतों पर, जहाँ भारत के किसान मेहनत करते हैं, ताकि वह भारत की मिट्टी में मिल जाए और उसी का अंग बन जाए।

उत्तर लिखिए:

- 1 मेरी वसीयत के लेखक का नाम क्या है?
- 2 पं जवाहरलाल नेहरू का जन्म कब और कहाँ हुआ?
- 3 जवाहरलाल नेहरू ने अपनी वसीयत कब लिखी?
- 4 जवाहरलाल नेहरू ने अपनी वसीयत में क्या लिखी?
- 5 जवाहरलाल नेहरू ने अपने देश के बारे में क्या कहा?
- 6 जवाहरलाल नेहरू के देशवासियों के प्रति क्या विचार था?
- 7 जवाहरलाल नेहरू दोस्तों के साथ मिल जुलकर क्यों रहना चाहते थे?
- 8 मरने के बाद नेहरू क्या चाहते थे?
- 9 नेहरू अपनी अस्तियों को गंगा-जमुना में क्यों मिलाने के लिए कहा?
- 10 नेहरूजी ने अपनी अस्तियों के शेष भाग को क्या करने को कहा?
- 11 नेहरूजी ने अपनी वसीयत में क्या लिखा था?
- 12 नेहरूजी ने अपनी आकांक्षाओं का वर्णन किस प्रकार की?
- 13 नेहरूजी ने गंगा नदी का वर्णन कैसे किया?



माधवदास ने अपनी संगमरमर की नयी कोठी बनवाई है। उसके सामने बहुत सुहावना बगीचा भी लगवाया है। उनको कला से बहुत प्रेम है। धन की कमी नहीं है और कोई व्यसन छू नहीं गया है। सुंदर अभिरुचि के आदमी हैं। फूल-पौधे, रकाबियों से हौजों में लगे फव्वारों में उछलता हुआ पानी उन्हें बहुत लगता है। समय भी उनके पास काफी है। शाम को जब दिन की गरमी ढल जाती है और आसमान कई रंग का हो जाता है, तब कोठी के बाहर चबूतरे पर तख्त डलवाकर मसनद के सहारे वह गलीचे पर बैठते हैं और प्रकृति की छटा निहारते हैं। इनमें मानो उनके मन को तृप्ति मिलती है। मित्र हुए तो उनसे विनोद-चर्चा करते हैं, नहीं तो पास रखे हुए फर्शी हुक्के की सटक को मुँह में दिए खयाल ही खयाल में संध्या को स्वप्न की भौंति गुजार देते हैं।

आज कुछ-कुछ बादल थे। घटा गहरी नहीं थी। धूप का प्रकाश उनमें से छन-छनकर आ रहा था। माधवदास मसनद के सहारे बैठे थे। उन्हें जिंदगी में क्या स्वाद नहीं मिला है? पर जी भरकर भी कुछ खाली सा रहता है।

उस दिन संध्या समय उनके देखते-देखते सामने की गुलाब की डाली पर एक चिडिया आ बैठी। चिडिया बहुत सुंदर थी। उसकी गरदन लाल थी और गुलाबी होते-होते किनारों पर जरा-जरा नीली पड़ गई थी। पंख ऊपर से चमकदार स्याह थे। उसका नन्हा सा सिर तो बहुत प्यारा लगता था और शरीर पर चित्र-विचित्र चित्रकारी थी। चिडिया को मानो तनिक देर का आराम भी उसे नहीं चाहिए था। कभी पर हिलाती थी, कभी फुदकती थी। वह खूब मासूम होती थी। अपनी नन्हीं सी चोंच से प्यारी-प्यारी आवाज निकाल रही थी। माधवदास को वह चिडिया बड़ी मनमानी लगी। उसकी स्वच्छंदता बड़ी प्यारी जान पड़ती थी। कुछ देर तक वह उस चिडिया का इस डाल से उस डाल थिरकना देखते रहे। इस समय वह अपना बहुत-कुछ भूल गए। उन्होंने उस चिडिया से





कहा, “आओ, तुम बड़ी अच्छी आई। यह बगीचा तुम लोगों की बगीचा मैंने तुम्हारे लिए ही बनवाया है। तुम बेखटके यहाँ आया करो।”

चिड़िया पहले तो असावधान रही। फिर जानकर कि बात उससे की जा रही है, वह एकाएक तो घबराई। फिर संकोच को जीतकर बोली, “मुझे मालूम नहीं था कि यह बगीचा आपका है। मैं अभी चली जाती हूँ। पलभर साँस लेने मैं यहाँ टिक गई थी।”



माधवदास ने कहा, “हाँ, बगीचा तो मेरे है। यह संगमरमर की कोठी भी मेरी है। लेकिन, इन सबको तुम अपना भी समझ सकती हो। सब कुछ तुम्हारा है। तुम कैसी भोली हो, कैसी प्यारी हो। जाओ नहीं, बैठो। मेरा मन तुमसे बहुत खुश होता है।”

चिड़िया बहुत-कुछ संकुचा गई। उसे बोध हुआ कि यह उससे गलती तो नहीं हुई कि वह यहाँ बैठ गई है। उसका थिरकना रुक गया। भयभीत सी वह बोली, “मैं थककर यहाँ बैठ गई थी। मैं अभी चली जाऊँगी। बगीचा आपका है। मुझे माधवदास ने कहा, “मेरी भोली चिड़िया, तुम्हें देखकर मेरा चित्त प्रफुल्लित हुआ है। मेरा महल भी सूना है। वहाँ कोई भी चहचहाता नहीं है। तुम्हें देखकर मेरी रागनियों का जी बहलेगा। तुम कैसी प्यारी हो, यहाँ ही तुम क्यों न रहों?” चिड़िया बोली, “मैं माँ के पास जा रही हूँ। सूरज की धूपखाने और हवा से खले ने और फूलों से बात करने मैं जरा घर से उड आई थी, अब साँझ हो गई है और माँ के पास जा रही हूँ। अभी-अभी मैं चली जा रही हूँ। आप सोच न करें।”

माधवदास ने कहा, “प्यारी चिड़िया, पगली मत बनो। देखो तुम्हारे चारों तरफ कैसी बहार है। देखो वह पानी खेल रहा है, उधर गुलाब हंस रहा है। भीतर महल में चलो, जाने क्या-क्या न पाओगी। मेरा दिल वीरान है। वहाँ कब हंसी सुनने को मिलती है? मेरे पास बहुत सा सोना-मोती है। सोने का एक बहुत सुंदर घर मैं तुम्हें बना दूँगा, मोतियों की झाल उसमें लटकेगी। तुम मुझे खुश रखना। और तुम्हें क्या चाहिए। माँ के पास बताओ क्या है? तुम यहाँ ही सुख से रहो, मेरी भोली गुड़िया।”



चिडिया इन बातों से बहुत डर गई। वह बोली, “मैं भटककर तनिक आराम के लिए इस डाली पर रुक गई थी। अब भूलकर भी ऐसी गलत नहीं होगी। मैं अभी यहाँ से उडी जा रही हूँ। तुम्हारी बातें मेरी समझ में नहीं आती हैं। मेरी माँ के घोंसले के बाहर बहुतेरी सुनहरी धूप निखरी रहती है। मुझे और क्या करना है? दो दाने माँ ला देती है और जब मैं पर खाले ने बाहर जाती हूँ तो माँ मेरी बाट देखती रहती है। मुझे तुम और कुछ मत समझो, मैं अपनी माँ की हूँ।”

माधवदास ने कहा, “भोली चिडिया, तुम कहाँ रहती हो? तुम मुझे नहीं जानती हो।” चिडिया, “मैं माँ को जानती हूँ। भाई को जानती हूँ। सूरज को और उसकी धूप को जानती हूँ। घास, पानी और फूलों को जानती हूँ। महामान्य तुम कौन हो? मैं तुम्हें नहीं जानती।” माधवदास, “तुम भोली हो चिडिया। तुमने मुझे नहीं जाना, तब तुमने कुछ नहीं जाना। मैं ही तो हूँ सेठ माधवदास। मेरे पास क्या नहीं है। जो मांगो, मैं वही दे सकता हूँ।” चिडिया पर मेरी तो छोटी सी जात हैं। आपके पास सब कुछ है। अब मुझे जाने दीजिए।” माधवदास, “चिडिया, तू निरी अनजान है। मुझे खुश करेगी तो तुझे मालामाल कर सकता हूँ।” चिडिया, “तुम सेठ हो। मैं नहीं जानती, सेठ क्या होता है। पर सेठ कोई बड़ी बात होती होगी। मैं अनसमझ ठहरी। माँ मुझे बहुत प्यार करती है। वह मेरी राह देखती होगी। मैं मालामाल होकर क्या होऊंगी, मैं नहीं जानती। मालामाल किसे कहते हैं? क्या मुझे वह तुम्हारा मालामाल होना चाहिए?” सेठ “अरी चिडिया, तुझे बुद्धि नहीं है। तू सोना नहीं जानती, सोना? उसी की जगत को तृष्णा है। वह सोना मेरे पास ढेर का ढेर है। तेरा घर समूचा सोने का होगा। ऐसा पिंजरा बनाऊंगा कि कहीं दुनिया में न होगा, ऐसा कि तू देखती रह जाए। तू उसके भीतर थिरक – फुदककर मुझे खुश करियो। तेरा भाग्य खुल जाएगा। तेरे पानी पीने की कटोरी भी सोने की होगी।”

चिडिया “वह सोना क्या चीज होती है?”

सेठ “तू क्या जानेगी, तू चिडिया जो है! सोने का मूल्य सीखने के लिए तुझे बहुत सीखना है। बस, यह जान ले कि सेठ माधवदास तुझसे बात कर रहा है। जिससे मैं बात तक कर लेता हूँ। उसकी किस्मत खुल जाती है। तू अभी जग का हाल नहीं जानती। मेरी कोठियों पर कोठियाँ हैं। बगीचों पर बगीचे हैं। दास-दासियों की संख्या नहीं है। पर तुझसे मेरा चित्त प्रसन्न हुआ है। ऐसा वरदान कब किसी को मिलता है? चिडिया तू इस बात को समझती क्यों नहीं?” चिडिया, “सेठ मैं नादान हूँ। मैं कुछ समझती नहीं।



पर मुझे देर हो रही है। माँ मेरी बाट देखती होगी।” सेठ, “ठहर—ठहर इस अपने पास के फूल को तूने देखा? यह एक है। ऐसे अनगिनती फूल हैं। ऐसे अनगिनती फूल मेरे बगीचों में है। वे भाँति — भाँति के रंग के हैं। तरह—तरह की उनकी खुशबू है। चिड़िया, मैं ने मेरा चित्त प्रसन्न किया है और वे सब फूल तेरे लिए खिला करेंगे। वहाँ घोंसले में तेरी माँ है, पर माँ क्या है? इस बहार के सामने तेरी माँ क्या है? वहाँ तेरे घोंसले में कुछ भी तो नहीं है। तू अपने को अपने को नहीं देखती? कैसी सुंदर तेरी गरदन! कैसी रंगीन देह! तू अपने मूल्य को क्यों नहीं देखती? मैं तुझे सोने से मढ़कर तेरे मूल्य को चमका दूँगा। मैंने मेरे चित्त को प्रसन्न किया है। तू मत जा, यहीं रह।”

चिड़िया, “सेठ, मैं अपने को नहीं जानती। इतना जानती हूँ कि माँ मेरी माँ है और मुझे यहाँ देर हो रही है। सेठ, मुझे रात मत करो, रात में अंधेरा बहुत हो जाता है और मैं राह भूल जाऊँगी।”

सेठ ने कहा, “अच्छा, चिड़िया जाती हो तो जाओ! पर इस बगीचे को अपना ही समझो। तुम बड़ी सुंदर हो।

“यह कहने के साथ ही सेठ ने एक बटन दबा दिया। उसके दबने से दूर कोठी के अंदर आवाज हुई जिसे सुनकर एक दास झटपट भागकर बाहर आया। यह सब क्षणभर में हो गया और चिड़िया कुछ भी नहीं समझी। सेठ कहते रहे, “तुम अभी माँ के पास जाओ। माँ बाट देखती होगी। पर, कल आओगी न? कल आना परसों आना, रोज आना।”

यह कहते कहते दास को सेठ ने इशारा कर दिया और वह चिड़िया को पकड़ने के जतन में चला। सेठ कहते रहे, “सच तुम बड़ी सुंदर लगती हो। तुम्हारे भाई बहिन है?

कितने भाई बहिन हैं?” चिड़िया, “दो बहिन, एक भाई। पर मुझे देर हो रही है।”

“हाँ हाँ जाना। अभी तो उजाला है। दो बहन, एक भाई है? बड़ी अच्छी बात है।” पर चिड़िया के मन के भीतर जाने क्यों चैन नहीं था। वह चौकन्नी हो चारों ओर देखती थी। उसने कहा, “सेठ मुझे देर हो रही है।” सेठ ने कहा, “देर अभी कहाँ? अभी उजाला है, मेरी प्यारी चिड़िया। तुम अपने घर का इतने और हाल सुनाओ। भय मत करो” चिड़िया ने कहा, “सेठ मुझे डर लगता है। माँ मेरी दूर है। रात हो जाएगी तो राह नहीं सूझेगी।”



इतने में चिड़िया को बोध हुआ कि जैसे एक कठोर स्पर्श उसके देह को छू गया। वह चीख देकर चिचियाई और एक दम उडी। नौकर के फैले हुए पंजे में वह आकर भी नहीं आ सकी। तब वह उडती हुई एक सांस में माँ के पास गई और माँ की गोद में गिरकर सुबकने लगी, “ओ माँ ओ माँ।” माँ ने बच्ची को छाती से चिपटाकर पूछा, “क्या है मेरी बच्ची, क्या है?” पर बच्ची काँप-काँपकर माँ की छाती से और चिपक गई। बोली कुछ नहीं बस सुबकती रही, “ओ माँ ओ माँ।” बड़ी देर में उसे ढाढस बँधा और तब वह पलक मींच उस छाती में ही चिपककर सोई। जैसे अब पलक न खोलेगी।

उत्तर लिखिए:

- 1 माधवदास कौन थे?
- 2 चिड़िया का वर्णन कीजिए ?
- 3 माधवदास को चिड़िया कैसे लगी?
- 4 चिड़िया माधवदास से क्या बोला?
- 5 माधवदास ने चिड़िया को क्या बनने के लिए कहा ?
- 6 चिड़िया की माँ ने चिड़िया को कैसे प्यार किया ?



गोस्वामी तुलसीदास का जन्म उत्तर प्रदेश के राजापुर नामक गाँव में हुआ था। वे अपने समय के प्रकाण्ड विद्वान तथा महान संत थे। वे श्रीराम के अनन्य भक्त थे। उसी भक्ति से प्रेरित होकर उन्होंने 'रामचरित मानस' की रचना की। इस ग्रंथ ने गोस्वामी जी को अमर बना दिया। 'राम चरित मानस' के अलावा उन्होंने और बारह ग्रंथों की रचना की।

गो—धन गज—धन बाजि—धन, और रतन—धन खान।
जब आवत संतोष—धन, सब धन धूरि समान॥

काम क्रोध मद लोभ की, जब लगि मन में खान।
तब लगि पंडित मूरखै, तुलसी एक समान॥

राम नाम मनिदीप धरु जीह देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहिरों जौं चाहसि उजिआर॥

जड. चेतन गुण दोषमय, विश्व कीन्ह करतार।
संत हंसगुन गहहिं पय, परिहरि वारि विकार॥

उत्तर लिखिए:

1. तुलसीदास के बारे में पाँच वाक्य लिखिए।
2. तुलसीदास ने किस धन को श्रेष्ठ माना है और क्यों?
3. तुलसीदास पंडितों से क्या अपेक्षा करते हैं?
4. तुलसीदास ने राम नाम की महिमा पर क्या कहा है?
5. तुलसीदास ने संत और हंस की तुलना किस प्रकार की?



कवि श्री नरेन्द्र शर्मा का जन्म उत्तर प्रदेश के जहाँगीरपुर नामक स्थान में हुआ। उन्होंने प्रयाग विश्व विद्यालय से एम.ए किया। कुछ समय तक बंबई में फिल्मी दुनियाँ से संबन्ध रहे। आकाशवाणी में विविध भारती कार्यक्रम के प्रधान भी रहे। श्री शर्मा का नाम प्रगतिवादी कवियों में लिया जाता है। सच्चाई, स्पष्टता तथा गीतात्मकता इनकी कविताओं की विशेषताएँ हैं।

‘कायर मत बन’ नामक इस कविता में कवि हमें यह उपदेश देते हैं कि हम जीवन मार्ग में आनेवाली विघ्न बाधाओं से न डरें, वीरता के साथ उन पर ठोकर मारते हुए आगे बढ़ें। जीवन में हम कुछ भी बनें, मगर कायर न बनें।

कुछ भी बन, बस कायर मत बन।
ठोकर मार! पटक मत माथा!
तेरी राह रोकते पाहन!
कुछ भी बन, बस कायर मत बन!

ले-देकर जीना, क्या जीना?
कब तक गम के आँसू पीना?
मानवता ने सींचा तुझको
बहा युगों तक खून पसीना!

कुछ न करेगा? क्या करेगा —
रे मनुष्य — बस कातर कन्दन
कुछ भी बन, बस कायर मत बन!



तेरी रक्षा का न मोल है,
पर तेरा मानव अमोल है!
यह मिटता है, वह बनता है;
यही सत्य की सही तोल है।

अर्पण कर सर्वस्व मनुज को,
कर न दुष्ट को आत्म – समर्पण!
कुछ भी बन, बस कायर मत बन!

कठिन भाब्दार्थ

कायर	—	डरपोक	माथा	—	ललाट, भाल
राह	—	रास्ता, मार्ग	पाहन	—	पत्थर
गम	—	दुख			

खून पसीना लहाना — कष्टों को झेलते हुए कठोर परिश्रम करना

कातर कन्दन — भयभीत होकर रोना अमोल — अनमोल, जिसका मूल्य न हो!

सर्वस्व — सब कुछ

मनुज — मनुष्य, मानव,

उत्तर लिखिए:

- 1 'कायर मत बन' किसकी कविता है?
- 2 कवि 'कायर मत बन' में क्या कहते हैं?
- 3 कवि 'कायर मत बन' कविता के द्वारा क्या संदेश देते हैं?
- 4 कवि मानव से क्या आशा रखते हैं?
- 5 'कायर मत बन' कविता का सार लिखिए।



पंतजी का जन्म हिमालय के पास अलमोडा जिले में हुआ। प्रकृति की सुन्दर गोद में पलने के कारण वे प्रकृति गायक बने। कवीन्द्र रवीन्द्र के साथ रहने से उनको नवीन प्रेरणा मिली। महात्मा गाँधी से प्रभावित होने के कारण नये समत्वपूर्ण समाज का निर्माण उनके साहित्य का लक्ष्य बना। जीवन के अंतिम समय में पांडिच्चेरी में महर्षि अरविन्द के दर्शन ने उनको खूब प्रभावित किया और वे विश्व को स्वर्ग के समान बनाने की कल्पना करने लगे।

‘सुख दुख’ नामक इस तात्विक कविता में कवि यह संदेश देता है कि जीवन में सुख ही सुख हो तो, वह भी दुखदायक ही होगा। कभी सुख और कभी दुख इन, दोनों का मिश्रण ही जीवन को रोचक और आनन्दमय बना सकता है।

मैं नहीं चाहता चिर-सुख,
मैं नहीं चाहता चिर-दुख,
सुख-दुख की खेल मिचौनी
खोले जीवन अपना मुख।

सुख दुख के मधुर मिलन से,
यह जीवन हो परिपूरण;
फिर घन में ओझल ही शशि,
फिर शशि से ओझल हो घन।

जग पीडित है अति दुख से
जग पीडित रे! अति सुख से
मानव जग में बट जावें,
दुख-सुख से औँ सुख-दुख से।



अविरत दुख है उत्पीडन,
अविरत सुख भी उत्पीडन,
दुख-सुख की निशा-दिवा में,
सोता-जगता जग-जीवन।

यह सौझ-उषा का आँगन,
आलिंगन विरह-मिलन का,
चिर हास – अश्रुमय आनन
रे इस मानव जीवन का।

उत्तर लिखिए:

1. कवि सुख-दुख के बारे में क्या कहते हैं?
2. कवि की चाह क्या है?
3. कवि मानव-जीवन को किस प्रकार बॉटना चाहते हैं?
4. कवि 'सुख-दुख' का आधार किसे मानते हैं?
5. पंत सुख-दुख के मधुर-मिलन को किस रूपों में देखना चाहते हैं?
6. सुख-दुख कविता का सार लिखिए।



गौरा मेरी बहन के घर पली हुई गाय की वय संधि तक पहुँची हुई बछिया थी। उसे इतने स्नेह और दुलार से पाला गया था कि वह अन्य गोवत्साओं से कुछ विशिष्ट हो गई थी।

बहन ने एक दिन कहा, तुम इतने पशु-पक्षी पाला करती हो – एक गाय क्यों नहीं पाल लेतीं, जिसका कुछ उपयोग हो। वास्तव में, मेरी छोटी बहन श्यामा अपनी लौकिक बुद्धि में मुझसे बहुत बड़ी हैं और बचपन से उसका कर्मनिष्ठा तथा व्यवहार – कुशलता की बहुत प्रशंसा होती रही है, विशेषतः मेरी तुलना में।

यदि वे आत्मविश्वास के साथ कुछ कहती है, तो उसका विचार संक्रामक रोग के समान सुनने वाले को तत्काल प्रभावित करता है। आश्चर्य नहीं, यदि उस दिन उसके उपयोगितावाद संबंधी भाषण ने मुझे इतना अधिक प्रभावित किया कि तत्काल उस सुझाव का कार्यान्वयन आवश्यक हो गया।

वैसे खाद्य की किसी भी समस्या के समाधान के लिए पशु-पक्षी पालन मुझे कभी नहीं रुचा। बकरी कुक्कुट, मछली आदि पालने के मूल उद्देश्य का ध्यान आते ही मेरा मन विद्रोह करने लगता है।

पर उस दिन मैंने ध्यानपूर्वक गौरा को देखा। पुष्ट लचीले पैर, भरे पुट्टे, चिकनी भरी हुई पीठ, लंबी सुडौल गर्दन, निकलते हुए छोटे-छोटे सींग, भीतर की लालिमा की झलक देते हुए कमल की दो अधखुली पंखुडियों जैसे कान, लंबी और अंतिम छोर पर काले सघन चामर का स्मरण दिलाने वाली पूँछ सबकुछ साँचे में ढला हुआ-सा था। गाय को मानो इटैलियन मार्बल में तराशकर उस पर ओप दी गई हो।

स्वस्थ पशु के रोमों की सफेदी में एक विशेष चमक होती है। गौरा की उज्ज्वलता देखकर ऐसा लगा, मानों उसके रोमों पर अभ्रक का चूर्ण मल दिया गया हो, जिसके कारण जिधर आलोक पड़ता था, उधर विशेष चमक उत्पन्न हो जाती थी।



गौरा को देखते ही गाय पालने के संबंध में मेरी दुविधा निश्चय में बदल गई।

गाय जब मेरे बँगले पर पहुँची, तब मेरे पशुचिलें और परिचारकों में श्रद्धा का ज्वार—सा उमड़ आया। उसे लाल—सफेद गुलाबों की माला पहनाई गई, केशर — शेली का बड़ा—सा टीका लगाया गया, घी का चौमुख दिया जलाकर आरती उतारी गई और उसे दही—पेडा खिलाया गया। उसका



नामकरण हुआ गौरांगिनी या गौरा। पता नहीं, इस पूजा अर्चना का उस पर क्या प्रभाव पड़ा, परंतु वह बहुत प्रसन्न जान पड़ी। उसकी बड़ी चमकीली और काली आँखों में जब आरती के दिये की लौ प्रतिफलित होकर झिलमिलाने लगी, तब कई दियों का भ्रम होने लगा। जान पड़ा, जैसे रात में काली दिखनेवाली लहर पर किसी ने कई दिये प्रवाहित कर दिए हो।

गौरा वास्तव में बहुत प्रियदर्शन थी, विशेषतः उसकी काली बिल्लोरी आँखों का तरल सौंदर्य तो दृष्टि को बाँधकर स्थिर कर देता था। चौड़े, उज्ज्वल माथे और लंबे साँचे में ढले हुए से मुख पर आँखें बर्फ में नील जल के कुंडों के समान लगती थी। उनमें एक अनोखा विश्वास का भाव रहता था। गाय के नेत्रों में हिरन के नेत्रों जैसे चकित विस्मय न होकर एक आत्मीय विश्वास ही रहता है। उस पशु को मनुष्य से यातना ही नहीं, निर्मम मृत्यु तक प्राप्त होती है। परंतु उसकी आँखों के विश्वास का स्थान न विस्मय ले पाता है, आतंक।

महात्मा गांधी ने “गाय करुणा की काबिल है” क्यों कहा, यह उसकी आँखें देखकर ही समझ में आ सकता है।

गौरा की अलस मंथर गति से तुलना करने योग्य कम वस्तुएँ हैं। तीव्र गति में सौंदर्य हैं परंतु वह मंथर गति के सौंदर्य को नहीं पाता। बाण की तीव्र गति क्षणभर के लिए दृष्टि में चकाचौंध उत्पन्न कर सकती हैं। परंतु मंद समीर से फूल का अपने वृतांत पर हौले हौले हिलनर दृष्टि का उत्सव है।

कुछ ही दिनों में वह सबसे इतनी हिल—मिल गई कि अन्य पशु—पक्षी अपनी लघुता और उसकी विशालता का अंतर भूल गए। कुत्ते—बिल्ली उसके पेट के नीचे और पैरों



के बीच में खेलने लगे। पक्षी उसकी पीठ और माथे पर बैठ कर उसके कान तथा आँखें खुजलाने लगे। वह भी स्थिर खड़ी रहकर और आँखें मूँदकर मानों उनके संपर्क सुख की अनुभूति में खो जाती थी।

हम सबको वह आवाज से नहीं, पैर की आहट से भी पहचानने लगी। समय का इतना अधिक बोध उसे हो गया था कि मोटर के फाटक में प्रवेश करते ही वह बाँ की ध्वनि से हमें पुकारने लगती। चाय नाश्ता तथा भोजन के समय से भी वह इतनी परिचित थी कि थोड़ी देर कुछ पाने की प्रतीक्षा करने के उपरांत रंभा—रंभाकर धर सिर पर उठा लेती थी।

उसका साहचर्यजनित लगाव, मानवीय स्नेह के समान ही निकटता चाहता था। निकट जाने पर वह सहलाने के लिए गरदन बढ़ा देती, हाथ फेरने पर अपना सुख आश्वस्त भाव से कंधे पर रखकर आँखें मूँद लेती। जब उससे दूर जाने लगते, तब गरदन घूमा—घूमाकर देखती रहती। आवश्यकता के लिए उसके पास एक ही ध्वनि थी। परंतु उल्लास, दुख, उदासीनता, आकुलता आदि की अनेक छाया छपियाँ उसकी बड़ी और काली आँखों में तैरा करती थी।

एक वर्ष के उपरांत गौरा एक पुष्ट सुंदर वत्स की माता बनी। वत्स अपने लाल रंग के कारण गेरू का पुतला जैसा जान पड़ता था। उसके माथे पर पान के आकार का श्वेत तिलक और चारों पैरों में खुरों के झ पर सफेद वलय ऐसे लगते थे, मानो गेरू की बनी वत्समूर्ति को चाँदी के आभूषणों से अलंकृत कर दिया गया हो। बछड़े का नाम रखा गया “लालमणि।” माता—पुत्र दोनों निकट रहने पर हिमराशि और जलते अंगारे का स्मरण कराते थे अब हमारे घर में मानो दुग्ध महोत्सव आरंभ हुआ। गौर प्रातः और सायं बारह सेर के लगभग दूध देती थी, अतः लालमणि के लिए कई सेर छोड़ देने पर भी इतना अधिक शेष रहता था कि आसपास के बाल गोपाल से लेकर कुत्ते—बिल्ली तक सबपर मानो “दूधो नहाओ” का आशीर्वाद फलित होने लगा। कुत्ते—बिल्लियों ने तो एक अद्भुत दृश्य उपस्थित कर दिया था। दुग्ध दोहन के समय से सब गौरा के सामने एक पंक्ति में बैठ जाते ओर महादेव उनके खाने के लिए निश्चित बरतन रख देता। किसी विशेष आयोजन पर आमांत्रित अतिथियों के समान वे परम शिष्टता का परिचय देते हुए प्रतीक्षा करते रहते। फिर नाच नाचकर सबके पात्रों में दूध डाल दिया जाता, जिसे पीने के उपरांत वे एक बार फिर अपने अपने स्वर में कृतज्ञता ज्ञापन सा करते हुए गौरा के चारों ओर उछालते कूदने लगते। जब तक वे सब चले न जाते गौरा प्रसन्न दृष्टि से उन्हें देखती रहती। जिस दिन उनके आने में विलंब होता, वह रँभा—रँभाकर मानो उन्हें पुकारने लगती।



अब कुछ दुग्ध दोहन की समस्या कोई स्थायी समाधान चाहती थी। नौकरों में नागरिक तो दुहना जानते ही नहीं थे और जो गाँव से आए थे, वे अभ्यास न होने के कारण यह कार्य इतना भूल चुके थे कि घंटों लगा देते थे। गौरा के आने से पूर्व जो ग्वाला हमारे यहाँ दूध देता था, जब उसने इस कार्य के लिए अपनी नियुक्ति के विषय में आग्रह किया, तब हमने अपनी समस्या का समाधान पा लिया।

दो-तीन मास के उपरांत गौरा ने दाना-चारा खाना बहुत कम कर दिया और वह उत्तरोत्तर दुर्बल और शिथिल रहने लगी। चिंतित होकर मैंने पशु चिकित्सकों को बुलाकर दिखाया। वे कई दिनों तक अनेक प्रकार के निरीक्षण – परीक्षण एक्सरे आदि द्वारा रोग का निदान खोजते रहे। अंत में उन्होंने निर्णय दिया कि गाय को सूई खिला दी गई है, जो उसके रक्त संचार के साथ हृदय के पार हो जाएगी, तब रक्त-संचार रुकने से उनकी मृत्यु निश्चित है।

मुझे कष्ट और आश्चर्य दोनों की अनुभूति हुई। सूई खिलाने का क्या तात्पर्य हो सकता है? दाना-चारा तो हम स्वयं देखभाल कर देते हैं। परंतु संभव है उसी में सूई चली गई हो। पर डॉक्टर के उत्तर से ज्ञात हुआ कि दाने-चारे के साथ गई सूई, गाय के मुख में ही छिदकर रह जाती है। गुड की बड़ी डली के भीतर रूखी सूई ही गले के नीचे उतर जाती है। और अंततः रक्त संचार में मिलकर हृदय में पहुँच सकती है।

अंत में एक ऐसा निर्मम सत्य उद्घाटित हुआ, जिसकी कल्पना भी मेरे लिए संभव नहीं थी। प्रायः खुद ग्वाले ऐसे घरों में जहाँ उनसे अधिक दूध लिया जाता है, गाय का आना सह नहीं पाते। अक्सर मिलते ही वे गुड में सूई लपेटकर उसे खिलाकर उसकी असमय मृत्यु निश्चित कर देते हैं। गाय के मर जाने पर उन घरों में वे पुनः दूध देने लगते हैं। सूई की बात ज्ञात होते ही ग्वाला एक प्रकार से अंतर्धान हो गया। अतः संदेह का विश्वास में बदल जाना स्वाभाविक था। वैसे उसकी उपस्थिति में भी किसी कानूनी कार्यवाही के लिए आवश्यक प्रमाण जुटाना असंभव था।

तब गौरा का मृत्यु से संघर्ष आरंभ हुआ, जिसकी स्मृति मात्र से आज भी मन सिहर उठता है। डाक्टरों ने कहा, गाय को सेब का रस पिलाया जाए, तो सूई पर कैल्शियम जम जाने और उसके न चुभने की संभावना है। अतः नित्य कई कई सेर सेब रस निकाला जाता और नली से गौरा को पिलाया जाता। शक्ति के लिए इंजेक्शन पर इंजेक्शन दिए जाते। पशुओं के इंजेक्शन के लिए सूजे के समान बहुत लंबी-मोटी सिरिज तथा बड़ी बोतल भर दवा की आवश्यकता होती है। अतः वह इंजेक्शन भी अपने आप में 'शल्य



क्रिया' जैसा यातनामय हो जाता था। पर गौरा अत्यंत शांति से बाहर और भीतर दोनों ओर की चुभन और पीडा सहती थी। केवल कभी-कभी उनकी सुंदर पर उदास आँखों के कोनों में पानी की दो बूंदें झलकाने लगती थी।

अब वह उठ नहीं पाती थी, परंतु मेरे पास पहुँचते ही उसकी आँखों में प्रसन्नता की छाया सी तैरने लगती थी। पास जाकर बैठने पर वह मेरे कंधे पर अपना मुख देती थी और खुरदरी जीभ से मेरी गरदन चाटने लगती थी।

लालमणि बेचारे को तो माँ की व्याधि और आसन्न मृत्यु का बोध नहीं था। उसे दूसरी गाय का दूध पिलाया जाता था, जो उसे रुचता नहीं था। वह तो अपनी माँ का दूध पीना और उससे खेलना चाहता था, अतः अवसर मिलते ही वह गौरा के पास पहुँचकर या अपना सिर मार-मार उसे उठाना चाहता था या खेलने के लिए उसके चारों ओर उछल कूदकर परिक्रमा-सी देता रहता।

मैंने बहुत-से जीव-जंतु पाल रखे हैं, अतः उनमें से कुछ को समय असमय विदा देनी ही पड़ती। ऐसी मर्मव्यथा का मुझे स्मरण नहीं है। इतनी हृष्ट-पुष्ट, सुंदर, दूध सी उज्ज्वल पयस्विनी गाय अपने इतने सुंदर चंचल वत्स को छोड़कर किसी भी क्षण निर्जीव और निश्चेष्ट हो जाएगी, यह सोचकर ही आँसू आ जाते थे।

लखनऊ, कानपुर आदि नगरों से भी पशु-विशेषज्ञों को बुलाया, स्थानीय पशु - चिकित्सक दो दिन में दो तीन बार आते रहे, परंतु किसी ने ऐसा उपचार नहीं बताया जिससे आशा की कोई किरण मिलती। निरुपण मृत्यु की प्रतीक्षा का मर्म वही जानता है, जिसे किसी असाध्य और मरणासन्न रोगी के पास बैठना पड़ता हो।

जब गौरा की सुंदर चमकीली आँखें निष्प्राण हो चलीं और सेब का रस भी कंठ में रुकने लगा, तब मैंने अंत का अनुमान लगा लिया। अब मेरी एक ही इच्छा थी कि मैं उसके अंत समय में उपस्थित रह सकूँ दिन में ही नहीं, रात में भी कई बार उठकर मैं उसे देखने जाती रही।

अंत में एक दिन ब्रह्ममुहूर्त में चार बजे जब मैं गौरा को देखने गई, तब जैसे ही उसने अपना मुख सदा के समान मेरे कंधों पर रखा, वैसे ही वह एकदम पत्थर जैसा भारी हो गया और मेरी बाँहों पर से सरककर धरती पर आ रहा कदाचित सूर्य ने हृदय को बेधकर बंद कर दिया।



गौरागिनी को ले जाते समय, मानो करुणा का समुद्र उमड़ आया। परंतु लालमणि इसे भी खेल समझ उछलता कूदता रहा। यदि दीर्घ निःश्वास का शब्दों में अनुवाद हो सके, तो उसकी प्रतिध्वनि कहेगी, “आह! मेरा गोपालक देश।”

कठिन भाब्दार्थ

वयःसंधि	—	बाल्य और यौवन के बीच की अवस्था
गोवत्सा	—	बछिया, गौ पुत्री
कुक्कुट	—	मुर्गा
चामर	—	चँवर
परिचारक	—	सेवक
बिल्लौरी	—	बिल्ली जैसी
निर्मम	—	ममताहीन
अलस	—	आलस्यपूर्ण,
अलसाई	—	सी
मंथर	—	धीमी
वलय	—	घेरा
आकुलता	—	चिंता
यातना	—	पीडा, तकलीफ
वत्स	—	पुत्र
अंतर्धान	—	छिप जाना, दिखाई न देना
अलंकृत	—	सजा हुआ
आसन्न	—	नजदीक, निकट
पयस्विनी	—	दुधारू, दूधवाली
निरुपाय	—	जिसका कोई उपाय न हो
निष्प्रभ	—	प्रभा विहीन, चमकारहीन

लेखनी से

1. गौरा कैसी थी? उसके रूप—रंग, आकार—प्रकार के आधार पर आप भी किसी पालतू जीव का चित्रण कीजिए।
2. “गौरा को ले जाते समय मानों करुणा का समुद्र उमड़ आया” पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
3. गौरा के उपचार के लिए लेखिका ने क्या—क्या उपाय किए?



सही उत्तर पर ✓ का चिह्न लगाइए

1. दूध दोहने वाले ने गौरा को सूई खिलाई ताकि ग्वाले का दूध बिक सके ☐
2. गौरा का चर्म काम आ सके चरा न खिलाना पड़े दूध न दोहना पड़े ☐
3. लेखिका ने “आह! मेरा गोपालक का देश” कहा है –
क. प्रसन्नता में ख. दुख में
ग. घृणा में घ. उत्सुकता में
4. “हम पशुओं से प्रेम क्यों करें” इस विषय पर चार-पाँच पंक्तियों में अनुच्छेद लिखिए।

उपसर्ग, मूल शब्द, प्रत्यय – शब्द चुनकर लिखिए।

विशिष्ट	विशेष	विशेषतः	वियोग
प्रभावित	आयोजन	प्रसन्न	परिचित

1. पाठ में आए विशेषण शब्दों को रेखांकित कीजिए।

पाठ में निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए:-

1. सघन चामर का स्मरण दिलाने वाली पूँछ।
2. गाय को मानों इटैलियन मार्बल में लशकर उस पर सोप दी गई हो।
3. मानों उसके रोमों पर अभ्रक का चूर्ण मल दिया गया हो।
4. जान पड़ा जैसे रात में काली दिखनेवाली लहर पर किसी ने कई दीये प्रवाहित कर दिए हो।
5. आँखें मूँदकर मानो उनके संपर्क सुख की अनुभूति में खो जाती।
6. रेखांकित वाक्यांशों से स्पष्ट है कि उपर्युक्त सभी वाक्यों में कल्पना या संभावना व्यक्त की गई है।
7. इनकी पहचान के लिए कुछ शब्द हैं जो इस प्रकार हैं—
मानो, मनहुँ, जनहुँ, गोया, ऐसा लगता है, सचमुच ही, लगभग आदि।



उत्तर लिखिए

1. गौरा के बारे में पाँच वाक्य लिखिए।
2. गौरा पालने की इच्छा क्यों हुई?
3. लेखिका किन पशुओं को पालना पसन्द नहीं करती थी? क्यों?
4. गौरा का रूप वर्णन कीजिए।
5. गौरा को देखकर लेखिका को क्या हुआ?
6. गौरा का स्वागत किस प्रकार किया गया?
7. गौरा का प्रियदर्शन होने का कारण बताइए।
8. गाय के नेत्रों की विशेषता क्या थी?
9. गौरा का स्वभाव कैसा था?
10. गौरा अन्य पशु-पक्षियों से भिन्न था – उदाहरण दीजिए।
11. गौरा प्रति दिन कितना सेर दूध देता था?
12. गौरा के बछड़े का नाम क्या है?
13. लालमणि और गौरे के प्यार के बारे में वर्णन कीजिए।
14. लालमणि के बारे में पाँच वाक्य लिखिए।
15. गौरा के बीमारी का कारण क्या था?
16. गौरा के रोग का उपचार लेखिका ने कैसे किया?
17. दुग्ध का अर्थ क्या है?
18. हिरण और गौरा के नेत्रों की तुलना कीजिए।
19. महादेवी वर्मा के पशु-प्रेम के बारे में पाँच वाक्य लिखिए।



सिद्धार्थ
शुद्धोदन
यशोधरा
राहुल
सारथी

पात्र

- राजकुमार
- कपिलवस्तु के राजा
- सिद्धार्थ की पत्नी
- सिद्धार्थ का पुत्र
- राजमहल का सारथी

पहला दृश्य

[कपिलवस्तु नगर के राज पथ पर एक रथ जा रहा है। उसमें सिद्धार्थ बैठे हैं। सारथी घोड़े हाँक रहा है।]

सिद्धार्थ — सारथी! देखो वह आदमी झुककर क्यों चलता है? उसके चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ गयी हैं, ऐसा क्यों हुआ है?





सारथी — राजकुमार! वह एक बूढ़ा आदमी हैं। बुढ़ापा आदमी को दबाता है, उसके तेज को छीन लेता है। हम भी कुछ साल के बाद बूढ़े हो जाएंगे।

सिद्धार्थ — क्या हम बुढ़ापे से बच नहीं सकते?

सारथी — नहीं राजकुमार, यह तो प्रकृति का नियम है। इसे कोई भी टाल नहीं सकता। आज जो जवान है, कल बूढ़ा होकर ही रहेगा।

[रथ आगे बढ़ता है। सिद्धार्थ के चेहरे पर व्याकुलता दिखाई देती है। सड़क के किनारे एक रोगी का कराहना सुनाई पड़ता है।]

सिद्धार्थ — [दुखी होकर] सारथी! यह क्यों कराह रहा है? इस आदमी का शरीर क्यों ऐसा गलता जा रहा है।

सारथी — राजकुमार! यह तो कोढ़ी है। कोढ़ एक तरह की भयंकर बीमारी है। इससे आदमी का शरीर गल जाता है और विकृत होता है।

सिद्धार्थ — क्या आदमी इस रोग से बच नहीं सकता है? लोग रोग को पास आने क्यों देते हैं?

सारथी — कोई भी रोगी होना नहीं चाहता, लेकिन यह शरीर ही रोगों का घर है। न मालूम कब कौन-सा रोग शरीर पर हमला कर बैठेगा।

सिद्धार्थ — रोग के होने पर आदमी की सुन्दरता नष्ट हो जाती है?

सारथी — रोग में कई ऐसे विकृत तत्व हैं जो शरीर के सौंदर्य को नष्ट कर देते हैं। शरीर के स्वस्थ रहने पर आदमी सुन्दर दिखता है वही बीमार होने पर भयंकर दिखाई देता है।

[रथ कुछ और आगे बढ़ता है, लोग रोते हुए एक अर्थी को कंधे पर लिये जा रहे हैं। उसे देख सिद्धार्थ पूछ बैठते हैं।]

सिद्धार्थ — ये लोग रोते क्यों हैं?

सारथी — राजकुमार, एक आदमी मर गया है। उसके संबंधी उसके शव को लिये जा रहे हैं। इसलिए वे लोग रोते हैं।





- सिद्धार्थ — क्यों मर गया है?
- सारथी — जो आदमी इस संसार में पैदा होते हैं, वह जरूर एक न एक दिन मरता है। मरना तो सबके लिए अनिवार्य है। लेकिन अन्तर इतना ही है कि कोई आज मरता है, तो कोई कल और कोई कुछ समय के बाद।
- सिद्धार्थ — इस मृत्यु से बचने का कोई उपाय नहीं है?
- सारथी — नहीं है राजकुमार। मनुष्य के जन्म के साथ ही मृत्यु उसका पीछा करती है। प्रत्येक जीवधारी के लिए रोग-शोक ज़रा और मरण सहज हैं। इनसे बचने का कोई मार्ग नहीं है। न आज तक किसीने इनसे बचने का मार्ग निकाला और न भविष्य में निकाल सकेगा। जन्म और मृत्यु प्रकृति के अटल सत्य हैं।
- सिद्धार्थ — कुछ विग्न होकर, सारथी, रथ लौटा दो मुझे शीघ्र राजमहल में पहुँचा दो। मैं अब कुछ देखना नहीं चाहता। मेरा मन अशांत है। मेरा सिर चकरा रहा है।
- सारथी — प्रभु! आपका कोमल मन परेशान हुआ मालूम होता है। अभी मैं आपको महल में पहुँचा देता हूँ। मेरे वचनों से आपको दुख पहुँचा है। माफ कीजिएगा।
- सिद्धार्थ — अब विलंब न करो, सारथी।
- सारथी — जो आज्ञा।

[रथ वेग के साथ राजमहल की ओर बढ़ता है।]

दूसरा दृश्य

[अर्धरात्रि का समय है। राजमहल में सभी लोग सो रहे हैं। सिद्धार्थ का मन बेचैन है वे अपने बिस्तर पर से उठते हैं। एक बार प्रेम-भरी दृष्टि अपनी पत्नी यशोधरा और पुत्र राहुल पर दौड़ाते हैं। दूसरे ही क्षण वे राजमहल से होकर अस्तबल के निकट पहुँच जाते हैं।]

- सिद्धार्थ — सारथी! सारथी!
- सारथी — क्या आज्ञा है, राजकुमार? क्या रथ लाऊँ?





- सिद्धार्थ — रथ नहीं, घोड़ा लाओ, सारथी।
- सारथी — घोड़ा? घोड़ा किसलिए राजकुमार?
- सिद्धार्थ — हाँ घोड़ा ही लाओ। घोड़ा लेकर जल्दी आ जाना।
- सारथी — अच्छा राजकुमार! जो आज्ञा।
- सिद्धार्थ — जल्दी लाओ, हमें इस नगर को छोड़कर जाना है।

【सिद्धार्थ आकाश की तरफ देखते हुए किसी गंभीर विचार में मग्न हो जाते हैं। सारथी घोड़ा ले आता है।】

- सारथी — राजकुमार! घोड़ा लाया हूँ।
- सिद्धार्थ — ठीक है, सारथी! हमको बहुत जल्दी इस कपिलवस्तु नगर को छोड़ना है। तैयार हो जाओ।
- सारथी — राजकुमार, इस आधी रात के समय, क्या कल सबेरे नहीं जा सकते? क्या महाराज से आज्ञा ले ली है?
- सिद्धार्थ — सारथी, यह बात तो मुझे सोचनी है, तुम्हें नहीं।
- सारथी — राजकुमार, गलती हुई, माफ कीजिए।
- सिद्धार्थ — घोड़े की लगाम हाथ में लेकर चलो, सारथी! अब हमें जल्दी यहाँ से प्रस्थान करना है।

【दोनों शहर के बाहर पहुँच चुके, तब】

- सारथी — राजकुमार, अब आप ही रास्ता दिखाइये। मैं आपके पीछे—पीछे चलूँगा।
- सिद्धार्थ — अच्छा (घोड़े से) प्यारे कंथक! तुमने नगर छोड़ते समय भी मेरा साथ दिया। अब कुछ ही घंटों में मैं तुम्हें भी छोड़कर जानेवाला हूँ।
- सारथी — (घोड़े को हांकते हुए) राजकुमार, क्या आप मुझे भी छोड़नेवाले हैं?
- सिद्धार्थ — जब मैंने राजपाट, पिता, पत्नी, पुत्र और सभी सुखों को त्याग दिया, तब तुम्हारी क्या बात है सारथी। राज्य को ही त्याग दिया तो सारथी का क्या पूछना?





सारथी — राजकुमार, आप हम सबको छोड़नेवाले हैं। हमने ऐसा कौन-सा पाप किया हैं?

सिद्धार्थ — पाप किसीने नहीं किया है। यह संसार ही पाप से भरा हुआ है। यहाँ से सदाचार का लोप हो गया है। सभी ओर दुख और दर्द का राज्य चल रहा है। मैं जब तक इसे बदल नहीं सकूँगा, तब तक लौटूँगा नहीं।

सारथी — राजकुमार, आपका यह सुकुमार शरीर

[रो पड़ता है।]

सिद्धार्थ — मैं अपने सुकुमार शरीर को ही तपाने जा रहा हूँ। सारथी! सोना आग में तपकर ही निखर उठता है। मैं भी तपस्या की अग्नि में अपने शरीर को तपाऊँगा सारथी।

सारथी — राजकुमार, क्या आप सन्यासी बननेवाले हैं?

सिद्धार्थ — सन्यासी बने बिना संसार का मोह तोड़ा नहीं जा सकता है सारथी। मैंने दृढ़ संकल्प कर लिया है कि मनुष्य को जरा-व्याधि तथा जन्म — मरण के चक्कर से मुक्ति दिलाकर ही लौटूँगा। मैं अपना संकल्प पूरा किये बिना कैसे लौटूँगा, क्षत्रिय कुमार जो ठहरा?

सारथी — राजकुमार, मैं सदा यही चाहूँगा कि आप अपने काम में सफल हो शीघ्र कपिलवस्तु लौटे और हम सबको दर्शन देकर हमारा उद्धार करें।

सिद्धार्थ — सारथी, तुम्हारी इच्छा पूरी हो। अब हम लोग जंगल के बीच पहुँच गये हैं।

[जंगल के बीच में पहुँचकर,]

सारथी — या तो बहुत डरावना स्थान मालूम होता है, राजकुमार। यहाँ पर तो हिंस्र पशुओं का निवास है। इस रास्ते से जाना खतरनाक है राजकुमार।





- सिद्धार्थ — सच पूछो तो मनुष्य से बढकर कोई भयंकर हिंस्र पशु नहीं है। यदि हम हिंस्र पशुओं को नहीं छेड़ते, तो वे हमारी कोई हानि नहीं करते।
- सारथी — राजकुमार, मुझे डर लगता है। आप इस भयंकर कानन में कैसे तपस्या कर सकेंगे?
- सिद्धार्थ — **[अनसुनी करके]** सारथी, अब ठहर जाओ।
- सारथी — इस भयंकर जंगल में?
- सिद्धार्थ — हाँ, हाँ । दोनों रुक जाते हैं। सारथी को पास बुलाकर सारथी , यह लो मेरा घोडा।
- सारथी — **[आँखों में आँसू भरकर]** राजकुमार!
- सिद्धार्थ — **[आभूषण, तलवार आदि उतारकर सारथी के हाथ में देते हुए]** ये सब पिताजी के हाथ में दे देना, और उनसे कहना कि मुझे सदा के लिए भूल जाएँ।
- सारथी — फिर आप कभी कपिलवस्तु नहीं लौटेंगे?
- सिद्धार्थ — कह नहीं सकता। मैं जा रहा हूँ। संसार का विजेता बनने के लिए। इसमें मुझे कहाँ तक सफलता मिलेगी? तलवार के बिना यह कैसे संभव होगा?
- सिद्धार्थ — हाँ सारथी! मैं ठीक कह रहा हूँ। मेरी विजय, प्रेम और अहिंसा के आधार पर होगी। तलवार की विजय केवल सपना मात्र है।

और वह हिंसा का विराट रूप है। मैं तो अहिंसा का पुजारी बनना चाहता हूँ। अब मुझे अपने मार्ग पर आगे बढने दो। तुम कपिलवस्तु लौटकर पिताजी को यह समाचार दो।

[सिद्धार्थ अपने अमूल्य आभूषण सारथी के थमा हाथ देते हैं और पैदल ही चल पड़ते हैं।]





सारथी — राजकुमार, आप धन्य हैं। आपकी पावन कामना सफल होकर रहेगी।

[सारथी सिद्धार्थ को देखता हुआ कुछ देर खड़ा रहता है। फिर धीरे-धीरे राजधानी की ओर लौटता है।]

तीसरा दृश्य

[कपिलवस्तु का राजमहल। राजा शुद्धोदन, यशोधरा और अंतःपुर की स्त्रियाँ सब विकल हैं।]

शुद्धोदन — [यशोधरा को समझाते हुए] बेटी रोओ मत। क्षत्राणियों को तो रोना नहीं चाहिए।

यशोधरा — महाराज, वे मुझसे कहकर जाते, तो क्या मैं उनको रोक देती? बिना कहे चले गये, इसी बात का मुझे दुख है।

शुद्धोदन — बेटी सिद्धार्थ का मन इधर कुछ दिनों से व्याकुल था। ज्योतिषी का कहना सत्य होकर ही रहा। हम उसको दोष क्यों दे?

यशोधरा — महाराज, मैं उन्हें दोष नहीं देती। भाग्य को कौन टाल सकता है? हम तो अपने पति-पुत्रों को युद्धभूमि में भी खुशी-खुशी भेजना जानती हैं। क्या वन में तपस्या करने के लिए और संसार का उद्धार करने के लिए जाने से उन्हें मैं रोक देती?

शुद्धोदन — पर सिद्धार्थ ने सोचा होगा कि शायद हम लोग उसे जाने नहीं देंगे। यही सोचकर बिना किसीसे कहे चला गया होगा।

यशोधरा — महाराज, यह तो क्षत्राणियों का अपमान है। परन्तु विधि की विडंबना को कौन रोक सकता है?

शुद्धोदन — बेटी, मनुष्य मायाजाल से घिरा रहता है। उसके लिए ममता आदि बंधनों को तोड़कर चला जाना मामूली बात नहीं है।

यशोधरा — महाराज मैंने भरसक उन्हें वैराग्य से विमुक्त करने की कोशिश की। लेकिन मेरा सारा प्रयत्न मिट्टी में मिल गया।



शुद्धोदन — बेटी, सिद्धार्थ मामूली आदमी नहीं है। वह छोटे परिवार और राज्य के घेरे में कैसे बंधा रह सकता है, जबकि सारा संसार उसकी प्रतीक्षा कर रहा है?

यशोधरा — महाराज, मुझे सुख और आराम की कोई चिन्ता नहीं। मैं यही चाहती हूँ कि मेरे स्वामी अपने मनोरथ को सफल बनाएँ। उनके रास्ते का मैं काँटा बनना नहीं चाहती।

शुद्धोदन — बेटी, तुम सब कुछ जानती हो। तुमको मैं अपनी बहू के रूप में पाकर बहुत खुश हूँ।

[इतने में एक सेवक आकर सारथी के राजमहल में आने का समाचार देता है। महाराज की आज्ञा पाकर सारथी प्रवेश करता है।]

सारथी — [प्रवेश करते ही] महाराज की जय हो।

शुद्धोदन — कहो, सारथी हमारे लिए क्या समाचार लाये हो?

सारथी — [बिलखते हुए] महाराज मैं मर जाता तो अच्छा होता। मुझे मौत भी नहीं आयी। राजकुमार की आज्ञा न होती तो, मैं वहीं नदी में कूदकर प्राण त्याग देता। महाराज! महाराज! उन्होंने आभूषण आदि उतारकर मेरे हाथ में देते हुए कहा “महाराज से कहना कि वे मुझे सदा के लिए भूल जाएँ।” मैं यही संदेश लाया हूँ महाराज! मुझे क्षमा कीजिये।

[सारथी रो पड़ता है। यशोधरा तथा अंतःपुर की स्त्रियाँ भी फफक-फफककर रोती हैं।]

शुद्धोदन — हाय, पुत्र! मैंने कौन-सा अपराध किया था कि तुम मुझे छोड़कर चले गये,? बहू ने और राहूल ने कौन-सा अपराध किया? तुमने तो हमें शोक सागर में डुबो दिया। तुम्हारा कोमल शरीर जंगल की सरदी-गरमी और बरसात को कैसे सहन कर सकेगा? क्या मैंने इसलिए तुम्हें फूलों की तरह पाल-पोसकर बड़ा किया था कि बड़े होने पर वन भेज दूँ? [सारथी से] कहो, और क्या कहा राजकुमार ने?



- सारथी — महाराज, वे तो जंगल में तपस्या करने के लिए काषाय वस्त्र पहनकर चले गये। कहा कि मैं सत्य की खोज में जा रहा हूँ और मुझे राजधानी लौटने का आदेश दिया।
- शुद्धोदन — सिद्धार्थ मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूँ? तुम क्या जानो? तुमको रोकने का मैंने बहुत प्रयत्न किया, लेकिन मेरी सारी आशाएँ आज मिट्टी में मिल गयीं। भगवान की इच्छा कुछ और ही थी। अब हमें अपने दिल को पत्थर बनाकर दिन बिताना होगा। अभागा राहुल! आओ, बेटी यशोधरा। दुखी मत होओ। एक न एक दिन सिद्धार्थ लौटकर आएँगे ही। [सब लोग राजमहल के भीतर जाते हैं।]

चौथा दृश्य

[नैरंजना नदी के किनारे एक वृक्ष के नीचे एक दुर्बल साधु बैठा है। ग्वालिन सुजाता खीर लिये वन देवता की पूजा के लिए आती है, साधु को देखकर ठिठक जाती है।]

- सुजाता — [स्वगत] ये कोई महात्मा मालूम होते हैं। निकट जाकर देखूँ। [निकट पहुँचकर] महात्मन्! आप बहुत दुर्बल मालूम होते हैं, यह भेंट ग्रहण कीजिये।
- सिद्धार्थ — [आँखें खोलकर धीमे स्वर में] देवी मैंने अन्न जल त्याग दिया। इसलिए मेरा शरीर दुर्बल हो गया है।
- सुजाता — साधु पुरुष! अन्न—जल त्यागने से तपस्या कैसे कर सकेंगे? तपस्या करने के लिए भी तो शक्ति चाहिए।
- सिद्धार्थ — देवी, मैं भी यही अनुभव करता हूँ। बहुत दिनों के मानसिक संघर्ष के बाद मैं भी आज इसी निर्णय पर पहुँच गया हूँ।
- सुजाता — यह खीर ग्रहण कीजिए महात्मन। [खीर का पात्र आगे बढ़ाती है।]
- सिद्धार्थ — [श्रद्धा भाव से ग्रहण करते हुए] देवी तुम मेरी साधना में सहायिका बनकर आयी हो। तुम्हारे इस सहयोग के कारण मुझे अपने लक्ष्य पर पहुँचने का विश्वास हो रहा है।





- सुजाता — महात्मन आप अपनी साधना चालू रखिये। प्रतिदिन मैं इसी समय आपको खीर लाकर दिया करूँगी।
- सिद्धार्थ — देवी, तुम्हारी इस कृपा के लिए मैं कृतज्ञ हूँ। माता की ममता से वंचित इस अभागे को तुम अपने वात्सल्य द्वारा अपूर्व बल प्रदान कर रही हों।
- सुजाता — साधुवर! तपस्या सब कोई नहीं कर सकते। जगत के कल्याण के लिए तप करनेवाले महात्माओं की सेवा करने का भाग्य सबको प्राप्त नहीं होता।
- सिद्धार्थ — देवी, तुम्हारा विचार प्रशंसनीय है। [खीर पीते हुए] यह अमृतमय खीर मुझे शांति प्रदान कर रही है। तुम्हारे इस उपकार को मैं कभी भूल नहीं सकता।
- सुजाता — महात्मन! आपको खीर पीते देख मुझे लगता है कि स्वयं वन-देवता ही मनुष्य का रूप धारण कर मेरी पूजा और प्रसाद ग्रहण कर रहा है।
- सिद्धार्थ — देवी, तुम्हारी श्रद्धा और भक्ति अटल हो। सुजाता — आपके इस अनुग्रह के लिए मैं चिर-कृतज्ञ रहूँगी। आज्ञा दीजिए।
- [सुजाता चली जाती है, सिद्धार्थ के पाँच शिष्य प्रवेश करते हैं।]**
- पहला शिष्य — आचार्यवर, आपने अन्न ग्रहण अपनी प्रतिज्ञा भंग कर दी है।
- सिद्धार्थ — वत्स! हमारा अंतिम ध्येय, लक्ष्य की प्राप्ति है। केवल उपवास के द्वारा शरीर-त्याग करने से अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच सकते।
- दूसरा शिष्य — लक्ष्य तक पहुँचने के लिए नियम का उल्लंघन भी तो नहीं कर सकते।
- सिद्धार्थ — नियम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए ही बनाये जाते हैं वत्स।
- तीसरा शिष्य — आचार्य ने एक स्त्री के हाथ से खीर ग्रहण कर अपनी तपस्या भंग की।
- सिद्धार्थ — तपस्या को आगे बढ़ाने के लिए ही मैंने खीर ग्रहण किया।



चौथा शिष्य — हमारे शास्त्रों में कहा गया है कि तपस्वियों को शारीरिक क्लेश सहन कर ही लक्ष्य की सिद्धि प्राप्त करनी चाहिए।

सिद्धार्थ — शारीरिक क्लेश सहन करने का मतलब अन्न—जल त्यागकर शरीर को निर्जीव बना देना नहीं है, वत्स! शरीर—धारण के साथ ही कोई महान कार्य कर सकते हैं। जगत का कल्याण शरीर—धारण से ही संभव है।

पाँचवाँ शिष्य — आचार्यवर, आप अपने ही वचन का भंग करते हैं। हमारी दृष्टि में आप धर्मच्युत हुए हैं। इसलिए आगे हम आपका साथ नहीं दे सकते। क्षमा करें।

सिद्धार्थ — वत्सों सुनो, साधना मार्ग में कई तरह के निर्णय करने पड़ते हैं। आवश्यकता पड़ने पर उनमें बीच—बीच में परिवर्तन भी करने पड़ते हैं।

सब — गुरुवर, अब आप पर हमारा विश्वास नहीं रहा। हमें यहाँ से जाने की अनुमति दें।

सिद्धार्थ — तुम लोगों की जैसी इच्छा।

【सब लोग चले जाते हैं। सिद्धार्थ भी थोड़ी दूर चलकर एक पीपल के वृक्ष के नीचे बैठते हैं और ध्यानमग्न हो जाते हैं।】

पाँचवाँ दृश्य

【सिद्धार्थ को वन में तपस्या करते सात साल बीत गये। उन्हें बुद्धत्व प्राप्त हुआ। आज वे कपिलवस्तु में आ रहे हैं। उनके स्वागत के लिए सभी लोग राजमहल के पास खड़े हैं। बुद्ध प्रवेश करते हैं। वे भिक्षुक के वेश में हैं। अन्तःपुर की स्त्रियाँ उन्हें देखकर रो पड़ती हैं।】

शुद्धोदन — 【आगे बढ़कर बुद्ध का स्वागत करते हुए】 कुमार, हम आपका स्वागत करते हैं।

बुद्ध — महाराज, हम आपके महल में भिक्षा पाने के लिए आये हैं।

शुद्धोदन — 【आश्चर्य से】 भिक्षा कैसी? यह राज्य ही आपका है, राजकुमार।

बुद्ध — परन्तु मेरा राज्य कुछ दूसरा है, महाराज! मैं किसी भी हालत में इस राज्य को ग्रहण नहीं कर सकता। मुझे राजकुमार





नहीं, भिक्षुक कहिये, महाराज।

- शुद्धोदन — आप यहीं रहकर अपने धर्म का प्रचार कर सकते हैं न?
- बुद्ध — नहीं महाराज, भिक्षु किसी के आश्रय या किसी बन्धन को स्वीकार नहीं करता।
- शुद्धोदन — अपने पिता की भी इच्छा पूरी नहीं कर सकते?
- बुद्ध — नहीं महाराज, आत्मा की इच्छा ही सर्वोपरि है।
- शुद्धोदन — तब तो हमारा आतिथ्य ही स्वीकार कीजिये।
- बुद्ध — मुझे बढ़िया खाना नहीं चाहिए, महाराज। भिक्षु लोग रूखा—सूखा ही खाते हैं।
- शुद्धोदन — [रोते हुए] क्या मैं। यही दिन देखने के लिए जीवित था?
- बुद्ध — महाराज, आपको तो खुश होना चाहिए।

[शुद्धोदन यशोधरा को बुलाते हैं, पर वह नहीं आती। बुद्ध इसका कारण समझ लेते हैं और स्वयं उसके कमरे के निकट पहुँचकर भिक्षा — पात्र आगे बढ़ाते हैं।]

- बुद्ध — देवि, भिक्षा दीजिए।
- यशोधरा — प्रभु, आपको भिक्षा देने की योग्यता मुझमें नहीं है।
- बुद्ध — क्यों नहीं, आप तो साध्वी हैं। आप जैसी एक नारी ने ही मुझे खीर पिलाकर मेरी साधना को सफल बनाया था।
- यशोधरा — भगवान मैं असहाय हूँ।
- बुद्ध — देवि, इस संसार में कोई असहाय नहीं है। आत्मा को लेकर सभी बड़े हैं। आज शाम को मैं इसी विषय पर उपदेश देनेवाला हूँ, जरूर सुनिये। अब भिक्षा दीजिये।
- यशोधरा — प्रभु मेरे पास देने को कुछ नहीं है। यही एक मात्र राहुल है। इसीको आप ग्रहण कीजिये।

[यशोधरा अपने पास खड़े हुए राहुल का हाथ पकड़कर उसे बुद्ध के हाथ में सौंप देती हैं।]

- बुद्ध — देवी आप धन्य हैं। आपका यह अपूर्व त्याग इतिहास में अमर रहेगा। मैं इस भिक्षा को आदर के साथ ग्रहण करता हूँ। अब मुझे जाने की आज्ञा दीजिए।



[यशोधरा बुद्ध को प्रणाम करके चली जाती है।]

राहुल — बुद्धं शरणं गच्छामि। धर्मं शरणं गच्छामि। संघं शरणं गच्छामि।

[यह कहते हुए राहुल बुद्ध को प्रणाम करता है। बुद्ध उसे साथ लिये चलने लगते हैं।]

[पर्दा गिरता है।]

उत्तर लिखिए

1. शुद्धोदन कौन थे? उनके पुत्र का नाम क्या था?
2. सिद्धार्थ की पत्नी व पुत्र का नाम बताइए।
3. सिद्धार्थ ने सारथी से क्या पूछा?
4. सारथी ने सिद्धार्थ से कोढ़ के बारे में क्या कहा?
5. सारथी ने रोग और रोगी की अवस्था कैसे समझाया?
6. सिद्धार्थ को सारथी ने रोने के कारण का विवरण किस प्रकार दिया?
7. सारथी ने सिद्धार्थ से क्या कहकर माफी माँगी?
8. सिद्धार्थ ने सारथी से क्या कहकर रथ लौटाने को कहा?
9. सारथी ने जन्म — मरण का विवरण सिद्धार्थ को किस प्रकार दिया?
10. किसका त्याग अपूर्व है?
11. अपूर्व त्याग पाठ की विशेषता बताइए।
12. सिद्धार्थ के हृदय परिवर्तन का कारण समझाइए।
13. 'अपूर्व त्याग' का सारांश लिखिए।



दक्षिण आफ्रिका से भारत लौटने पर गाँधीजी ने कोचरब गाँव में साबरमती सत्याग्रह आश्रम कायम किया और वहाँ अपने साथियों के साथ रहने लगे। बाद में आश्रम को साबरमती के किनारें आज के सत्याग्रह – आश्रम की जमीन पर हटाया गया। भारत में उनका नाम दक्षिण आफ्रिका में सत्याग्रह को जन्म देनेवाले और उसमें सफलता प्राप्त करनेवाले नेता के रूप में फैला हुआ था। इसलिए साबरमती के तीर पर बैठकर वह यशस्वी पुरुष किस चीज की साधना करते हैं, यह जानने की उत्सुकता से भी समय समय पर बहुत से मुलाकाती आश्रम में आया करते थे। गाँधीजी भी समय निकालकर वकीलों की गुजरात क्लब जैसी संस्थाओं में जाते थे, आश्रम के जरिये वे भविष्य में क्या करना चाहते हैं, यह बात वकील मंडल को समझाते थे और आश्रम में आकर वहाँ चल रहे कामों को देखने का आमंत्रण भी उन्हें देते थे।

गाँधीजी इसपर खास जोर देते थे कि आश्रमवासियों को सत्य, अहिंसा, अस्तेय, चोरी न करना, अपिरग्रह, संग्रह न करना ब्रह्मचर्य वगैरह ग्यारह व्रतों का लगन और निष्ठा से पालन करना चाहिए। इन ग्यारह व्रतों को जीवन की साधना का केन्द्र समझकर आश्रमवासी अपने सारे काम करते थे। आश्रम में नौकर-चाकर के लिए कोई स्थान नहीं था, इसलिए शरीर-श्रम के सारे काम आश्रमवासी अपने हाथों से ही करते थे। फिर वह काम रसोई – घर का हो या पाखाना सफाई का हो, दोनों में भेद नहीं माना जाता था।

उन दिनों विनोबाजी भी आश्रम में रहते थे। गाँधीजी विनोबाजी और महादेव भाई जैसे महापुरुष भी आटा पीसने या अनाज साफ करने का काम प्रसन्न मन से करते थे। इन सब चक्की पीसने या रसोई-घर में बैठकर अनाज साफ करने का दृश्य कितना सुन्दर, प्रेरणा देनेवाला और जीवन के मूल्यों को बदलनेवाला रहा होगा।

गाँधीजी मुलाकातियों या मेहमानों से भी ऐसे काम करने के लिए कहते थे। एक बार गुजरात के प्रसिद्ध विद्वान श्री आनन्द शंकर ध्रुव, गाँधीजी से मिलने के लिए आये। गाँधीजी उस वक्त चक्की पर बैठकर अनाज पीस रहे थे।



उन्हें देखकर गाँधीजी बोले, “पधारिये! पधारिये!” फिर पल-भर चक्की को रोककर श्री ध्रुव से विनती करते हुए बोले, “आपको कोई आपत्ति न हो, तो आप भी पीसने बैठ जाइये। हम अनाज पीसते पीसते बातें करेंगे। संत की विनती स्वीकार करके श्री ध्रुव तुरंत बैठ गये और चक्की पीसने में गाँधीजी की मदद करने लगे। पीसते पीसते बातचीत पूरी हो जाने के बाद ध्रुव साहब बिदा हुए।

एक दिन रसोई घर में अनाज साफ करने का समय था। गाँधीजी, विनोबाजी वगैरह सब अनाज साफ कर रहे थे। उसी समय कोट पतलून से सजे धजे एक वकील साहब गाँधीजी से मिलने आये। उनके लिए चटाई का आसन जमीन पर बिछाकर गाँधीजी बोले – बैठिए।

वकील खड़े खड़े कहे “गाँधीजी, मैं यहाँ बैठने के लिए नहीं आया हूँ। मुझे कोई काम चाहिए। आप मेरे लायक कोई काम मुझे सौंपेंगे। इसी आशा में मैं आश्रम में आया हूँ।

“बड़े आनंद की बात है” – कहकर गाँधीजी ने दो-तीन थाली अनाज साफ करने के लिए वकील साहब के सामने रख दिया और बोले – अनाज इस तरह साफ कीजिए कि उसमें एक भी कंकड़ न रहे।

अपने सामने अनाज की ढेरी देखकर वकील साहब बड़े विचार में पड़ गये। अनाज की सफाई तो नौकरों का या घर की औरतों का काम है। वकील जैसे बुद्धिमान आदमी से गाँधीजी ऐसा हल्का काम लेते हैं, यह कैसी अजीब बात है। इस तरह मन में थोड़ा असंतोष मानते हुए बोले, “अनाज-सफाई का काम मुझे करना होगा?”

गाँधीजी – हाँ अभी तो मेरे पास यही काम है। अब क्या किया जाय? वकील साहब परेशानी में पड़ गये। उन्होंने सोचा था कि गाँधीजी कुरसी टेबुल पर बैठकर लिखने का या ऐसा ही कोई दिमाग का काम उन्हें देंगे। लेकिन उन्होंने तो रसोई- घर में काम करनेवाले बहनों का हल्का काम उन्हें सौंपा, जिसकी उनकी निगाह में कोई कीमत नहीं थी। लेकिन गाँधीजी से ना कहने की भी हिम्मत उनमें नहीं थी। आखिर वे अनाज साफ करने बैठे। काम पूरा हो जाने पर उन्होंने गाँधीजी से बिदा ली। परंतु फिर कभी गाँधीजी से “मेरे लायक काम” की मांग नहीं की।

गाँधीजी के जीवन में छोटे और बड़े काम का कोई फर्क नहीं था। वे जीवन के लिए उपयोगी सारे कामों की एक सी कीमत करते थे। वाइसराय के साथ राजनीतिक



मंत्रणा करने, सत्याग्रह आंदोलन का संचालन करने, कार्यकर्ताओं की रहनुमाई करने या हरिजन पत्रों के लिए लेख लिखने को वे जितना महत्व देते थे, उतना ही महत्व बीमारों की सेवा, अनाज-सफाई या पाखाना -सफाई को भी देते थे। उन्होंने ऐसा कभी नहीं माना कि आटा पीसना, अनाज साफ करना, रसोई बनाना, पानी भरना या बीमारों की सेवा करना स्त्रियों के हल्के काम हैं। वे मानते थे कि सेवा का हर काम पवित्र है और कुशलता के साथ भली-भांति पूरा करने में ही जीवन की सफलता की कुंजी है। हम यह न भूलें कि गाँधीजी की महत्ता और महिमा को बढ़ाने में ऐसे छोटे-छोटे कामों का बहुत बड़ा हाथ था।

उत्तर लिखिए

1. गाँधीजी किस काम को पवित्र मानते थे?
2. गाँधीजी ने दक्षिण आफ्रिका से लौटकर क्या किया?
3. गाँधीजी ने आश्रमवासियों पर कौन-कौन से व्रत पर जोर दिया?
4. गाँधीजी के आश्रम खोलने का उद्देश्य क्या था?
5. गाँधीजी ने आश्रम का नाम क्या रखा?
6. गाँधीजी के साथ, आश्रम में कौन-कौन थे?
7. गाँधीजी समय का सदुपयोग कैसे करते थे?
8. गाँधीजी अपने मुलाकातियों से क्या करवाते थे?
9. वकील ने गाँधीजी से क्या विनती की और गांधीजी ने क्या जवाब दिया?
10. वकील ने गाँधीजी से क्या अपेक्षा की थी?
11. गाँधीजी हरेक के साथ कैसा व्यवहार करते थे?
12. गाँधीजी के विचारों के बारे में पाँच वाक्य लिखिए।
13. “सेवा का हर काम पवित्र है” पाठ का सार लिखिए।



“मैं आपकी शरण आया हूँ, महाराज!” रणथंभार के राणा हमीर अपने दरबार में बैठे अपना राज – काज देख रहे थे कि किसी ने पुकारा, “मैं आपकी शरण आया हूँ, महाराज!”

हमीर ने आँखें ऊपर की तो देखा कि एक बहादुर मुसलमान उनके सामने था! सिर उसका झुका हुआ और गला व्यथा से भरा हुआ। “कौन हैंसे तुम?” हमीर ने पूछा।

“महाराज, मैं दुखिया हूँ, मेरे प्राण संकट में हैं, आपकी शरण आया हूँ।”

आगुंतक की पूरी कहानी – “मेरा नाम माहमशाह, काम सिपाहगिरी, बादशाह अलाउद्दीन खिलजी का खादिमा। एक मामूली बात पर बादशाह नाराज हो गए और मेरे लिए फाँसी का हुक्म दे दिया। वे घड़ियाँ नजदीक थीं, जब फाँसी का फंदा दम घोट देता और मेरी लाश को चील और कुत्तों के लिए फेंके दिया जाता कि मैं जेल से फरार हो गया और अब अपने प्राणों की रक्षा के लिए आपकी शरण में हाजिर हूँ। मेरी रक्षा कीजिए महाराज।”

अमीर ने गौर से माहमशाह को देखा। माहम बहुत घबराया हुआ था। “दिल्ली और रणथंभार के बीच तो राजपूतों के कई राज्य हैं, तुम उनमें क्यों नहीं गए, माहम?” हमीर ने गंभीरता से पूछा। और भी दीन होकर माहम ने कहा, “महाराज, मैं सबके दरवाजे गया, सबने मुझे सहानुभूति दी, पर कोई शरण न दे सका, क्योंकि मैं दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन खिलजी का भगाडा हूँ और मुझे शरण देकर कोई उन्हें नाराज नहीं करना चाहता।”

हमीर ने अपने सलाहकारों को देखा और अनुत्साहित पाया। उनको भय थी, “महाराज, माहमशाह की तलवार आज आपकी शरण में है, पर कल तक वह हमारे खून की प्यासी थी। हम उसे अपनी छाया में लेकर दिल्ली के तख्त की लपलाती क्रोधाग्नि को न्यौता क्यों दें?”



“यह दिल्ली के तख्त की लपलपाती क्रोधाग्नि को न्यौता देने की बात नहीं है, सरदारों! यह कर्तव्य का प्रश्न है, आन का प्रश्न है। जब माहम इस द्वार से लौटेगा, तो स्वर्ग के सुख-साज में काँटों की चुभत का अनुभव न होगा?” हमीर ने आवेश में पूछा।

सरदारों ने कहा, “क्षमा करे, महाराज। आपकी बात परम पवित्र, पर कर्तव्य की भी एक सीमा है।”

“कर्तव्य की सीमा?” कड़ककर हमीर ने पूछा, कर्तव्य की सीमा है? कर्तव्य और कर्तव्य की सीमा है? कर्तव्य पालन। कर्तव्य के पालन में सुख मिलेगा या दुख, जय होगी या पराजय, यह दूकानदारी की वृत्ति राजपूतों को शोभा नहीं देती। माहम शरणार्थी की रक्षा राजपूत का कर्तव्य है। यह कर्तव्य हमें पूरा करना है, फिर इससे दिल्ली का बादशाह हो या दुनिया का सामंत – सरदार भी अब महाराज की भावधारा में बहकर, व्यवहार – बुद्धि से दूर, भावना के क्षेत्र में पहुँच गए थे। उनके मुँह से निकला, “धन्य महाराज!”

हमीर ने कहा, “माहमशाह, रणथंभोर अब तुम्हारा घर है। आराम से यहाँ रहो और विश्वास रखो कि अब किसी की हिम्मत नहीं कि तुम्हारी तरफ तिरछी आँखों से देखे। कोई कपट हो तो हमे कहना, जाओ।

कानों कान यह उड़ती खबर दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन खिलजी तक पहुँची, तो वह तमतमा उठा, “हमीर की यह हिमाकत कि मेरे चोर को आसरा दें।”

“क्या तुम नहीं जानते हमीर! जो तुमने माहम को अपनी छत दी? खैर, मैं भूलों को माफ करना जानता हूँ। सुपुर्द करो और अपने कसूर की माफी माँगो!”

अलाउद्दीन का यह संदेश हमीर के पास पहुँचा तो वह मुसकराया। उसने लिखा, “माहम को शरण दी है, कोई नौकर नहीं रखा और अपना सर्वस्व लुटाकर भी शरणागतों की रक्षा करना मेरी जाति के संस्कार है। सपने में भी उम्मीद न रखिए कि माहम को मैं आपके दरवाजे लाऊँगा। अब जो मुसीबत समझें, कीजिए।”

जवाब क्या था, एक पलीता था, जिसने खिलजी के बारूद में आग लगा दी और उसने कुछ दिन बाद ही अपनी फौजों के साथ रणथंभोर का किला घेर लिया।

“लडाई – झगड़े से क्या फायदा, हमीर! ले माहम को मुझे सौंप दे।” खिलजी की यह आखिरी संदेश था।



“लड़ाई से मैं नहीं डरता और जीवन की आखिरी घड़ी तक माहम की रक्षा करूँगा।”
हमीर का यह आखिरी उत्तर था।

दूसरे दिन रण—दुंदुभी बज उठी। ऊँची पहाड़ी पर बना रणथंभोर का किला और चारों ओर फैली शाहजी फौजें। एक तरफ अपने बादशाह के लिए लड़नेवाली फौजें तो दूसरी तरफ अपनी आन पर मर मिटने वाले सिपाही। एक तरफ भरपूर साधन, तो दूसरी तरफ भरपूर आन। लड़ाई क्या थी? यह बात की बाजी और यह बाजी जिसका निशाना उस आदमी के प्राण और इस एक प्राण के लिए हजारों प्राण, सरसों के दानों की तरह हथेली पर।

दोनों तरफ हजारों योद्धा काम आए। बादशाह की ताकत जितनी जोजती, दिल्ली उसे पूरा कर देती, पर हमीर की शक्ति — धारा की जो लहर बह जाती, फिर न लौटती। हर टूटती तलवार सौ का निन्यानबे करती और हर गिरता सिपाही हजार को नौ सौ निन्यानबे। व्यय के रास्ते खुले हुए थे, आय के बंद! फारूँ का खजाना और कुबेर का कोष भी यों कब तक टिक पाता!

हमीर उस दिन कुछ सोच रहे थे कि माहमशाह आकर खड़े हो गए। “कहिए, शाह साहब, क्या बात है?” हमीर ने कहा।

माहमशाह को चुप देखकर हमीर ने पूरी गंभीरता से कहा, “शाह साहब, यह लड़कों का खेल नहीं, युद्ध है। फिर क्या आप नहीं जानते कि मैं राजपूत हूँ। हार—जीत तो किस्मत के दो किनारे हैं, इनकी फिक्र न कीजिए!”

लड़ाई चलती रही। सामान और सिपाही घटते रहे। एक दिन भंडारी ने खबर दी, “आज खाने का सामान खतम है।”

रणथंभोर के किले में एक सभा हुई कि अब क्या हो? माहमशाह ने बहुत खुशामद की, वह बहुत गिड़गिड़ाया कि उसे बादशाह को सौंपकर सुलह कर ली जाए, पर उसके प्रस्ताव का समर्थक वहाँ कोई न था। सच्चाई यह है कि हमीर और उनके साथियों के सामने यह प्रश्न ही न था कि हम कैसे बचें। उनकी विचार दिशा तो केवल यह थी कि हम कैसे लड़ें। भावुकता का ऐसा ज्वर विश्व के इतिहास में शायद हो और कहीं आया हो।

फैसला हुआ कि कल किले का द्वार खोल दिया जाए और जमकर युद्ध हो। इस युद्ध का स्पष्ट अर्थ था — आत्माहुति, सर्वस्व समर्पण। जीत की कामना सिपाही



को उत्साह देती है, तो विजय की आशा उसे बल। कामना और आशा के झूले पर इधर से उधर झूलने वाले ये सिपाही न थे इन्हें झूलूँ नहीं झूमना था, इन्हें बुझना नहीं, जूझना था। और किले में यौवन की किलकारियों भरती इन स्त्रियों का क्या होगा? उन्होंने फैंसला किया कि किले के द्वार खुलने से पहले जौहर करेंगी।

अब वे निश्चित थे, जैसे उन्हें जैसे करना था, कर चुके थे। रात को वे सब सो रहे थे, सुबह जल्दी उठना था, हमेशा को सोने के लिए। ऐसी जीवंत नींद रात के सितारों ने फिर नहीं देखी, यह वे आपस में अब भी यह कहा करते हैं।

क्या आत्मा की अमरता का ऐसा विश्वास और मृत्यु का इतना मनोरम विवरण इतिहास के किसी और पृष्ठ में भी इतने प्रदीप्त रूप में लिखा गया है?

पौ फटी। किले का द्वार खोल दिया गया और रणथंभोर के योद्धा रण में कूद पड़े। रण था यह दिल्ली की फौजों के लिए, रणथंभोर वालों के लिए तो आत्मदान का यज्ञ था। माहम और हमीर साथ साथ आगे बढ़े और काल बनकर बरसे। दूसरे सिपाही भी खून की आखिरी बूँद तक लड़े। रणथंभोर की ये शहादत ये बलिदान, ये कुरबानियों वीरता के इतिहास में अपना जोड़ नहीं रखतीं और आज सदियों बाद भी उनसे अगरबत्तियों सी जीवन के सौरभ की भीनी एवं प्रेरक सुगंध आ रही है।

प्रश्न अभ्यास

भाव बोध और सराहना

1. हमीर की शरण में कौन आया था और क्यों?
2. माहम को अन्य राजाओं ने शरण क्यों नहीं दी?
3. हमीर के सरदारों ने उसे क्या राय दी?
4. "सामंत सरदार भी अब महाराज भी भावधारा में बढकर व्यवहार बुद्धि से दूर भावना के क्षेत्र में पहुँच गये थे।"
क) व्यवहार बुद्धि क्या होती है?
ख) भावना के क्षेत्र से क्या आशय है?
5. अलाउद्दीन ने हमीर को क्या संदेश भिजवाया?
6. अलाउद्दीन और हमीर के युद्ध साधनों में क्या अंतर था?
7. 'रण था यह दिल्ली की फौजों के लिए, रणथंभोर वालों के लिए तो यह आत्मदान का यज्ञ था।' उपर्युक्त वाक्य का भाव स्पष्ट कीजिए।



1. भाषा अधिगम:

अरबी-फारसी से आए अनेक शब्द हिंदी के शब्द भंडार में हैं, जिन्हें 'आगत' शब्द कहा जाता है। निम्नलिखित आगत शब्दों के लिए तत्सम या तद्भव हिंदी पर्याय दीजिए:

नजदीक	माफ करना
फरार होना	किस्मत
हाजिर	आखिरी
हुक्म फौज	

निम्नलिखित शब्दों से तत्सम और तद्भव शब्दों की सच्ची अलग-अलग बनाइए

उत्साह,	न्यौता,	घर,	कर्तव्य,
सीमा,	क्रोध,	आँख,	सिर,
दुखिया,	प्रायः,	रक्षक,	शरण

अनुभव विस्तार:

प्रस्तुत पाठ को एकांकी में बदलकर इसका अभिनय कीजिए।

अपनी आन पर सब कुछ निछावर कर देने की भावुकता अच्छा गुण नहीं है! इस पर विषय वाद-विवाद कीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी:

श्वादिम	—	सेवक, अनुचर	फरार होना	—	भाग जाना
अनुत्साहित	—	उत्साहहीन			
शरणार्थी	—	रक्षा के लिए शरण में आया हुआ			
काम आना	—	मारा जाना	छीजना	—	कम पडना
फारुँ का खजाना	—	कुबेर का कोष, फारसी कहावत के अनुसार फारुँ और भारती पुराणों के अनुसार कुबेर धन के देवता हैं। कहा जाता है कि इनका कोष सदा भरा रहता है।			
जीवंत	—	जीवन से परिपूर्ण, सजीव			
प्रदीप्त	—	जगमगाता, प्रकाशित			



प्रश्न अभ्यास

1. राणा हमीर के दरबार में कौन आया और राजा से क्या प्रार्थना की?
2. राणा हमीर ने माहमशाह से क्या पूछा?
3. माहमशाह ने राणा हमीर को क्या जवाब दिया?
4. राणा हमीर को सलाहकारों ने क्या सलाह दी?
5. राजा हमीर ने सरदारों से क्या प्रश्न किया?
6. राजा हमीर ने कर्तव्य की सीमा के बारे में क्या कहा?
7. राजा हमीर ने माहमशाह को क्या आश्वासन दिया?
8. हमीर की लड़ाई के बारे में क्या विचार था?
9. खिलजी का आखिरी संदेश हमीर को क्या था?
10. हमीर ने राजपूत की वीरता के बारे में क्या कहा?
11. युद्ध का परिणाम देखकर माहमशाह से राजा हमीर ने क्या विनती की?
12. युद्ध का कारण क्या था? और अंत में क्या हुआ?
13. “शरणागत के लिए” एकांकी का सार लिखिए।



दिनकर जी का जन्म बिहार राज्य में सिंवरिया नामक स्थान में हुआ। वे हिन्दी की राष्ट्रीय धारा के महान कवि थे। उनकी कविताएँ भारत की सोई आत्माओं को जगाने में सफल हुई हैं। वे सरकारी कर्मचारी, कालेज के प्रोफेसर, संसद के सदस्य, विश्व विद्यालय के उपकुलपति तथा भारत सरकार की हिन्दी सलाहकार समिति के अध्यक्ष रहे थे।

प्रकृति के सौन्दर्य के प्रति 'दिनकर' का दृष्टिकोण अनूठा है। उस दृष्टिकोण में प्रकृति कर्म की प्रेरणा देती है। प्रकृति का सौन्दर्य उनके लिए एक संघर्षरत होने की प्रेरणा प्रदान करनेवाला सत्य है।

राजा वसंत, वर्षा ऋतुओं की रानी,
लेकिन, दोनों की कितनी भिन्न कहानी!
राजा के मुख में हँसी, कंठ में माला,
रानी का अन्तर विकल, दृगों में पानी।

डोलती सुरभि राजा-घर कोने-कोने,
परियों सेवा में खड़ी सजाकर दोने।
खोले अलकें रानी व्याकुल-सी आयी,
उमड़ी जाने क्या व्यथा, लगी वह रोने।।

रानी रोओ, पोंछो अश्रु न अंचल से,
राजा अबोध खेलें कचनार-कमल से।
राजा के वन में कैसे कुसुम खिलेंगे,
सींचो न धरा यदि तुम आँसू के जल से?

'राजा रानी' कविता के रचयिता कौन है?
'राजा रानी' के रूप में कवि ने किनको माना है?
कवि वसंत काल के बारे में क्या कहते हैं?
कवि की वर्षा ऋतु की महिमा का वर्णन कीजिए।



उत्तर लिखिए:

- 1 कवि का प्राकृतिक – सौंदर्य दृष्टिकोण कैसा है?
- 2 कवि रानी से क्यों रोने को प्रेरित करते हैं?
- 3 कवि ने राजा रानी की तुलना किस प्रकार की है?
- 4 'राजा रानी' कविता का सार लिखिए।



आप दिवेदी युग के साहित्यकार ही नहीं, बल्कि सुप्रसिद्ध कहानीकार तथा उपन्यासकार भी थे। आपकी कविता में राष्ट्रीयता की भावना अधिक दिखाई देती है। 'पथिक', 'मिलन', 'स्वप्न' आदि आपकी प्रसिद्ध कविताएँ हैं।

प्रस्तुत कविता के द्वारा कवि समझाना चाहता है कि भगवान न मंदिर में है और न ही मसजिद में। वह न छंदों में है न प्रबंधों में है। भगवान दीन जनों के भूख प्यास में है। ढूँढकर देखें तो वहीं उसके दर्शन होंगे।

ना मंदीर में, ना मसजिद में

ना गिरजे के आस-पास में।

ना पर्वत पर, ना नदियों में,

ना घर बैठे, न प्रवास में।

ना कुंजों में, ना उपवन के

शांति भवन या सुख-निवास में।

न गाने में, ना बाने में,

ना आँसू में, नहीं हास में।

न छन्दों में, ना प्रबन्ध में,

अलंकार ना अनुप्रास में।

खोज ले कोई राम मिलेंगे

दीन जनों की भूख-प्यास में।।



कठिन शब्दार्थ

प्रवास — विदेशवास अनुप्रास — रचना में एक तरह का अलंकार
कुंज — झाड़ी छंद — पद्य प्रबंध — एक तरह का बड़ा काव्य
हास — हँसी

उत्तर लिखिए:

1. राम कहाँ मिलेंगे किसकी कविता है?
2. कवि ने 'राम कहाँ मिलेंगे' में क्या कहा है?
3. कवि की दृष्टि में राम कहाँ मिलेंगे?
4. 'राम कहाँ मिलेंगे' कविता का भाव स्पष्ट कीजिए।



कभी-कभी मैं अपने मित्रों की परीक्षा लेती हूँ, यह परखने के लिए कि वह क्या देखते हैं। हाल ही में मेरी एक प्रिय मित्र जंगल की सैर करने के बाद वापिस लौटी। मैंने उनसे पूछा “आपने क्या-क्या देखा?” “कुछ खास तो नहीं,” उनका जवाब था। मुझे बहुत अचरज नहीं हुआ क्योंकि मैं अब इस तरह के उत्तरों की आदी हो चुकी हूँ। मेरा विश्वास है कि जिन लोगों की आँखें होती हैं, वे बहुत कम देखते हैं। क्या यह संभव है कि भला कोई जंगल में घंटा भर घूमे और फिर भी कोई विशेष चीज न देखें? मुझे जिसे कुछ भी दिखाई नहीं देता, तो भी सैकड़ों रोचक चीजें मिल जाती हैं, जिन्हें मैं छूकर पहचान लेती हूँ

मैं भोज-पत्र के पेड की चिकनी छाल और चीड की खुदरी छाल को स्पर्श से पहचान लेती हूँ। वसंत के दौरान मैं टहनियों में नयी कलियाँ खोजती हूँ मुझे फूलों की पंखुडियों की मखमली सतह छूने और उनकी घुमावदार बनावट महसूस करने में अपार आनंद मिलता है।

इस दौरान मुझे प्रकृति के जादू का कुछ अहसास होता है। कभी, जब मैं खुशानसीब होती हूँ तो टहनी पर हाथ रखते ही किसी चिड़िया के मधुर स्वर कानों में गूँजने लगते हैं। अपनी अँगुलियों के बीच झरने के पानी को बहते हुए महसूस कर मैं आनंदित हो उठती हूँ। मुझे चीड की फैली पत्तियाँ या घास का मैदान किसी भी महँगे कालीन से अधिक प्रिय है। बदलते हुए मौसम का समाँ मेरे जीवन में एक नया रंग और खुशियाँ भर जाता है।

कभी-कभी मेरा दिल इन सब चीजों को देखने के लिए मचल उठता है। अगर मुझे इन चीजों को सिर्फ छूने भर से इतनी खुशी मिलती है, तो उनकी सुंदरता देखकर तो मेरा मन मुग्ध ही हो जाएगा। परंतु जिन लोगों की आँखें हैं, वे सचमुच बहुत कम देखते हैं।



इस दुनिया के अलग-अलग सुंदर रंग उनकी संवेदना को नहीं छूते। मनुष्य अपनी क्षमताओं की कभी कदर नहीं करता। वह हमेशा उस चीज की आस लगाए रहता है जो उसके पास नहीं है।

यह कितने दुख की बात है कि दृष्टि के आशीर्वाद को लोग एक साधारण सी चीज समझते हैं, जबकि इस नियामत से जिंदगी को खुशियों के इंद्रधनुषी रंगों से हरा – भरा किया जा सकता है।

उत्तर लिखिए:

- 1 “जिन लोगों के पास आँखें हैं, वे सचमुच बहुत कम देखते हैं।” हेलन केलर को ऐसा क्यों लगता था?
- 2 हेलन केलर ने अपने मित्रों की किस प्रकार परीक्षा ली?
- 3 “प्रकृति का जादु” क्या है?
- 4 “कुछ खास तो नहीं” हेलन की मित्र ने यह जवाब किस मौके पर दिया और यह सुनकर हेलन को आश्चर्य क्यों हुआ?
- 5 हेलन केलर प्रकृति की किन चीजों को छूकर और सुनकर पहचान लेती थी?

खाली जगहों को भरे:-

1. कई चीजों को हेलन केलर छूकर _____ लेती थी।
2. हेलन केलर का विश्वास था कि जिन लोगों की _____ होती है, वे बहुत कम _____ हैं।
3. “दृष्टि के आशीर्वाद को लोग एक _____ चीज समझते हैं” – यह कितने दुख की बात है।
4. मनुष्य अपनी क्षमताओं की कभी _____ नहीं करता।
5. कभी-कभी हेलन-केलर का दिल सब चीजों को देखने के लिए _____ था।



सही या गलत बताइये:-

- 1 हम अपनी पाँचों इंद्रियों में से आँखों का इस्तेमाल सबसे ज़्यादा करते हैं।
- 2 हेलन केलर अपनी अँगुलियों के बीच झरने के पानी को बहते हुए महसूसकर वह दुख हो उठती थी।
- 3 बदलते हुए मौसम का समाँ हेलन केलर के जीवन में दुख ही दुख भर जाता था।
- 4 कई चीज़ों को सिर्फ़ छूने से हेलन केलर को बहुत खुशी मिलती थी।
- 5 हेलन को फूलों की पंखुड़ियों की मखमली सतह छूने और उनकी धुमावदार बनावट महसूस करने में अपार आनंद मिलता था।



दिव्या, अनिल की छोटी बहन है। यों तो वह शुरू से ही कमजोर है, लेकिन इधर कुछ दिनों से उसे हर समय थकान महसूस होती रहती है। मन किसी काम में नहीं लगता, भूख भी पहले से कम हो गई है। अस्पताल में उसे डॉक्टर ने देखा तो कहा, “लगता है, दिव्या के शरीर में रक्त की कमी हो गई है। जाँच कराकर देखते हैं।” यह कहकर उन्होंने दिव्या को रक्त की जाँच के लिए पास के एक कमरे में भेज दिया। वहाँ अनिल को अपनी ही जान-पहचान की डॉक्टर दीदी दिखाई दी।

डॉक्टर दीदी ने कहा, “कहो अनिल, कैसे आना हुआ?” अनिल ने बताया कि डॉक्टर ने दिव्या को खून की जाँच के लिए आपके पास भेजा है। इतना सुनते ही डॉक्टर दीदी ने दिव्या की उँगली से रक्त की कुछ बूँदे एक छोटी सी शीशी में डाल दीं और स्लाइड पर लगा दीं। फिर अनिल से बोलीं, “अनिल, तुम कल अस्पताल से रिपोर्ट ले जाना।”

अगले दिन अस्पताल पहुँचकर अनिल ने डॉक्टर दीदी के कमरे के दरवाजे पर दस्तक दी। भीतर से आवाज आई, “आ जाओ।” अनिल ने कमरे में प्रवेश किया तो पाया, डॉक्टर दीदी सक्ष्मदर्शी द्वारा एक स्लाइड की जाँच कर रही थीं। दीदी के इशारे से वह पास रखी एक कुर्सी पर बैठ गया। स्लाइड की जाँच पूरी होने पर डॉक्टर दीदी ने साबुन से हाथ धोए और तौलिए से पोंछती हुई बोलीं, “अनिल, दिव्या को एनीमिया है। चिंता की बात नहीं, कुछ दिन दवा लेगी तो ठीक हो जाएगी।”

अनिल के मन में जिज्ञासा हुई, वह बोला, “दीदी, एक सवाल पूछूँ?”

“हाँ, हाँ, क्यों नहीं,” डॉक्टर दीदी ने कहा।

“एनीमिया से आपका क्या मतलब है दीदी?” उसने पूछा।

यह जानने के लिए तुम्हें रक्त के बारे में जानना होगा, “डॉक्टर दीदी ने कहा। फिर बोलीं, “अनिल, देखने में रक्त लाल द्रव के समान दिखता है, किंतु इसे सूक्ष्मदर्शी द्वारा देखें तो यह भानुमती के पिटारे से कम नहीं। मोटेतौर पर इसके दो भाग होते हैं। एक



भाग वह जो तरल है, जिसे हम प्लाज्मा कहते हैं। दूसरा, वह जिसमें छोटे-बड़े कई तरह के कण होते हैं कुछ लाल, कुछ सफेद और कुछ ऐसे जिनका कोई रंग नहीं जिन्हें बिंबाणु प्लेटलैट कण कहते हैं। ये कण प्लाज्मा में तैरते रहते हैं।” इतना कहकर डाक्टर दीदी ने सूक्ष्मदर्शी के नीचे एक स्लाइड लगाई, उसे फोकस किया और बोली, “देखो अनिल, सूक्ष्मदर्शी द्वारा जो कण तुम्हें दिखाई दे रहे हैं, यं हैं लाल रक्त-कण।”



स्लाइड देख, मानो आश्चर्य से उछल पड़ा था अनिल! रक्त की एक बूँद में इतने सारे कण। इसकी तो वह कल्पना भी नहीं कर सकता था। वह बोला, “इन्हें देखकर तो ऐसा लग रहा है, माना बहुत सी छोटी-छोटी बालूशाही रख दी गई हो।”

“हाँ”, दीदी बोलीं, “लाल कण बनावट में बालूशाही की तरह ही होते हैं। गोल और दोनों तरफ अवतल, यानी बीच में दबे हुए। रक्त की एक बूँद में इनकी संख्या लाखों में होती है। यदि हम एक मिलीलिटर रक्त लें तो उसमें हमें चालीस से पचपन लाख कण मिलेंगे। इनके कारण ही हमें रक्त लाल रंग का नजर आता है। ये कण शरीर के लिए दिन-रात काम करते हैं। साँस लेने पर साफ हवा से जो ऑक्सीजन तुम प्राप्त करते हो उसे शरीर के हर हिस्से में पहुँचाने का काम इन कणों का ही है। इनका जीवनकाल लगभग चार महीने होता है। चार महीने के होते होते ये नष्ट हो जाते हैं, लेकिन एक साथ नहीं, धीरे-धीरे। कुछ आज, कुछ कल, कुछ उससे अगले दिन।”

“तब तो कुछ ही महीनों में ये खत्म हो जाते होंगे”, अनिल ने कहा। यह सुनकर डॉक्टर दीदी मुसकरा उठी, बोलीं, “नहीं, ऐसा नहीं होता। शरीर में हर समय नए कण बनते रहते हैं, जो नष्ट कणों का स्थान ले लेते हैं। हड्डियों के बीच के भाग मज्जा में ऐसे बहुत से कारखाने होते हैं, जो रक्त कणों के निर्माण-कार्य में लगे रहते हैं। इनके लिए इन कारखानों को प्रोटीन, लौहतत्व और विटामिन रूपी कच्चे माल की जरूरत होती है। यह पौष्टिक आहार लेते हो? हरी सब्जी फल, दूध, अंडा और गोشت में ये तत्व उपयुक्त मात्रा में होते हैं यदि कोई व्यक्ति उचित आहार ग्रहण नहीं करता तो इन कारखानों को आवश्यकतानुसार कच्चा माल नहीं मिल पाता। नतीजा यह होता है कि



रक्त-कण बन नहीं पाते, रक्त में इनकी कमी हो जाती है। लाल कणों की इसी कमी को एनीमिया कहते हैं।”

“तो क्या संतुलित आहार लेने मात्र से हम एनीमिया से बचे रह सकते हैं?” अनिल ने सवाल किया। दीदी बोलीं, “हाँ, यह कहना काफी हद तक सही होगा। यों तो एनीमिया बहुत से कारणों से हो सकता है, किंतु हमारे देश में इसका सबसे बड़ा कारण पौष्टिक आहार की कमी है। इसके अलावा इस रोग का एक और बड़ा कारण है पेट में कीड़ों का हो जाना। ये कीड़े प्रायः दूषित जल और खाद्य पदार्थों द्वारा हमारे शरीर में प्रवेश करते हैं। अतः इनसे बचने के लिए यह आवश्यक है कि हम पूरी सफाई से बनाए गए खाद्य पदार्थ ही ग्रहण करें भोजन करने से पदार्थ अच्छी तरह से हाथ धो लें और साफ पानी ही पिएँ। और हाँ अनिल एक किस्म के कीड़े भी हैं, जिनके अंडे जमीन की ऊपरी सतह में पाए जाते हैं। इन अंडों से उत्पन्न हुए लार्वे त्वचा के रास्ते शरीर में प्रवेश कर आँखों में अपना घर बना लेते हैं। इनसे बचने का सहज उपाय है कि शौच के लिए हम शौचालय का ही प्रयोग करें और इधर उधर नंगे पैर न घूमें।”

“दीदी यह तो बहुत ही महत्वपूर्ण बात बताई आपने,” अनिल बोला। वह पलभर सोच में डूबा रहा। फिर बोला, “आपने बताया था कि रक्त में सफेद कण और बिंबाणु प्लेटलैट कण भी होते हैं, शरीर में उनका क्या काम है?” दीदी बोलीं, “सफेद कण में वास्तव में हमारे शरीर के वीर सिपाही हैं। जब रोगाणु शरीर पर धावा बोलने की कोशिश करते हैं, तो सफेद कण उनसे डटकर मुकाबला करते हैं और जहाँ तक संभव हो पाता है, रोगाणुओं को भीतर घर नहीं करने देते। बस, संक्षेप में यों मान लो कि वे बहुत से रोगों से हमारी रक्षा करते हैं।

“और बिंबाणुओं का काम है, चोट लगने पर रक्त जमाव किया में मदद करना। रक्त के तरल भाग प्लाज्मा में एक विशेष किस्म की प्रोटीन होती है जो रक्तवाहिका की कटी-फटी दीवार में मकड़ी के जाले के समान एक जाला बुन देती है। बिंबाणु इस जाले से चिपक जाते हैं और इस तरह दीवार में आई दरार भर जाती है, जिससे रक्त बाहर निकलना बंद हो जाता है।”

अनिल बोला, “ दीदी, लेकिन घाव गहरा हो तो खून बहता ही चला जाता है।”

“हाँ, ऐसे समय में उस व्यक्ति को जल्दी से डॉक्टर के पास ले जाना चाहिए। जरूरत समझने पर ऐसी स्थिति से निपटने के लिए कुछ टाँके भी लगाने पड़ सकते हैं, किंतु डॉक्टर के पास पहुँचने तक के समय में चोट के स्थान पर कसकर एक साफ कपड़ा बाँध देना चाहिए। दबाव पड़ने से रक्त का बहना कम हो जाता है, जो उस व्यक्ति के



लिए काफी लाभप्रद सिद्ध हो सकता है। किंतु अगर बहुत अधिक रक्त बह जाए तो, उसे रक्त चढ़ाने की जरूरत भी पड़ सकती है” दीदी ने समझाते हुए कहा।

अनिल ने कहा, “क्या ऐसे समय में किसी भी व्यक्ति का खून काम आ सकता है?” दीदी बोलीं, “अनिल हर किसी का रक्त एक सा नहीं होता। कुछ विशेष गुणों के आधार पर रक्त को चार मुख्य वर्गों में बाँट दिया गया है। जरूरतमंद व्यक्ति के रक्त समूह की जाँच करने के बाद उसे उसी रक्त समूह का रक्त चढ़ाया जाता है।

“लेकिन जरूरत के समय यदि उस रक्त-समूह का कोई व्यक्ति मिले ही नहीं, तब?” अनिल ने पूछा।

“ऐसी आपातस्थिति के लिए ही ब्लड-बैंक बनाए गए हैं। प्रायः हर बड़े अस्पताल में इस तरह के बैंक होते हैं, जहाँ सभी प्रकार के रक्त-समूहों का रक्त तैयार रखा जाता है। किंतु इन ब्लड – बैंकों में रक्त भंडार सुरक्षित रहे, इसके लिए यह आवश्यक है कि हम समय-समय पर रक्तदान करते रहें”, दीदी ने कहा।

“क्या मैं भी रक्तदान कर सकता हूँ?” अनिल ने पूछा।

“नहीं, अभी तुम छोटे हो। अठारह वर्ष से अधिक उम्र के स्वस्थ व्यक्ति ही रक्तदान कर सकते हैं। एक समय में उनसे लगभग 300 मिलीलीटर रक्त ही लिया जाता है। प्रायः यह समझा जाता है कि रक्तदान करने से कमजोरी हो जाएँगी, किंतु यह विचार बिल्कुल निराधार है। हमारा शरीर इतना रक्त तो कुछ ही दिनों में बना लेता है। वैसे भी शरीर में लगभग पाँच लीटर खून होता है। इसमें से यदि कुछ रक्त किसी जरूरतमंद व्यक्ति के लिए जीवन-दान बन जाए तो इससे बड़ी बात क्या होगी?” दीदी समझाते हुए बोलीं।

“फिर तो बड़ा होने पर मैं नियमित रूप से रक्तदान किया करूँगा” अनिल ने कहा।

“शाबाश, अनिल।” डॉक्टर दीदी ने अनिल की पीठ ठोकते हुए कहा।

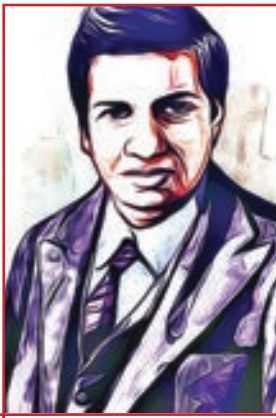


प्रश्न - अभ्यास

- 1 रक्त के बहाव को रोकने के लिए क्या करना चाहिए?
- 2 खून को “भानुमती का पिटारा” क्यों कहा जाता है?
- 3 एनीमिया से बचने के लिए हमें क्या-क्या खाना चाहिए?
- 4 पेट में कीड़े क्यों हो जाते हैं? इनसे कैसे बचा जा सकता है?
- 5 रक्त के सफेद कणों को “वीर सिपाही” क्यों कहा गया है?
- 6 ब्लड बैंक में रक्तदान से क्या लाभ है?
- 7 साँस लेने पर शुद्ध वायु से जो ऑक्सीजन प्राप्त होती है, उसे शरीर के हर हिस्से में कौन पहुँचाता है— सफेद, कण, लाल, कण, साँस, नली, फेफड़े

पाठ से आगे

- 1 रक्त में हीमोग्लोबिन के लिए किस खनिज की आवश्यकता पड़ती है — जस्ता शीशा लोहा प्लैटिनम
- 2 बिंबाणु प्लेटलैट कण की कमी किस बीमारी में पाई जाती है — टाइफायड मलेरिया डेंगू फाइलेरिया



प्रतिभा कहाँ जन्म लेगी, कोई नहीं जानता। जन्मजात प्रतिभा का धनी, गरीब के घर भी जन्म ले सकता है। अभावों के बीच भी अपनी प्रतिभा का विकास कर सकता है और अल्पायु में ही विश्व प्रसिद्ध हो सकता है। महान गणितज्ञ रामानुजन ऐसे ही व्यक्ति थे।

बहुत कम लोग जानते हैं कि सौ साल पहले हमारे देश में एक ऐसा गणितज्ञ हो चुका है जिसकी प्रतिभा का लोहा संसार के बड़े-बड़े गणितज्ञ भी मानता हैं। अधिकांश लोग ऐसे भी जो यह विश्वास नहीं कर पाएँगे कि वह विश्व-विख्यात गणितज्ञ इंटरमीडियट का प्रथम वर्ष भी पास नहीं कर सका था, किंतु गणित के क्षेत्र में उसने अपनी प्रतिभा का डंका बजा दिया था। उसने केवल 32 वर्ष की आयु में ही वह कर दिखाया, जिस पर भारत सदा-सदा के लिए गर्व कर सकता है। आज भी विश्व के चोटी के गणितज्ञ उसके गणितीय सूत्रों के अध्ययन में लगे हुए हैं।

इस महान गणितज्ञ का नाम था श्रीनिवास रामानुजन। रामानुजन का जन्म 22 दिसंबर 1887 को तंजावर जिले ईरोड नामक गाँव में एक अत्यंत साधारण परिवार में हुआ। उनके पिता का नाम था के श्रीनिवास अय्यंगार और माता का नाम कोमला अम्माल। पिता श्रीनिवास कुंभकोणम में कपड़े की दूकान पर मुनीम का काम करते थे। वेतन इतना कम था कि घर का खर्च भी मूश्किल से चल पाता था। तब संतोषी वृत्ति के माता-पिता को क्या मालूम था कि उनका बेटा आगे चलकर विश्व का महान गणितज्ञ बनेगा और उनका, उनके प्रांत का और उनके देश का नाम रोशन करेगा।

रामानुजन में जन्मजात प्रतिभा थी। बचपन से ही उनका बुद्धि-स्तर बहुत उँचा था—साधारण स्तर से कहीं बहुत उँचा। अपनी असाधारण प्रतिभा का प्रथम परिचय उन्होंने दिया 1897 ई में जब वे प्राथमिक परीक्षा में जिला-स्तर में सर्वप्रथम आए। फलस्वरूप जब उन्होंने कुंभकोणम में हाईस्कूल में दाखिला लिया, तब उनकी आधी फीस माफ़ कर दी गई।



किसी भी परीक्षा में सर्वप्रथम स्थान पाना ही असाधारण प्रतिभा और बहुत ऊँचे बुद्धि — स्तर की कसौटी नहीं। कोई—न—कोई तो प्रथम आता ही है। परंतु, तीसरी कक्षा में ही जो विद्यार्थी बीजगणित के ऐसे जटिल प्रश्नों को हल कर दे जिन्हें इंटर के विद्यार्थी भी न कर पाते हों, उसे अपनी जन्मजात असाधारण प्रतिभा के प्रमाणपत्र की आवश्यकता नहीं। परंतु, चौथी कक्षा में ही जो किसी की सहायता बिना त्रिकोणमिति ट्रिग्नोमेटरी का अभ्यास कर ले तथा मूल सिद्धांतों को जाने बिना गणित की अनेक गुत्थियों को सुलझा सके, ऐसे प्रतिभाशाली विद्यार्थी की ख्याति को सूर्य के प्रकाश की तरह चारों ओर फैलना ही था।

1904 ई में रामानुजन ने मद्रास यूनिवर्सिटी से ससम्मान मैट्रिक की परीक्षा पास कर ली। गणित और अंग्रेजी में विशेष योग्यता प्राप्त करने के कारण उन्हें इंटर के प्रथम वर्ष में छात्रवृत्ति मिली। परंतु, रामानुजन पर तो गणित का भूत सवार था। वे दिन—रात गणित के अंकों में खोए रहते। गणित के सिवाय उन्हें कुछ सूझता ही न था। परिणामस्वरूप गणित में शत—प्रतिशत अंक लेकर भी वे परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो गए और उनकी छात्रवृत्ति बंद हो गई। यह असफलता भी उनके गणित—प्रेम की साक्षी है। बाद में उन्होंने मद्रास आकर घर पर ही तैयारी करके इंटर की परीक्षा दी। परिणाम वही हुआ — गणित में सौ में सौ अंक, शेष विषयों में अनुत्तीर्ण। उनकी स्कूली पढ़ाई का यहीं अंत हो गया।

इससे यह परिणाम निकालना रामानुजन के साथ अन्याय होगा कि वे शेष विषयों में कमजोर थे। ऐसी बात नहीं है, उनमें पास होना उनके लिए साधारण बात थी, लेकिन कभी आँख उठाकर उन विषयों की पुस्तकों को एक बार देखें तो। वे तो भूत की तरह गणित के पीछे पड़े हुए थे— रात—दिन अंकों और संख्याओं में ही खोए रहते थे। कोई आश्चर्य नहीं है कि अन्य विषयों की परीक्षा देते समय भी उनका मस्तिष्क किसी गणितीय समस्या में उलझा रहता हो।

1909 ई में उनका विवाह नौ वर्षीय जानकी अम्माल से कर दिया गया। तब कम उम्र में ही विवाह कर दिया जाता था। तुरंत विवाह के बाद, रामानुजन को एक जटिल ऑपरेशन कराना पड़ा। सौभाग्य से वे बच गए। बिस्तर पर पड़े—पड़े वे अपने नोट्स देखते रहते और गणित में डूबे रहते थे। शायद तब उन्हें मरने की भी फुरसत न थी।

गणित मस्तिष्क को तो भोजन दे सकता है, पेट को नहीं। लेकिन जिसका पेट मुट्ठी — भर चावल और थोड़ी—सी दाल—सब्जी से ही भर जाए, तो उसे पेट की चिंता अधिक नहीं रहती। फिर नौकरी के लिए न तो उनके पास कोई डिग्री थी, न पहुँच। वे कितने भी प्रतिभाशाली हों, आखिर थे तो मैट्रिक ही। नौकरी मिले, न मिले, उनके गणित के



अध्ययन—चिंतन में कोई बाधा नहीं पड़नी चाहिए, इसका उन्होंने सतत ध्यान रखा। घोर अभावों में भी वे अपने लक्ष्य से निरस्त नहीं हुए। वे उन लोगों में से न थे, जो अभावों के दबाव में आकर अपने लक्ष्य से भटक जाते हैं और परिस्थितियों के सामने घुटने टेककर हथियार डाल देते हैं। वे साक्षात् तपोनिष्ठ ऋषि थे।

सौभाग्य से उन्हीं दिनों उनकी भेंट “भारतीय गणित सोसायटी” के संस्थापक श्री रामा. स्वामी अय्यर से हुई है। उन्होंने रामानुजन की गणितीय टिप्पणियों को देखा तो वे समझ गये कि इस युवक में असाधारण प्रतिभा छिपी हुई है। अय्यर साहब ने रामानुजन को गणित के एक प्रसिद्ध अध्यापक शेषु अय्यर के पास भेज दिया। शेषु अय्यर ने उन्हें एक छोटी—सी नौकरी दिला दी और उनका परिचय नेल्लोर के कलेक्टर और रामचंद्र राव से कराया। रामचंद्र राव ने रामानुजन की प्रखर प्रतिभा को तुरंत पहचान लिया और उन्हें मद्रास पोर्ट ट्रस्ट में अच्छी—सी नौकरी दिलवा दी। वास्तव में रामानुजन की प्रतिभा को असमय मुरझाने से बचाने का श्रेय रामस्वामी अय्यर शेषु अय्यर और रामचंद्र राव — इन त्रिमूर्ति को है, अन्यथा वन में खिले पुष्प के समान रामानुजन के गुमनामी के अंधाकार में विलीन हो जाते।

भारतीय गणित सोसायटी एक पत्रिका निकालती थी। रामानुजन ने उस पत्रिका में गणित—संबंधी लेख लिखे और कुछ प्रश्न प्रकाशित कराए। इससे लोगों को उनकी प्र. तिभा का पता लगा। इतनी छोटी आयु में गणित का ऐसा ज्ञान! मद्रास विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने रामानुजन को 75 रूपए मासिक छात्रवृत्ति देकर अपनी प्रयोगशाला में गणित की समस्याओं पर अनुसंधान करने की अनुमति दे दी।

रामानुजन द्वारा लिखे गए कुछ लेखों पर लंदन की केंब्रिज यूनिवर्सिटी के प्रोफसर हार्डी की नज़र पड़ी तो वे बड़े प्रभावित हुए। रामानुजन ने उनको कुछ और समस्याएँ भेजीं और उनके विषय में सम्मति माँगी। पहले तो हार्डी ने उनपर कुछ ध्यान नहीं दिया, पर बाद में उन्हें ज्ञात हुआ कि रामानुजन कोई साधारण व्यक्ति नहीं है और उनकी टिप्पणियों पर सम्मति देना तो दरकिनार, उन्हें समझा भी खालाजी का घर नहीं है। उन्होंने निश्चय किया कि ऐसे प्रतिभावन व्यक्ति को तो इंग्लैंड बुलाना चाहिए।

सौभाग्य से 1911 ई में ट्रिनिटी कॉलेज के एक प्रोफेसर मद्रास आए और रामानुजन से मिले। उन्होंने रामानुजन की प्रखर प्रतिभा को पहचान लिया और विश्वविद्यालय के अधिकारियों से उन्हें लंदन भेजने की प्रार्थना की। यह भारत के किसी विश्वविद्यालय के लिए महान गौरव की बात थी। अधिकारियों ने रामानुजन को 250 पाँड प्रतिवर्ष छात्रवृत्ति देकर लंदन भेज दिया।



लंदन पहुँचने पर रामानुजन की मुलाकात प्रोफसर हार्डी से हुई। अपने सामने साँवले से कृशकाय युवक को खड़ा देखकर हार्डी महोदय चकित रह गए। इतनी प्रतिभा और इतनी सादगी। दोनों गुण अपनी चरम सीमा पर। गुणग्राहक हार्डी ने रामानुजन को तुरंत केंब्रिज विश्वविद्यालय के ट्रिनिटी कॉलेज में नियुक्त करा लिया। हार्डी ने रामानुजन के लिए 60 पौंड प्रतिवर्ष की छात्रवृत्ति का प्रबंध भी करा दिया। ट्रिनिटी कॉलेज से भी उन्हें 240 पौंड प्रतिवर्ष प्राप्त हुए। उनकी प्रतिभा का आदर करते हुए या राशि उन्हें मृत्यु-पर्यंत मिलती रही। केंब्रिज के स्वस्थ एवं सुखद वातावरण में रामानुजन की प्रतिभा खिल उठी। वहाँ प्राफसर हीर्डी और प्रोफसर लिटिन वुड के सहयोग से उन्होंने गणित के कई नए सिद्धांतों की खोज की। विश्व भर के विद्वानों ने उन्हें पढ़ा और सराहा। भारत में गणित का ऐसा प्रतिभाशाली विद्वान! पश्चिमवालों के लिए यह आश्चर्य की बात थी, क्योंकि वे भारत को गुलाम देश मानते थे।

रामानुजन केंब्रिज विश्वविद्यालय में तीन वर्ष रहे। उन्होंने अपनी विनम्रता, निराभिमानता, सादगी और उद्भट प्रतिभा से केंब्रिज के विद्वानों को मोह लिया। केंब्रिज में उन्हें उनके शोधपत्रों के आधार पर बी.ए.की डिग्री प्रदान की गई। हार्डी के प्रयत्नों से उन्हें रॉयल सोसायटी का सदस्य बनाया गया जो किसी भारतवासी के लिए गर्व की बात थी। यह सम्मान प्राप्त करने वाले वे दूसरे भारतीय थे। पहले थे जहाज़ निर्माता इंजीनियर अर्देशिर करसेट जी जिन्हें 1841 ई में यह सम्मान मिला था। सच तो यह है कि रामानुजन की प्रतिभा के लिए कोई भी सम्मान कम था।

रामानुजन का रहन-सहन बहुत सादा था। अहंकार उन्हें छू तक न गया था। वे विशुद्ध शाकाहारी थे। भोजन में उन्हें थोड़ा चावल, दाल-सब्जी और नींबू पानी मिल जाए, यही बहुत था। वे अपना भोजन स्वयं पकाते थे। इंग्लैंड के तड़क-भड़क से भरे वातावरण में उन्होंने अपने आचार-विचार को अक्षुण्ण रखा।

परंतु लंदन की जलवायु रामानुजन को रास न आई। वे बीमार पड़ गए। उन्हें तपेदिक रोग हो गया। पंद्रह महीने तक उन्हें अस्पताल में रहना पड़ा। बिस्तर पर पड़े-पड़े भी वे गणित की समस्याओं का हल खोजने का प्रयत्न करते रहे।

उनके शुभचिंतकों ने उन्हें स्वदेश लौटने की सलाह दी। 1919 ई में वे भारत लौटे। अपने अंतिम दिनों में वे मद्रास में रहे। रूग्णावस्था में उनकी पत्नी ने बड़ी सेवा की। किंतु उन्हें बचाया न जा सका। 26 अप्रैल 1920 को उनका निधन हो गया। महान प्रतिभा की एक मशाल असमय ही बुझ गई।



प्रोफसर हार्डी ने मद्रास विश्वविद्यालय को लिखा, “रामानुजन भारत के अमूल्य संपत्ति हैं और मुझे आशा है कि भारत उनका उचित सम्मान करेगा। मेरी राय में उनसे बड़ा गणितज्ञ भारत में और कोई नहीं हैं।” एक अन्य अवसर पर हार्डी ने रामानुज की योग्यता का मूल्यांकन करते हुए ये विचार व्यक्त किए, “कल्पना करो, हम गणितज्ञों की प्रतिभा का मूल्यांकन 0 से 100 अंकों में मुझे 25 अंक, लिटिल वुड को 50 अंक, हिल्बर्ट को 80 अंक और रामानुजन को पूरे 100 अंक मिलने चाहिए।” स्पष्ट है कि तब विश्व में उनके समान प्रतिभाशाली गणितज्ञ और कोई न था।

गणित का हमारे जीवन में बड़ा महत्व है। आज के वैज्ञानिक युग में इसका महत्व और भी बढ़ गया है। शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में, प्रत्येक विषय में – अर्थशास्त्र, व्यापारशास्त्र, विज्ञान, वास्तुविज्ञान, कला-कौशल, भूगोल आदि में गणित का व्यवहार आवश्यक हो गया है। कंप्यूटर तो नितांत गणितीय वस्तु है। रामानुजन के गणितीय सूत्र सूपर कंप्यूटर के लिए बड़े उपयोगी सिद्ध हुए हैं।

जहाँ तक भारत का प्रश्न है, रामानुजन को आर्यभट, ब्रह्मगुप्त और भास्कराचार्य जैसे महान गणितज्ञों की पंक्ति में स्थान मिलेगा। निस्संदेह वे बीसवीं शताब्दी के महान गणितज्ञ थे। भारत अपने इस सपूत पर सदा गर्व करता रहेगा।

प्रश्न – अभ्यास

1. रामानुजन को जन्मजात प्रतिभा का धनी क्यों कहा जाता है?
2. प्रतिभाशाली होते हुए भी रामानुजन इंटरमीडिएट परीक्षा में असफल क्यों हो गए?
3. रामानुजन को ‘तप-निरत ऋषि’ कहना कहाँ तक ठीक है?
4. रामानुजन की प्रतिभा को असमय मुरझाने से बचाने का श्रेय किन्हें जाता है? उन्होंने रामानुजन के लिए क्या किया?
5. प्रोफसर हार्डी कौन थे?
6. रामानुजन के रहन-सहन पर टिप्पणी लिखिए।
7. उनका असमय ही निधन का कारण क्या था?



भाषा अधिगम

1 'ज्ञ' जाननेवाला कोस प्रत्यय की भाँति जोड़कर अनेक शब्द बनाए जा सकते हैं। जैसे:

अज्ञ गणितज्ञ

विज्ञ विशेषज्ञ

अल्पज्ञ रसज्ञ

बहुज्ञ मर्मज्ञ

उपर्युक्त शब्दों से वाक्य बनाइए।

2 पाठ से अंग्रेज़ी मूल के आगत शब्द छाँटिए और उनके हिंदी पर्याय लिखिए।

लघु उत्तर दीजिए:

1. भारत के विश्वविख्यात गणितज्ञ कौन थे?
2. रामानुजन का जन्म कहाँ हुआ?
3. श्रीनिवासन रामानुजन के माता-पिता का नाम क्या है?
4. रामानुजन के पिताजी क्या काम करते थे?
5. रामानुजन ने अपनी असाधारण प्रतिभा का प्रथम परिचय कब दिया?
6. किन विषयों की विशेष योग्यता के लिए रामानुजन को छात्रवृत्ति मिली?
7. रामानुजन अनुत्तीर्ण क्यों हुए?
8. रामानुजन का विवाह कब हुआ? उनकी पत्नी का नाम क्या है?



भारत वर्ष में स्त्रियों का 'अबला' नाम प्रख्यात है। यह पता लगाने का कोई उपाय नहीं है कि कब से यह नीच उपाधि। स्त्री रत्नों को आर्यों के वंशधरों ने प्रदान की है। परन्तु इसमें संदेह नहीं कि जब से ऐसा हुआ है, तब से भारतवर्ष नाश की ओर जा रहा है।

बीसवीं शताब्दी के वातावरण में ऐसा मालूम हो रहा है कि शायद जगत के साथ-साथ देश से भी यह अपवाद दूर हो जाएगा। परन्तु यदि वस्तु-स्थिति का गहराई से अध्ययन किया जाए, तो मालूम होता है कि वास्तव अभी तक वैसी कोई बात नहीं है। स्वाधीनता था। उन्नति के नाम पर जो कुछ हो रहा है — वह वास्तव में कुछ आत्मप्रतारणा मात्र है। हमने स्त्रियों की वेशभूषा ऐसी बना रखी है कि यदि विपत्ति के समय उन्हें भागना पड़ जाए, तो वे अपने गहने-वस्त्रों में ही उलझकर गिर पड़े। उनका रहन-सहन और जीवन इतना निकृष्ट है कि देखकर दुख होता है।

पिछले जमाने में भारत में रानी दुर्गावती लक्ष्मीबाई— जैसी अनेक वीरांगनाएँ हो गयी हैं जिन्होंने अपने सम्माननीय लोहू से रण — क्षेत्र को सौभाग्य तिलक प्रदान किया हैं।

दिल्ली — पति पृथ्वीराज की कन्या बेला को महोबे के सामंत आल्हा ने अपने भतीजे के लिए माँगने का साहस किया। सम्राट की नया और तुच्छ शत्रु सामंत प्रस्ताव तिरस्कृत कर दिया गया।

आल्हा नियत काल में बरात लेकर आ धमका। प्रत्येक बराती लोहे के बरव्तर से सजा हुआ था। प्रत्येक की दृष्टि में प्रलय की आग थी। 18 वर्ष का दूल्हा ब्रह्मानंद चमकीले वस्त्रों से सज्जित था। उसके दाहिनी ओर प्रचंड योद्धा आलहा, बाई ओर अलेय शक्ति पुज ऊदल और आगे मृत्युंजय मलखान थे।

दिल्ली के फाटक पर छावनी पड़ गयी। रूपा नीई को बुलाकर कहा गया — “जाओ, समंधी से बरात की आगवानी करने को कह आओ।”



रूपा नाई उस बरात के उपर्युक्त नाई था, बरात के सामंतों में शायद ही कोई योद्ध



॥ उसकी बराबरी का होगा। रूपा उडा मय घोड़े के दरबार में घुस गया। पृथ्वीराज को यह धृष्टता सहन नहीं हुई। संदेश सुनकर तो वे जल उठे, संकेत के साथ योद्धा टूटे, दोनों हाथों से तलवार लेकर वेग भुगताने लगे।

चारों ओर मुंड थे। एक महासामंत का सिर काटकर रूपा यह कहते तीर की तरह लौटा कि नेग तो हो चुका, और दक्षिणा में यह ले चला, अब फेरों के लिए तैयार रहना।

बरात बल-पूर्वक नगर में घुसी। पद पद पर लोहा था, मगर लोहे से लोहा भिडा था। वीरों की अजेय बरात काई की तरह योद्धाओं को चीरती हुई महलों में जा घुसी।

महासामंत नंगी तलवारें ऊँची घर के मंडप बनाकर खड़े हो गये। कन्या हर ली गयी। पुरोहित मंत्र पढ़ने लगे, विवाह हो गया।

रक्त तो चारों तरफ चल ही रहा था। बहू की डोली लेकर बरात चल खड़ी हुई। नगर के फाटक पर ब्रह्मानंद की छाती में तीर लगा और वह मर गया।

बरात स्तब्ध थी। बेला ने सुना, वह डोली के बहुमूल्य सुनहले पर्दे को चीरकर बाहर आयी। उसने ललकार कर कहा – “इस बरात में कोई वीर है”? अनोखी ललकार थी। ऊदल आगे बढ़े। शोक से उनकी छाती भर रही थी। उन्होंने तलवार की नोक धरती पर गाड़कर कहा – “बेटी! क्या आज्ञा?”

“सती होना चाहती”। क्या उसका प्रबंध कर सकते हो?



“क्या प्रबंध करना होगा”

“सौ मन चंदन सूखा चाहिए।”

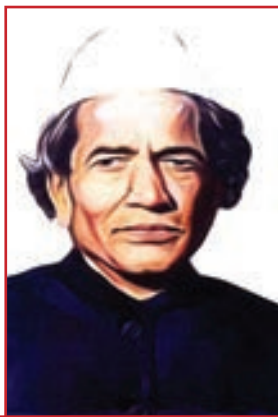
“कहाँ मिलेगा”?

“मेरे पिता की बारहदरी में चंदन के खंभे हैं। वे उखाड़ लाने होंगे।

“सती की जय”। ऊदल ने तलवार आकाश में घुमाई। बरात अंतिम वेग लेने नगर में घुसी। घमासान लड़ाई और भयानक लहू की नदी के बीच में से खंभे उखाड़े गये। बेला सती हुई।

उत्तर लिखिए:

- 1 बेला का व्याह किसकी रचना है?
- 2 लेखक बेला का व्याह द्वारा क्या कहना चाहते हैं?
- 3 भारतवर्ष का नारा लेखक के शब्दों में कब से हो रहा है?
- 4 लेखक स्त्रियों को “अबला” शब्द से क्यों दुःखी हैं?
- 5 लेखक स्त्रियों के किस दशा को देखकर नाराज हैं?
- 6 किन-किन वीरांगनाओं से रण-क्षेत्र को सौभाग्य प्रदान किया है?
- 7 पृथ्वीराज की कन्या का नाम क्या था?
- 8 बेला का रिश्ता किसके साथ जोड़ने की प्रार्थना की?
- 9 बारात लेकर कैसे आया?
- 10 पृथ्वीराज के गुस्से का कारण क्या था?
- 11 उबल ने बेला से क्या कहा?
- 12 बेला ने ऊदल से क्या कहा?
- 13 बेला क्यों सती हुई?
- 14 बेला का ब्याह कहानी का सार लिखिए।



उस दिन बड़े सबेरे जब श्याम की नींद खुली, तब उसने देखा, घर-भर में कुहुरम मचा हुआ है। उसकी काकी उमा एक कंबल नीचे से झ पर तक कपडा ओढे भूमि शयन कर रही है, और घर में सब लोग उसे घेर कर बड़े करुण स्वर में विलाप कर रहे हैं।

लोग जब उमा को श्मशान ले जाने के लिए उठाने लगे, तब श्याम ने बड़ा उपद्रव मचाया। लोगों के हाथों से छूटकर वह उमा के ऊपर जा गिरा और बोला — काकी तो सो रही है। उन्हें इस तरह उठाकर कहाँ लिये जा रहे हो? मैं न ले जाने

दूँगा।

लोगों ने बड़ी कठिनाई से उसे हटा पाये। काकी के अग्नि संस्कार में वह न जा सका। एक दासी बलपूर्वक उसे घर पर ही सँभाले रही।

यद्यपि बुद्धिमान गुरुजनों ने उसे विश्वास दिलाया कि उसकी काकी उसके माता के यहाँ गयी है, परन्तु असत्य के वातावरण में सत्य बहुत समय तक छिपा न रह सका। आसपास के अन्य अबोध बालकों के मुँह से ही वह प्रकट हो गया।

यह बात उससे छिपी न रह सकी कि काकी और कहीं नहीं, ऊपर राम के यहाँ गयी है। काकी के लिए कई दिन तक लगातार रोते-रोते उसका रोना तो धीरे-धीरे शांत हो गया, परन्तु शोक शांत न हो सका।

जिस तरह वर्षा के अनंतर एक ही दो दिन में पृथ्वी के ऊपर का पानी अगोचर हो जाता है, परन्तु बहुत भीतर तक उसकी आर्द्रता बहुत दिन तक बनी रहती है, उसी प्रकार वह शोक उसके अंतस्तल में जाकर बस गया। वह प्रायः अकेला बैठा शून्य मन से आकाश की ओर ताका करता।

एक दिन उसने ऊपर एक पतंग उड़ता देखा। न जाने क्या सोचकर उसका हृदय एक दम खिल उठा। विश्वेश्वर के पास जाकर बोला — “काका मुझे एक पतंग मंगा दो। अभी मंगा दो।”



पत्नी की मृत्यु के बाद से विश्वेश्वर बहुत अन्यमनस्क रहा करते थे। “अच्छा, मंगा दूँगा।” कहकर वे उदास भाव से बाहर चले गये।

श्याम पतंग के लिए बहुत उत्कंठित हो उठा वह अपनी इच्छा किसी तरह से न रोक सका। एक जगह खँटी पर विश्वेश्वर का कोट टँगा हुआ था। इधर-उधर देख कर उसे लेने उसके पास एक स्टूल सरकाकर रखा, और झ पर चढ़कर कोट की जेब टटोली। उसमें से एक चवन्नी का आविष्कार करके वह तुरन्त वहाँ से भाग गया।

सुखिया दासी का लडका भोला श्याम का समवयस्क साथी था। श्याम ने उसे चवन्नी देकर कहा – अपनी जीजी से चुपचाप एक डोर और पतंग मंगा दी। देखो, खूब अकेले में लाना, कोई जान न जाए।

पतंग आया। एक अंधेरे घर में डोर बाँधी जाने लगी। श्याम ने धीरे से कहा – भोला, किसीसे न कहो तो एक बात कहूँ।

भोला ने सिर हिलाकर कहा नहीं किसीसे न कहूँगा। श्याम ने रहस्य खोला कहा मैं यह पतंग ऊपर भेजूँगा। इसे पकड़कर काकी नीचे उतरेगी। मैं लिखना जानता नहीं, तो इसपर नाम लिख देता।

श्याम से भोला अधिक समझदार था। उसने कहा – बात तो बड़ी अच्छी सोची, परन्तु एक कठिनाई है – यह डोरी पतली है। इसे पकड़कर काकी तो उतर नहीं सकती। इसके टूटजाने का भय है। पतंग में मोटी रस्सी हो तो सब ठीक हो जाए।

श्याम गंभीर हो गया। मतलब – यह बात लाख रुपये की सुनायी गयी है, परन्तु कठिनाई यह थी कि मोटी रस्सी कैसे मंगायी जाए? पास में दाम है, नहीं और घर के जो आदमी उसकी काकी को बिना दया माया के जला आये हैं। वे उसे इस काम के लिए कुछ नहीं देंगे। उस दिन श्याम की चिन्ता के मारे बड़ी रात तक नींद नहीं आयी।

पहले दिन की ही तरकीब से दूसरे दिन उसने विश्वेश्वर के कोट से एक रुपया निकाला – ले जाकर भोला को दिया और बोला – देख, भोला, किसी को मालूम न होने पावे, अच्छी – अच्छी दसे रस्सियाँ मंगवा दे, एक ओछी पड़ेगी। जवाहर भैया से मैं एक कागज पर “काकी” लिखवा रखूँगा। नाम की चिट रहेगी तो पतंग ठीक उन्हीं के पास पहुँच जाएगा।

दो घंटे बाद प्रफुल्ल मन से श्याम और भोला अंधेरी कोठरी में बैठे पतंग में रस्सी बाँध रहे थे। अकस्मात् शुभ कार्य में विघ्न की तरह उग्र मूर्ति धारण किये हुए विश्वेश्वर वहाँ आ घुसे। भोला और श्याम को धमकाकर बोले – तुमने हमारे कोट से रुपया निकाला है?



भोला सकपकाकर एक ही डाँट में मुखबिर बन गया, बोला — श्यामू भैया ने रस्सी और पतंग मंगाने के लिए निकाला था।

विश्वेश्वर ने श्यामू को दो तमाचे जड़कर कहा चोरी सीखकर जेल जाएगा। अच्छा, आज तुझे अच्छी तरह समझाता हूँ — कहकर दो चार थप्पड़ और जड़कर पतंग फाड़ डाला। जब रस्सियों की ओर देखकर उन्होंने पूछा — यह किसने मंगायी?

भोला ने कहा इन्होंने मंगायी थी। कहते थे इससे पतंग तानकर काकी को भगवान के यहाँ से नीचा उतारेंगे।

विश्वेश्वर एक क्षण के लिए हतबुद्धि होकर खड़े रह गये।

उन्होंने फटा हुआ पतंग उठाकर देखा, उसपर एक कागज चिपका था, जिसपर लिखा हुआ था — “काकी”।

उत्तर लिखिए:

- 1 काकी कहानी का प्रमुख पात्र कौन-कौन हैं?
- 2 काकी के चारित्रिक विशेषता पर पाँच वाक्य लिखिए।
- 3 काकी की मृत्यु पर घर का वातावरण कैसा था?
- 4 श्यामू को गुरुजनों ने क्या समाधान दिया?
- 5 श्यामू की मनस्थिति के बारे में लिखिए।
- 6 श्यामू ने काका से क्या माँगा? क्यों?
- 7 श्यामू पतंग खरीदने के लिए क्या किया?
- 8 श्यामू ने भोला से क्या कहा?
- 9 श्यामू पतंग क्यों खरीदना चाहता था?
- 10 भोला ने श्यामू से क्या कहा?
- 11 लाख रुपये की चुराई गई बात क्या है?
- 12 श्यामू की चिन्ता का कारण क्या था?
- 13 श्यामू विश्वेश्वर के कोट से एक रुपया क्यों चुराया और उससे क्या किया?
- 14 विश्वेश्वर ने श्यामू को क्यों मारे और उससे क्या पूछा?
- 15 विश्वेश्वर का गुस्सा किसपर शांत हुआ?
- 16 बच्चों के काकी के प्रति स्नेह देखकर विश्वेश्वर ने क्या सोचा?





क्रिया के जिस रूप से उसके होने या करने का समय पाया जाता है, उसे काल कहते हैं। काल के तीन भेद हैं:—

- 1 वर्तमान काल : मैं आता हूँ।
- 2 भूतकाल : मैं आया।
- 3 भविष्यत काल : मैं आऊँगा।

1 वर्तमान काल : क्रिया के जिस रूप से वर्तमान समय का बोध हो, उसे वर्तमान काल कहते हैं। वर्तमान काल के पाँच भेद हैं। वे हैं

- 1 सामान्य वर्तमान काल
- 2 संदिग्ध वर्तमान काल
- 3 अपूर्ण वर्तमान काल
- 4 सम्भाव्य वर्तमान काल
- 5 हेतुहेतुमद वर्तमानकाल

सामान्य वर्तमान काल: क्रिया के जिस रूप से, क्रिया का आरंभ वक्ता का बोलने के समय ही सामान्य वर्तमानकाल है।

जैसे: मैं पढ़ता हूँ।

तुम पढ़ते हो।	आप पढ़ते हैं।	वे पढ़ते हैं।	वह पढ़ता है।
वह पढ़ती है।	वे पढ़ती है।	लड़की पढ़ती है।	लड़के पढ़ते हैं।

संदिग्ध वर्तमान काल:

क्रिया के जिस रूप से वर्तमान काल में क्रिया के होने में संदेह पाया जाए, उसे संदिग्ध वर्तमान काल कहते हैं।

मैं जाता हूँगा।	वह जाता होगा।	वे आते होंगे।	लड़की जाती होगी।
-----------------	---------------	---------------	------------------



अपूर्ण वर्तमानकाल:

क्रिया के जिस रूप से पता चले कि क्रिया का व्यापार अभी जारी है, उसे अपूर्ण वर्तमान काल कहते हैं।

जैसे: बच्चा सो रहा है। बच्चे सो रहे हैं।
मैं सो रहा हूँ। तुम सो रहे हो।

संभाव्य वर्तमान काल:

क्रिया के जिस रूप से क्रिया होने की सम्भावना पाई जाए उसे सम्भाव्य वर्तमान काल कहते हैं।

मैं जाकर सोऊँ। राजा आता होगा। गीता जाती होगी।
लड़के पढ़ते होंगे।

हेतु हेतु मद वर्तमानकाल:

वर्तमान काल में जब क्रिया दूसरी क्रिया से निर्भर हो, उसे हेतु-हेतु मद वर्तमानकाल कहते हैं।

जैसे:

यदि वह पढ़ता हो, तो उसे मत बुलाओ। यदि गीता नाचना चाहती हो, तो उसे नाचने दो।

भूतकाल

क्रिया के जिस रूप से कार्य के बीते हुए समय में होने या किये जाने का बोध हो, उसे भूतकाल कहते हैं। भूतकाल के सात भेद हैं:

सामान्य भूत	आसन्न भूत	पूर्ण भूत
अपूर्ण भूत	संदिग्ध भूत	सम्भाव्य भूत हेतु-हेतुमदभूत

सामान्य भूतकाल : क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय का ज्ञात हो, उसे सामान्य भूतकाल कहते हैं।

रवि आया मैं सोया उसने खाया

आसन्न भूतकाल: क्रिया के जिस रूप से क्रिया को समाप्त हुए समय नहीं हुआ हो, उसे आसन्न भूतकाल कहते हैं।





लड़का गया है। मैंने खाया है। वह आया है।

पूर्ण भूत :- क्रिया के जिस रूप से क्रिया को पूर्ण हुए बहुत समय बीत चुका है, उसे पूर्ण भूतकाल कहते हैं।

मैंने देखा था। गीता गयी थी। उसने लिखा था।

अपूर्ण भूत : क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया का व्यापार भूतकाल में हो रहा था, उसे अपूर्ण भूतकाल कहते हैं।

गीता जा रही थी। वह जा रहा था। मैं खा रहा था।

संदिग्ध भूत :- क्रिया के जिस रूप से क्रिया के भूतकाल में होने में संदेह हो, उसे संदिग्ध भूतकाल कहते हैं।

राज गया होगा। लड़के आये होंगे। वे गये होंगे।

सामान्य भूत: क्रिया के जिस रूप से क्रिया के होने की सम्भावना हो, उसे सम्भाव्य भूतकाल कहते हैं।

शायद सूरज गया हो। सम्भवतः लड़कियाँ गयी हों शायद वे आये हों।

हेतु-हेतु मद भूतकाल:- भूतकाल में जब एक क्रिया दूसरी क्रिया पर निर्भर हो, उसे हेतु-हेतुमद भूतकाल कहते हैं।

यदि तुम वहाँ आये होते तो मुझे भी पाते। यदि तुम परीक्षा लिखे होते तो ज़रूर पास हो जाते।

भविष्यत् काल

क्रिया के जिस रूप से कार्य के भविष्य में लिए जाने या होने का भाव प्रकट हो, अर्थात् उससे आनेवाले समय का बोध हो, उसे भविष्यत् काल कहते हैं।

जैसे : लड़की खाना खाएगी।

राकेश पढ़ेगा।

भविष्यत् काल के तीन भेद हैं

1. सामान्य भविष्यत् काल
2. संभाव्य भविष्यत् काल
3. हेतु हेतुमद भूत काल



सामान्य भविष्यत् काल : जिस क्रिया से कार्य का भविष्यत् काल में होना पाया जाए, उसे सामान्य भविष्यत् काल कहते हैं।

मैं जाऊँगा। वह आम खाएगा। तुम क्या करोगे?

संभाव्य भविष्यत्काल – जिस क्रिया से भविष्यत् काल में कार्य होने की संभावना पाई जाए, उसे संभाव्य भविष्यत् काल कहते हैं।

जैसे लड़के जाएँ मैं जाऊँ

हेतुहेतुमद् भविष्यत् काल: इस काल में जब एक क्रिया दूसरे क्रिया से निर्भर हो, उसे हेतुहेतुमद् भविष्यत् काल कहते हैं।

अंग्रेज़ी में अनुवाद कीजिए:-

- 1 बच्चे खिलौनों से खेलते हैं।
- 2 यदि वह पढ़ता हो, तो उसे मत बुलाओ।
- 3 उसने एक पाठ लिखा।
- 4 शायद वे आये हों।
- 5 यदि तुम वहाँ आये होते तो मुझे भी पाते।
- 6 यदि राजू वहाँ आया होता तो मुझे भी देख पाता।
- 7 मैं जाऊँ तो यह आए।
- 8 तुम मेहनत करते तो पास हो जाते।
- 9 महेश बाज़ार गया होगा।
- 10 मैं आज गुरुजी से मिलकर आऊँगा।



निर्देशानुसार वाक्य बदलिए:-

- 1 लड़के खेल रहे हैं। (भूतकाल में लिखिए।)
- 2 बच्चे कहानी सुनना पसंद करते हैं। (भविष्यत् काल में बदलिए।)
- 3 पिताजी खत लिखते हैं। (अपूर्ण वर्तमानकाल में लिखिए।)
- 4 मैं पाठ पढ़ता हूँ। (मैं के स्थान पर तुम का प्रयोग कीजिए।)
- 5 मैं आऊँगा। (भूतकाल में लिखिए।)
- 6 राधा तैरना नहीं जानती। (भविष्यत्काल में बदलिए।)
- 7 राजेश अमेरिका जाना चाहता है। ('चाहिए' का प्रयोग कीजिए।)
- 8 लड़के समाचार पत्र भेजते होंगे। (लड़के के बदले लड़कियों का प्रयोग कीजिए।)
- 9 विद्यार्थी पाठ सीख रहे हैं। (वर्तमान काल में बदलिए।)
- 10 रेल गाड़ी अभी आ पहुँची। (भूतकाल में लिखिए।)
- 11 वह कामकर सकता है। ('सक' के बदले 'चुक' का प्रयोग कीजिए।)
- 12 पुलिस ने चोर को पकड़ा। (वर्तमानकाल में बदलिए।)
- 13 मुझे भूख लगती है। (अपूर्ण वर्तमानकाल में बदलिए।)
- 14 राम पाठ लिखता है। (राम के स्थान पर सीता का प्रयोग कीजिए।)
- 15 मज़दूर अधिक वेतन माँगते हैं। (भविष्यत्काल में बदलिए।)

लिंग

शब्द के जिस रूप द्वारा उसके पुरुषत्व या स्त्रीत्व का बोध हो, उसे लिंग कहते हैं। लिंग के दो भेद हैं।

1. पुल्लिंग
2. स्त्रीलिंग

पुल्लिंग: पुरुष जाति का बोध करानेवाले शब्दों को पुल्लिंग कहा जाता है।

जैसे: बालक, घोड़ा, भारत आदि।

क्रम	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
1	देव	देवी
2	पुत्र	पुत्री
3	दास	दासी
4	हिरण	हिरणी
5	मोर	मोरनी
6	सुंदर	सुंदरी
7	लड़का	लड़की
8	बच्चा	बच्ची
9	मामा	मामी
10	चाचा	चाची
11	नाना	नानी
12	दादा	दादी
13	कुत्ता	कुतिया
14	चूहा	चुहिया
15	चिड़ा	चिड़िया
16	बूढ़ा	बुढ़िया
17	बेटा	बिटिया
18	लोटा	लुटिया
19	स्वामी	स्वामिनी
20	तपस्वी	तपस्विनी
21	हाथी	हथिनी
22	योगी	योगिनी
23	यशस्वी	यशस्विनी
24	नायक	नायिका
25	अध्यापक	अध्यापिका
26	गायक	गायिका
27	बालक	बालिका



28	सेवक	सेविका
29	शिक्षक	शिक्षिका
30	धनवान	धनवती
31	गुणवान	गुणवती
32	बुद्धिमान	बुद्धिमती
33	माली	मालिन
34	जुलाहा	जुलाहिन
35	तेली	तेलिन
36	धोबी	धोबिन
37	नाई	नाइन
38	ग्वाला	ग्वालिन
39	सर्प	सर्पिणी
40	राग	रागिनी
41	विद्यार्थी	विद्यार्थिनी
42	ठाकुर	ठाकुराइन
43	पंडित	पंडिताइन
44	मुल्ला	मुल्लाइन
45	ऊँट	ऊँटनी

वचन

शब्द के जिस रूप से व्यक्ति या पदार्थ के एक या अनेक होने का बोध हो उसे वचन कहते हैं। हिन्दी में दो ही वचन हैं

1 एक वचन 2 बहुवचन

- 1 **एक वचन:** शब्द के जिस रूप से वस्तु, व्यक्ति आदि के एकत्व का बोध हो, उसे एक वचन कहते हैं।
- 2 **बहुवचन:** शब्द के जिस रूप से वस्तु—व्यक्ति आदि की एकाधिक संख्या का बोध हो, उसे बहुवचन कहते हैं।



क्रम	एक वचन	बहुवचन
1	पुस्तक	पुस्तकें
2	रात	रातें
3	आँख	आँखें
4	मेज	मेजें
5	सड़क	सड़कें
6	जड	जड़ें
7	तस्वीर	तस्वीरें
8	घोड़ा	घोड़े
9	बेटा	बेटे
10	लोट	लोट
11	कुत्ता	कुत्ते
12	किला	किले
13	कपड़ा	कपड़े
14	कला	कलाएँ
15	महिला	महिलाएँ
16	पत्रिका	पत्रिकाएँ
17	समस्या	समस्याएँ
18	बेटी	बेटियाँ
19	सखी	सखियाँ
20	चूड़ी	चूड़ियाँ
21	पत्नी	पत्नियाँ
22	कहानी	कहानियाँ
23	गाली	गालियाँ
24	डाली	डालियाँ
25	रानी	रानियाँ
26	गुड़िया	गुड़ियाँ
27	कुतिया	कुतियाँ
28	वस्तु	वस्तुएँ
29	धातु	धातुएँ
30	बहू	बहुएँ
31	वधू	वधूएँ
32	ऋतु	ऋतुएँ



33	पतोह	पतोहुँ
34	कवि	कविगण
35	गुरु	गुरुजन
36	मुनि	मुनिगण
37	खग	खगवृंद
38	सज्जन	सज्जनवृंद
39	राजा	राजालोग
40	निर्धन	निर्धनवर्ग
41	नेता	नेतागण
42	किताब	किताबें
43	बात	बातें
44	माला	मालें
45	धेनु	धेनुँ

‘ने’ विधि का प्रयोग

अगर किसी वाक्य की क्रिया सकर्मक और भूत काल में हो तो, उस वाक्य के कर्ता के साथ “ने” कारक जोड़ा जाता है।

1 मैंने देखा। 2 रवि ने खाया

कर्ता के साथ “ने” आते समय क्रिया का लिंग और वचन कर्म के अनुसार ही होता है, बल्कि कर्ता के अनुसार नहीं।

1 रवि ने इड़ली खायी। 2 ललिता ने आम खाया।

जब वाक्य में कर्म लुप्त हो या कर्म के साथ “को” कारक विभक्ति हो तो, क्रिया हमेशा पुल्लिंग एक वचन में ही रहती है।

1 मैंने हाथी को देखा। 2 ललिता ने घोड़े को देखा।

अपूर्ण भूत और हेतुहेतुमद्भूतकाल में “ने” का प्रयोग नहीं होता।

1 मैं खाता था। 2 अगर वह मॉगा तो मैं ज़रूर देता।

चाह, दे, ले, डाल आदि के साथ भूतकाल में “ने” का प्रयोग होता है।

1 मैंने किताबें दे दी 2 मैंने चढ़ना चाहा।
3 आपने फल ले लिया। 4 शेखर ने सामान नीचे डाला।

लेना, बोलना, भूलना, सक, चुक, लग, जना आदि में “ने” का प्रयोग नहीं होता।

1 हम किताबें लाये। 2 वह रोटी नहीं खा सका
3 वह बोला। 4 वह किताब पढ़ चुका।
5 वह पुत्र जनी। 6 सीता भूली।



अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए:

- 1 अगर आप जल्दी उठते तो, सूरज के दर्शन करते।
- 2 अगर आप मुझसे कहते तो, मैं आपकी मदद करता।
- 3 मुझे आप से कल मिलना है।
- 4 मुझे ही सारा काम करना पड़ता है।
- 5 चलती हुई गाड़ी में चढ़ना खतरनाक है।
- 6 बहते पानी में स्नान करना अच्छा है।
- 7 आप उसे नहीं पहचानते होंगे।
- 8 हम चलते चलते थक गये।
- 9 हँसते हँसते हमारे पेट में दर्द होने लगा।
- 10 हमको आराम करने दो।
- 11 परीक्षा के समय विद्यार्थी जल्दी उठने लगते हैं।
- 12 उसने अपने सारे पाठ लिख दिये।
- 13 उनको वहाँ कुछ दिखाई नहीं पड़ता।
- 14 पागल आदमी ने कपड़े फाड़ डाले।
- 15 हिन्दी सीखने के बाद हम दिल्ली जाएँगे।
- 16 मेरे जाने के पहले तुम जाकर क्या करोगे?
- 17 विद्वान का सब जगह आदर होता है।
- 18 आप जो चाहे कर सकते हैं।
- 19 मैं आप से एक बात पूछूँ?
- 20 भगवान आप पर कृपा करें।
- 21 यह नदी किसी पहाड़ से निकली होगी।
- 22 रेल गाड़ी अब तक रवाना हो चुकी होगी।
- 23 कावेरी उतनी लंबी नहीं है, जितनी गंगा।
- 24 माँ बच्चे को जितना प्यार करती है, उतना किसीको नहीं करती।
- 25 सुनी हुई बात का विश्वास मत करो।
- 26 बनी बनायी चीज़ें अकसर निकम्मी होती हैं।



1. गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों का उत्तर दीजिए:-

दिन में मैं चादर लपेटे सोया था। दादी माँ आई। शादी कहकर आयी थी। उसी झाग. वाले जल में। पतले-दुबले स्नेह-सने शरीर पर सफेद बालों के सिरों पर सद्यः टपके हुए जल की शीतलता। आते ही उन्होंने सर, पेट छुए। आँचल की गाँठ खोले किसी अदृश्य शक्तिशाली के चबूतरे की मिट्टी मुँह में डाली, माथे पर लगाई।

दिन-रात चारपाई के पास बैठी रहती, कभी पंखा झूलती, कभी जलते हुए हाथ-पैर कपड़े से सहलाती, सर पर दालचीनी का लेप करतीं और बीसों बार छू-छूकर ज्वर का अनुमान करती। हॉडी में पानी आया कि नहीं? उसे पीपल की छाया से छौंका कि नहीं? खिचड़ी में मूँग की दाल एक दम मिल तो गई है? कोई बीमार के घर में सीधे बाहर से आकर तो नहीं चला गया, आदि लाखों प्रश्न पूछ-पूछकर घरवालों को परेशान कर देती।

प्रश्न:

1. दादी माँ कहाँ से आई थी?
2. दादी के बालों का रंग कैसा था?
3. दादी ने सर,पेट क्यों छुए?
4. दादी बुखार ज्वर को उतारने के लिए क्या-क्या उपाय की?
5. दादी घरवाले को किस प्रकार का प्रश्न पूछकर परेशान करती थी?

2. गद्यांश पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों का उत्तर दीजिए:-अ

हड्डियों के बीच के भाग मज्जा में ऐसे बहुत से कारखाने होते हैं जो रक्त कणों के निर्माण कार्य में लगे रहते हैं। इनके लिए इन कारखानों को प्रोटीन, लौहत्व और वि. टामिन रूपी कच्चे माल की ज़रूरत होती है। यह पौष्टिक आहार लेते हो। हरी सब्जी, फल, दूध, अंडा और गोشت में ये तत्व उपयुक्त मात्र में होते हैं। यदि कोई व्यक्ति उचित आहार ग्रहण नहीं करता तो इन कारखानों को आवश्यकतानुसार कच्चा माल नहीं मिल पाता।



प्रायः यह समझा जाता है कि रक्तदान करने से कमजोरी हो जाएगी, किंतु यह विचार बिलकुल निराधार है। हमारा शरीर इतना रक्त तो कुछ ही दिनों में बना लेता है। वैसे भी शरीर में लगभग पाँच लीटर खून होता है। इसमें से यदि कुछ रक्त किसी ज़रूरत मंद व्यक्ति के लिए जीवन दान बन जाए तो इससे बड़ी बात क्या होगी? इस प्रकार दीदी समझाते हुए बोली।

प्रश्न:

- 1 रक्त कणों की रचना कहाँ होती है?
- 2 रक्त निर्माण के लिए किस कच्चे माल की आवश्यकता होती है?
- 3 रक्त के लिए कच्चा माल न मिलने पर क्या होता है?
- 4 रक्तदान भरने के बाद रक्त की कमी किस प्रकार पूरी हो जाती है?
- 5 इस गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।

3. गद्यांश पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों का उत्तर दीजिए:—

श्री एम विश्वेश्वरयया का जन्म 15 सितम्बर 1861 को मैसूर राज्य के मुद्दनहल्ली नामक गाँव में हुआ। इनके पिता श्रीनिवास शास्त्री एवं माता वेंकटम्मा थी। इनके पिता वैद्य थे। बालक विश्वेश्वरयया पढ़ने-लिखने में बड़े तेज़ थे। सत्रह वर्ष की उम्र में उन्होंने बेंगलूर सेंट्रल कालेज में बी ए पास किया। इसके बाद उनकी इंजिनियरिंग की पढ़ाई पूना में हुई। इस परीक्षा में वे सर्वप्रथम निकले।

प्रश्न:

- 1 विश्वेश्वरयया का जन्म कब और कहाँ हुआ?
- 2 विश्वेश्वरयया के माँ बाप कौन थे?
- 3 विश्वेश्वरयया ने इंजिनियरिंग की पढ़ाई कहाँ की?
- 4 इस गद्यांश का उचित शीर्षक दें।

4. गद्यांश पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों का उत्तर दीजिए:—

एक गाँव में एक बूढ़ा रहता था। वह बड़ा मूर्ख था। लोग उसको दादा कहते थे। एक दिन उसे गरी खानेकी इच्छा हुई। इसलिए वह नारियल खरीदने के लिए बाज़ार गया।

दादा को बाज़ार में नारियल का दाम ज़्यादा लगा। इसलिए वह सस्ते दाम में नारियल



खरीदने के लिए बहुत दूर तक गया। अंत में एक बाग तक गया। बागवान ने कहा कि पेड़ पर चढ़कर नारियल तोड़ने से दाम देने की ज़रूरत नहीं होगी। यह सुनकर दादा बहुत खुश हुआ और मुफ्त में पाने के लिए पेड़ पर चढ़ा। तब ज़ोर से हवा चली। हाथ-पैर लड़खड़ाने के कारण दादा पेड़ से गिरकर मर गया। अपनी मूर्खता की वजह दादा को जान गँवानी पड़ी।

प्रश्न:

- 1 बूढ़ा नारियल खरीदने के लिए कहाँ गया?
- 2 बूढ़े ने बाज़ार में नारियल क्यों नहीं खरीदा?
- 3 बूढ़ा नारियल के पेड़ पर क्यों चढ़ा?
- 4 गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।

5. गद्यांश पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों का उत्तर दीजिए:-

एक व्यापारी था। उसके पास एक सुन्दर तोता था। वह तोता सिर्फ 'इसमें क्या शक है' वाक्य बोलता था। एक दिन वह व्यापारी तोते को बेचने के लिए बाज़ार ले गया। एक अमीर आदमी वहाँ आया। उसने तोते का दाम पूछा। व्यापारी ने जवाब दिया – "इस तोते का दाम पाँच सौ रुपये हैं। आपको शक है तो तोते से पूछ लीजिए।"

अमीर ने तोते से पूछा, "क्या तुम्हारा दाम पाँच सौ रुपये हैं?" तोता तुरन्त बोला – "इसमें क्या शक है?" अमीर बहुत खुश हुआ और तोते को खरीदकर घर ले गया।

घर जाने के बाद अमीर को मालूम हुआ कि तोता सब सवालों का एक ही जवाब देता है। अमीर को अपनी बेवकूफी पर गुस्सा आया और बोला, "इस तोते को पाँच सौ रुपये देकर मैंने खरीदा। मैं कितना मूर्ख हूँ। तुरन्त तोता बोल, "इसमें क्या शक है।" तोते की बात सुनकर अमीर को हँसी आयी और उसे उड़ा दिया।

प्रश्न:

- 1 तोता क्या बोलता था?
- 2 व्यापारी ने अमीर आदमी से क्या कहा?
- 3 अमीर ने तोते को क्यों उड़ा दिया?
- 4 गद्यांश का उचित शीर्षक दें।



6. गद्यांश पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों का उत्तर दीजिए:-

मुरुगन एक गरीब किसान था। उसके पास एक टोकरा था। वह उसी टोकरे में चावल ले जाकर बेचता था। उसी गाँव में वीरप्पन नामक एक आदमी रहता था। वह साग-भाजी का व्यापार करता था। वह बड़ा उद्दण्ड आदमी था।

एक दिन मुरुगन का टोकरा कहीं खो गया। कई दिनों से कोई पता नहीं चला। एक दिन मुरुगन ने वीरप्पन को उस टोकरे में साग-भाजी ले जाते हुए देखा। मुरुगन ने अपने टोकरे के बारे में वीरप्पन से पूछा। लेकिन वीरप्पन ने नहीं माना।

मुरुगन ने लाचार होकर सारी बातें राजा को सुनायी। राजा ने वीरप्पन को बुलाकर पूछताछ की। वीरप्पन की बातों से राजा को मालूम हुआ कि वह झूठ बोल रहा है। मुरुगन के पक्ष में कोई गवाह भी नहीं था। इसलिए राजा ने एक चतुराई की। उसने टोकरे को लाठी से पिटवाया, तो लाठी खाकर टोकरे से चावल के दाने गिर पड़े। अब राजा ने कहा – “देखो, टोकरे ने गवाही दी है। इसमें चावल बेचा जा रहा था। इसलिए यह टोकरा तुम्हारा नहीं, मुरुगन का है।

प्रश्न:

- 1 मुरुगन कौन था और वह क्या करता था?
- 2 वीरप्पन कैसा आदमी था और क्या कर रहा था?
- 3 राजा ने टोकरे से कैसे गवाही दिलायी?
- 4 गद्यांश का उचित शीर्षक दें।

7. गद्यांश को पढ़कर नीचे दिये गये प्रश्नों का उत्तर दीजिए:

अंतराष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्वकोष, विश्वबैंक, विश्व व्यापार संगठन और साम्राज्यवादी देश, अपने प्रभाव और प्रचार तंत्र के द्वारा अल्प विकसित देशों का निरंतर प्रयास कर रहे हैं कि भूमंडलीकरण द्वारा आर्थिक संवृद्धि की दर में तेजी आती है और फिर उसका लाभ सभी को मिलता है।

सोवियत संघ और पूर्वी यूरोप के देशों में समाजवादी व्यवस्था के विघटन और भारत जैसे देशों में पूंजीवादी अर्थप्रणाली के अंतर्गत आर्थिक आयोजना की असफलता से उत्पन्न स्थिति में उदारीकरण और निजीकरण के साथ साम्राज्यवादियों द्वारा तीसरी दुनिया के देशों के लिए भूमंडलीकरण का नुस्खा पत्र तैयार किया गया है। उन्हें पूर्वी एशिया के



देशों के उदाहरण जहाँ विदेश व्यापार प्रेरित आर्थिक संवृद्धि हुई है, यह समझने की लगातार कोशिश हो रही है कि अर्थव्यवस्था को विकसित देशों के लिए पूरी तरह खोलना ही उनके हित में है।

प्रश्न:

- 1 साम्राज्यवादी देश अपने प्रभाव और प्रचार के द्वारा किस विषय का प्रयास कर रहे हैं?
- 2 अल्पविकसित देशों पर, विश्व व्यापार संगठन देशों का कैसा प्रभाव पड़ा है?
- 3 भूमंडलीकरण का नुस्खा क्यों प्रस्तुत किया गया है?
- 4 किस बात की समझने की लगातार कोशिश हो रही है?
- 5 अर्थव्यवस्था का हित किसमें है

8. गद्यांश को पढ़कर नीचे दिये गये प्रश्नों का उत्तर दीजिए:

भ्रष्टाचार से सबसे अधिक घायल आस्तिकता हो जाती है, जबकि धर्म की ओजस्विता से भ्रष्टाचार को भय लगना चाहिए। देखा यह जाता है कि अधिकांश भ्रष्टाचारी झूठे दर्जे के आस्तिक हैं। वे पूजा-पाठ का नियम-धर्म बहुत से निभाते हैं। कहते तो यह हैं कि सब कुछ भगवान को अर्पित हैं, सब कुछ भगवान के आगे हैं, भगवान ब कुछ देखता है, लेकिन उनका भगवान गलत तौल नहीं देखता, जली नोट नहीं देखता, फर्जी दस्तावेज नहीं देखता, दवा की मिलावट नहीं देखता, रिश्वत और हॉ-हुजुरी नहीं देखता। उनका भगवान अगर अंधा नहीं है तो उन्हीं के रंग में रंग जरूर गया है। लोग कहेंगे कि जाँच करनेवाला सरकारी अधिकारी यह क्यों नहीं देखा। उसके हाथ में सौ रुपये का पत्ता पहुँचाता है। हथेली गर्म होती है तो आँख बंद हो जाती है।

प्रश्न:

- 1 भ्रष्टाचार का घायल आस्तिकता क्यों कहा गया है?
- 2 अधिकांश भ्रष्टाचारी कौन है?
- 3 भ्रष्टाचारी क्या-क्या नहीं देखता?
- 4 सरकारी अधिकारी क्यों अंधा है?
- 5 भ्रष्टाचारी की आँखें कब बंद हो जाती है?



9. गद्यांश पढ़कर दिये गये प्रश्नों का उत्तर दीजिए:

महात्मा जोतीराव फुले सन् 1827 से 1890 तक उन्नीसवीं सदी में सामाजिक क्रांति के अग्रदूत थे। उन्होंने समाज को धार्मिक, सामाजिक व आर्थिक दासता से मुक्त कराने और समानता तथा स्वतंत्रता के आधार पर नए समाज की रचना की संकल्पना की थी। जिस समाज में जाति-पाँति का कलंक न हो, धर्म के आडम्बरों का पटाटोप न हो, स्त्री-पुरुष के समान अधिकार हो, विशेषकर नारा, दलितों और पिछड़ों का अंधकारमय जीवन से निकालकर शिक्षा के प्रकाश द्वारा मानवीय जीवन जीने, स्वतंत्र वातावरण में सांस लेने, आत्मविश्वास के साथ अपनी आर्थिक व सामाजिक स्थिति सुधारने के लिए उन्हें प्रेरित किया।

प्रश्न:

- 1 महात्मा जोतीराव फुले की संकल्पना क्या थी?
- 2 जोतीरावजी ने किस प्रकार के समाज की स्थापना करनी चाही?
- 3 जोतीरावजी का क्या प्रेरणा था?
- 4 उन्नीसवीं सदी में जोतीरावजी को लोग कैसे जानते थे?
- 5 किस प्रकार के समाज की कल्पना उन्होंने की थी?



22

पत्र लेखन

शिकायती पत्र

1 कमला बुक हाउस, सेकन्दराबाद की ओर से रजिस्ट्री पार्सल के न मिलने की शि. कायत करते हुए डाक अधिकारी को शिकायती पत्र लिखिए।

उत्तर

व्यवस्थापक

कमला बुक हाउस

पुस्तक बिक्रेता तथा प्रकाशक

12, पि वि रेडिड रोड,
सेकन्दराबाद — 4
13 अक्टूबर 2018.

सेवा में

पोस्ट मास्टर महोदय,

प्रधान डाकघर

सेकन्दराबाद — 1

माननीय महोदय,

पिछले महीने 6 सितंबर 2018 को हमने एक पार्सल रजिस्ट्री द्वारा आपके डाक-घर से रसीद संख्या 176 के द्वारा श्री दीनदयाल पटवारी, गॉंधी बज़ार, गुजरात को भेजा था। उनके पत्र से पता चलता है कि अब तक उन्हें वह पार्सल नहीं मिला है।

उस पार्सल में ज़रूरी दस्तावेज और पत्र थे। इस असम्भाविक विलंब से हम परेशान हैं। आपसे विनम्र पार्थना है कि कृपया इस मामले में आवश्यक कार्रवाई करके हमें सूचित करने का कष्ट करें। इस कृपा के लिए हम सदैव आपके आभारी रहेंगे। सधन्यवाद

आपका विश्वास पात्र

व्यवस्थापक

कमला बुक हाउस



अभ्यास

- 1 चौधरी एण्ड सन्स, नई दिल्ली की ओर से उत्तर प्रदेश के प्रभागीय प्रबंधक के नाम माल के लुप्त होने की शिकायत करते हुए एक पत्र लिखिए।
- 2 एस चन्द अण्ड कंपनी की ओर से संजय बुक स्टोर के व्यवस्थापक को खराब समवेष्टन के कारण पुस्तकों के फट जाने की शिकायत करते हुए पत्र लिखिए।
- 3 श्रीराम एंटरप्राइसेस की ओर से सर्वश्री विश्वनाथ एलेक्ट्रिकल्स को घटिया माल भेजने की शिकायत करते हुए एक पत्र लिखिए।
- 4 किताब घर, नई दिल्ली की ओर से लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद को गलत माल भेजने की शिकायत करते हुए एक पत्र लिखिए।
- 5 धनादेश पाने में हुई देरी की शिकायत करते हुए स्थानीय डाकपाल को एक पत्र लिखिए।

कुछ पाठ्य पुस्तकें मँगवाते हुए पत्र लिखिए।

उत्तर:

प्रेषक

स्थान

क रवि

तारीख

42, राम गली

रामनगर

चेन्नई 11

सेवा में

प्रकाशक

एस चंद एण्ड को

चेन्नई 2

प्रिय महोदय,

निवेदन है कि निम्नलिखित किताबें डाक द्वारा भेजने की कृपा करें।

पुस्तकों का विवरण

1 हिन्दी रचना – 2 प्रतियाँ

2 हिन्दी निबंध – 2 प्रतियाँ

धन्यवाद

आपका
क ख ग

अभ्यास

- 1 खेल सामग्री माँगते हुए स्पोर्ट्स कंपनी के नाम एक पत्र लिखिए।
- 2 प्रयोगशाला के लिए माल माँगते हुए किसी कंपनी के नाम एक पत्र लिखिए।

व्यक्तिगत पत्र

नाटक में भाग लेने का विवरण देते हुए अपने पिता के नाम पर एक पत्र लिखिए।

176 कोकिला भवन,
जोधपुर

दिनांक 5 10 2018

पूज्य पिताजी,

सादर प्रणाम।

मैं कुशल हूँ। आप कैसे हैं? आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि हमारी पाठशाला के विद्यार्थी “वीर दुर्गादास” नामक नाटक खेल रहे हैं, दुर्गादास का पात्र मैं कर रहा हूँ। नाटक बड़ा जोशीला है। आप भी नाटक देखने आइए।

मेरी मासिक परीक्षा का परिणाम आया है। मैं अपनी अंक-पत्रिका भेज रहा हूँ।

पूजणीय माताजी को प्रणाम और भाई को प्यार।

आपका आज्ञाकारी पुत्र

पानेवाले का पता

सेवा में

श्रीमान राममोहन

42 करोलबाग

नई दिल्ली



अभ्यास

- 1 अपनी छोटी बहन को एक पत्र लिखें जिसमें अपने स्कूल में खेले गये नाटक का वर्णन हो।
- 2 अपने एक मित्र को पत्र लिखें जिसमें उसे कुछ परीक्षा संबंधी पुस्तकें भेजने का अनुरोध किया गया है
- 3 अपने छोटे भाई को एक पत्र लिखें जिसमें उसे पढ़ाई के साथ साथ खेलकूद में भी भाग लेने की सलाह दीजिए।



23

निबंध भाग

विद्यार्थी और अनुशासन

अनुशासन शब्द “अनु” तथा “शासन” शब्दों के मेल से बना है, जिसका अर्थ है नियम, कानून, तथा गुरुजनों के आज्ञा का पालन करना। जिस समय जहाँ पर हो, वहाँ के विधान और व्यवहारानुसार आचरण करना ही अनुशासन है।

जहाँ अन्य क्षेत्रों में अनुशासन तात्कालिक प्रभाव परिणाम देने वाला होता है, वहीं विद्यार्थी जीवन के भावी जीवन का आधार है।

अनुशासनहीन विद्यार्थी न अच्छा विद्यार्थी बन सकता है, न अच्छा व्यक्ति और न ही आदर्श नागरिक।

आज विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता अपनी चरमसीमा पर है। उच्च अलंकृता, दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली, राजनैतिक दलों का प्रभाव आदि इसके प्रमुख कारण हैं। शिक्षा का व्यापार बनना व शिक्षा प्रणाली का दोषपूर्ण होना, पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति का प्रभाव तथा बेरोजगारी भी।

देश में अनुशासन की पुनः स्थापना के लिए आवश्यक है — शिक्षा नीति में परिवर्तन, नैतिक और चारित्रिक शिक्षा पर विशेष बल। शिक्षा को बेरोजगार उनमुखी बनाना होगा। देश कल्याण एवं उन्नति के लिए यह परम आवश्यक है।

2 विद्यार्थी जीवन

विद्या पानेवाला विद्यार्थी है। विद्या विनय का पाठ सिखती है। विद्या सदाचारी बनाती है। विद्या उन्नति का लक्षण है। विद्या भावी जीवन का निर्माण करता है। विद्यार्थी जीवन आदर्शमयी है। विद्यार्थी जीवन में समय का सदुपयोग करके सीखना चाहिए। सादा जीवन, उच्च विचार ही विद्यार्थी जीवन है। अपना कर्तव्य और अधिकार समझकर चलना चाहिए। परोपकारी बनना चाहिए। विद्यार्थी जीवन में आपसी प्रेम और सद्भाव बढ़ाना चाहिए। स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन रहता है। विद्यार्थी को अपने स्वास्थ्य



पर ध्यान देना चाहिए। सात्विक आहार खाना चाहिए। अपने चरित्रको पवित्र रखना चाहिए। विद्यार्थी अपने जीवन को महत्वपूर्ण बनाए रखना चाहिए।

अ3 व्यायाम का महत्व

मानसिक विकास के लिए अध्ययन की जितनी आवश्यकता है, उतनी ही शारीरिक विकास के लिए व्यायाम की। “धर्म, अर्थ, काम, मोक्षाणाम् आरोग्यं मूलम् उत्सम्” अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का आधार स्वस्थ शरीर है और स्वास्थ्य निर्भर करता है, उचित खान-पान और व्यायाम पर।

व्यायाम के अभाव में पौष्टिक भोजन भी विष बन जाता है। व्यायाम ही स्वास्थ्य की रक्षा का सुलभ व निःशुल्क साधन है। पढ़ना और स्वाध्याय मानसिक व्यायाम है।

प्रातःकाल दौड़ना, योग की क्रियायें और खेलना शारीरिक व्यायाम के रूप हैं। व्यायाम से शरीर पुष्ट होता है, आयु बढ़ती है, बुढ़ापा शीघ्र नहीं आता, हड्डियों में दृढ़ता आती है। व्यायाम शुद्ध वायु में खुले स्थान पर करना चाहिए। थोड़ी देर विश्राम के पश्चात् स्नान करना चाहिए। व्यायाम की मात्रा धीरे-धीरे ही बढ़ानी चाहिए। इस प्रकार जीवन की सफलता ही व व्यायाम पर निर्भर है, अतः प्रत्येक व्यक्ति को व्यायाम अवश्य करना चाहिए।

4 खेलों का महत्व

आज हम जिसे समग्र व्यक्तित्व कहते हैं, उसका विकास खेलों के बिना संभव नहीं। खेलों का प्रत्यक्ष लाभ तो स्वास्थ्य लाभ तथा शारीरिक सामर्थ्य को बढ़ाना है। इसीलिए प्रकृति भी मनुष्यों एवं जीव जंतुओं के शिशुओं को बचपन में तरह तरह के खेल सिखाती हैं।

स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का विकास होता है। शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम् – जीवन धर्म का पालन स्वस्थ शरीर द्वारा ही संभव है, यह संपत्ति खेल के माध्यम से ही प्राप्त होती है।

खेलों के अनेक प्रकार हैं, जैसे घरेलु खेल, प्रशिक्षण पाकर खेले जानेवाले खेल, भीतर खेले जानेवाले खेल जैसे शतरंज, स्नूकर, टेबुल टेनिस आदि। खुले मैदान में बड़ी बड़ी टीमों बनाकर खेले जानेवाले खेल जैसे फुटबाल, क्रिकेट, कबड्डी आदि।



आज खेल विद्यार्थी स्तर से प्रारंभ होकर अंतराष्ट्रीय स्तर तक खेले जाते हैं। खेल आजीविका का साधन भी बन रहे हैं। खेल, हमें खेल की भावना से खेलना सिखाते हैं। हार-जीत को समान रूप से ग्रहण करने की भावना, सहयोग, साथीपन, उदारता, आदि अनुशासन सिखाते हैं। खेल शरीर को स्वस्थ बनाने के साथ साथ मानवीय भावनाओं का विकास भी करते हैं।

5 अहिंसा परमो धर्मः

अहिंसा ही परम धर्म है। अहिंसा का अर्थ है – हिंसा न करना। हिंसा का इतिहास उतना ही पुराना है, जितना मानव सभ्यता का। मनुष्य ने नगर बसाए, साम्राज्य स्थापित किए। मनुष्य का उद्देश्य केवल अपना बचाव करना था। परन्तु अब उसका उद्देश्य अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करना था।

हिंसा करना, परस्पर लड़ना, मरना-मारना आदि तो पशुता के चिह्न हैं। हिंसा विनाश का ही दूसरा नाम है, जबकि अहिंसा ठीक इसके विपरीत है। अहिंसा ही एक ऐसा मार्ग है जिसपर चलकर मनुष्य विकास, उन्नति और शान्ति के पथ पर अग्रसर हो सकता है। यद्यपि अहिंसा का मार्ग हिंसा की तुलना में बहुत कठिन है, क्योंकि अहिंसा का अनुसरण करने के लिए त्याग, सहनशीलता, सच्चाई, बलिदान और मानवतावादी सिद्धान्तों को अपनाना आवश्यक है। अहिंसा को कायरता समझना पूर्णतः अनुचित है। अहिंसा के मार्ग पर वही चल सकता है, जिसकी आत्मा बलवान हो। आधुनिक विश्व को अहिंसा का पाठ पढ़ानेवाले अहिंसा के पुजारी महात्मा गान्धी ने भी कहा है – “अहिंसा शक्तिशाली लोगों का हथियार है।”

सम्राट अशोक, महात्मा बुद्ध और महात्मा गान्धी का जीवन इसका साक्षी है। प्रेम और अहिंसा द्वारा विश्व के कठोर-से-कठोर हृदय को भी कोमल बनाया जा सकता है। आज पूरा विश्व अहिंसा के पुजारी महात्मा गान्धी के द्वारा दी गई सीख पर चलकर ही संसार में शान्ति स्थापित करने में सफल होगी। आज के युग में अहिंसा का महत्व पहले से भी अधिक है। हम एक ऐसी सृष्टि का निर्माण कर पाएँगे, जहाँ सभी सुख से रहेंगे और अपने जीवन लक्ष्यों को पूरा कर पाएँगे।



MODEL QUESTION PAPER

CLASS: VII STD

MAX. TIME: 2.30 Hrs.

SUB: HINDI

MAX. MARKS : 90 marks

- I किन्ही छ का अर्थ लिखाए (6x1/2=3)
- | | | | | |
|-------------|------------|-----------|---------|------------|
| 1 अलंकृत | 2 अंतर्धान | 3 कुक्कुट | 4 जीवित | 5 प्रदीप्त |
| 6 फरार होना | 7 वत्स | 8 कायर | 9 पाहन | 10 दुग |
- II सही या गलत बताइए । (3x1=3)
11. स्पुरोहितजी की दवा प्रेमचंदजी के शरीर में जादु का असर किया।
 12. पंडित नेहरूजी को बचपन से गंगा और यमुना के प्रति लगाव बढ़ता रहा ।
 13. इस संसार में आत्मा को लेकर सभी लोग बड़े हैं, कोई भी असहाय नहीं है।
- III कंठस्थ पद्य ज्यों का त्यों लिखाए : (2x2 1/2=5)
14. कबीरदासजी के किन्ही दो दोहे लिखाए
- अथवा
- तुलसीदास के किन्ही दो दोहे लिखाए
- IV प्रश्नों के विस्तृत उत्तर दीजिए (3x3=9)
- 15 कबीरदासजी ईश्वर से क्या प्रार्थना करते हैं?
 - 16 कवि सोहनलालजी बापू को किन किन रूपों में देखते हैं?
 - 17 पंतजी सुख दुख के मधुर मिलन को किस रूपों में देखना चाहते हैं?
- V हिन्दी में अर्थ लिखिकर अलग अलग वाक्यों में प्रयोग कीजिए (6x1/2=3)
- | | | | | |
|----------|----------|--------------------|-----------|---------------|
| 18 संदेश | 19 यातना | 20 वलय | 21 निर्मम | 22 माथा |
| 23 उजाला | 24 चित्त | 25 प्रफुल्लित होना | 26 एकाएक | 27 निखरी रहना |
- VI खाली जगह भरिए (5x1=5)
- 28 चिडिया माधवदास की बातों से बहुत गई।
 - 29 लालमणि बेचारे को ते माँ की व्याधि और आसन्न का.....नहीं था ।
 - 30 शानदार राजमहल में सिद्धार्थ का मन रहा।
 - 31 गाँधीजी के जीवन में छोटे और बड़े काम का कोई नहीं था।
- VII किन्ही चार प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए (4x3=12)
32. वकील ने गाँधीजी से क्या अपेक्षा की थी?
 33. अलाउद्दीन ने हमीर को क्या संदेश भिजवाया?
 34. हेलन केलर ने अपने मित्रों की किस प्रकार परशाली?
 35. एनीमिया से बचने के लिए हमें क्या क्या खाना चाहिए ?
 36. किन किन विषयों की विशेष योग्यता के लिए रामानुजन को पात्रवृत्ति मिली?
 37. श्याम की चिन्ता का कारण क्या था?





VIII किन्हीं पाँच प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए (5x2=10)

38. माधवदास ने चिडिया का क्या बनने के लिए कहा?
39. चिडिया का वर्णन कीजिए?
40. गाँधीजी अपने मुलाकातियों से क्या करवाते थे?
41. गाँधीजी के विचारों के बारे में पाँच वाक्य लिखिए ?
42. माहम को अन्य सजाओं ने शरण क्यों नहीं दी?
43. बेला ने उदल से क्या कहा?
44. श्याजू को गुरुजनों से क्या समाधान दिया?
45. विरवेश्वर का गुस्सा किसपर शांत हुआ?

IX 46. गद्यांश पढ़कर दिये गये प्रश्नों का उत्तर लिखिए: (5x1=5)

दिन में मैं चादर लपेटे सोया था। दादी माँ भाई। शादी कहकर आयी थी। उसी झागवाले जल में। पतले दुबले स्नेह सने शरीर पर सफेद बालों के सिरों पर सद्य टपके हुए जल की शीतलता। जाते ही उन्होंने सर, पेट छुए। आँचल की गाँव खोले किसी अदृश्य शक्तिशाली के चबूतरे की मिट्टी मुँड में डाली, माथे पर लगाई। श्वन रात चारपाई के पास बैठी रहती, कभी पंखरा झूलती, कभीही जलते हुए हाथ पैर कपड़े से सहलाती, सर पर दालचीनी का लेप करती और बीसों बार छू छूकर ज्वर का अनुमान करती 'होंडी में पानी आया कि नहीं? खिचड़ी में मूँग की दाल एक दम मिल तो गई है? कोई बीमार के घर में सीधे से आकर तो नहीं चला गया, आदि लाखों प्रश्न पूछ पूछकर घरवालों को पेटीशान कर देती ।

- 1 दादी माँ कहाँ से आई थी?
- 2 दादी के बालों का रंग कैसा था?
- 3 दादी ने सर पेट क्यों छुए?
- 4 दादी बुँखार ज्वर को उतारने के लिए क्या क्या उपाय की ?
- 5 दादी घटवाले को किस प्रकार का प्रश्न पूछकर पेटीशान करती थी? ।

X (A) लिंग बदलिए (5x1/2=2 1/2)

- 47 मोर 48 चूहा 49 पंडित 50 नायक 51 गुणवान

(B) वचन बदलिए: (5x1/2=2 1/2)

- 52 माला 53 धातु 54 तस्वीर 55 गुरु 56 कहानी

XI प्रश्नों के उत्तर दीजिए (5x2=10)

57. वर्तमान काल किसे कहते हैं?
58. भूतकाल कितने प्रकार के हैं?
59. भविष्यत काल किसे कहते हैं?
60. अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए
 - 1 तुम मेहनत करते ता पास हो जाओगे ।
 - 2 मैं आज गंरूजी से मिलकर आउँगा।
61. राजेश अमेरिका जाना चाहता है।

XII कोई एक पत्र लिखिए (1x10=10)

- 62 खेल सामग्री माँगते हुए स्पोर्ट्स कंपनी के नाम एक पत्र लिखिए। या
- 63 अपनी छोटी बहन को एक पत्र लिखें जिसमें अपने स्कूल में खेले गये नाटक का वर्णन हो।

XIII किसी एक विषय पर तीन सौ शब्दों का निबंध लिखिए: (1x10=10)

- 64 समय का सदुपयोग 65 अहिंसा परमो धर्म 66 विद्यार्थी जीवन





Hindi – Std VII

List of Authors and Reviewers

Chairperson

Dr. M. Seshan,
Professor (Retd.),
Head of the Department. (Hindi)
D.G. Vaishnav College, Arumbakkam, Chennai.

Coordinator

K. Chandrasekaran,
Lecturer, DIET, Chennai.

Reviewer

Dr. Kokila P.C.,
Associate Professor (Retd.),
Head of the Department. (Hindi)
Presidency College, Chennai.

Authors

S. Anandakrishnan, M.A., M.Ed.,
Headmaster (Retd.)
The Hindu Hr. Sec. School, Triplicane, Chennai.

S. Satyanarayanan, M.A., M.Ed.,
PG Asst. in Hindi (Retd.)
Kesari Hr. Sec. School, Mylapore, Chennai.

M. Gabriel Govindaraju, M.A., B.Sc., B.Ed.,
Lecturer in Hindi (Retd.)
Navalar Nedunchezhin GHSS, Lawspet, Puducherry.

S. Muralidharan, M.A., B.Ed.,
PG Asst.,
Jawahar Higher Secondary School, Ashok Nagar, Chennai.

O.V.S. Mallika, M.A., B.Ed., M.Phil.,
B.T. Asst.,
Kesari Hr. Sec. School, Mylapore, Chennai.

R. Radjamohane, M.A., B.Ed.,
Lecturer in Hindi
Jeevanandam GHSS, Karamanikuppam,
Directorate of School Education, Puducherry.

Art and Design Team

Layout

Thy Designers

QC

Asker Ali
Rajesh Thangappan
Manohar Radhakrishnan
Jerald Wilson

This book has been printed on 80 GSM
Elegant Maplitho paper.

Printed by offset at:

Wrapper Design

Kathir Arumugam

Co-ordination

Ramesh Munisamy

Typist

Kasthuri Amudha kumar



NOTES





NOTES





NOTES

